रांची, धनबाद एवं पटना से प्रकाशित

झारखंड का रण 2024

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	31.1	23.6
जमशेदपुर	33.4	24.2
डालटनगंज	34.2	22.1

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

www.lagatar.in रांची, मंगलवार 22 अक्टूबर 2024 कार्तिक कृष्ण पक्ष 05, संवत 2081 पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ ~~6~~ वर्ष : 2, अंक : 192 आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

न्यूज इन ब्रीफ

दीपिका ने वर्ल्ड कप में जीता पांचवां सिल्वर

रांची। दीपिका कुमारी ने मेक्सिको के त्लाक्सकाला में तीरंदाजी विश्व कप फाइनल 2024 में महिला रिकर्व स्पर्धा में रजत पदक जीता है. पेरिस 2024 ओलंपिक का हिस्सा रहीं दीपिका को फाइनल में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के ली जियामन से 6-0 से हार मिली. ली जियामन उस चीनी महिला तीरंदाजी टीम का हिस्सा थीं, जिसने पेरिस 2024 में रजत पदक जीता था.

- पूरी खबर खेल पेज पर

मुझे भारत में ही रहने दीजिए : तस्लीमा

नयी दिल्ली। बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन भारत में अपने रेजिडेंस परमिट को लेकर परेशान हैं. उन्होंने ट्वीट करके गृहमंत्री अमित शाह से भी गुहार लगाई. तस्लीमा ने एक्स पर लिखा, प्रिय अमित शाह जी नमस्कार. मैं भारत में रहती हूं क्योंकि मुझे इस महान देश से प्यार है. पिछले 20 सालों से यह मेरा दूसरा घर रहा है. लेकिन गृह मंत्रालय मेरे रेजिडेंस परमिट को आगे नहीं बढ़ा रहा है. मैं बहुत चिंतित हूं. अगर आप मुझे रहने देंगे तो मैं आपकी बहुत आभारी रहूंगी. हार्दिक शुभकामनाएं.

देश का सबसे अच्छा कारोबारी समूह टाटा

नयी दिल्ली। वैश्विक निवेशक मार्क मोबियस की ओर से सोमवार को कहा गया कि टाटा ग्रुप देश का सबसे बेहतर कारोबारी ग्रुप है. साथ ही उन्होंने बताया कि वह कुछ वर्षों पहले रतन टाटा से मिले थे. वे बेहद विनम्र थे. दिग्गज निवेशक ने आगे कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के डिजिटलीकरण कार्यक्रम का लाभ सभी लोगों को मिला है. यह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है. मोबियस ने युवा निवेशकों को सलाह देते हुए कहा कि कभी भी बाजार में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए.

गढ़चिरौली में मुठभेड़ कई नक्सली हुए ढेर

गढ़चिरौली। छत्तीसगढ़ से सटे महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के सीमावर्ती इलाके भामरागढ़ तहसील में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में कई नक्सलियों के मारे जाने की खबर है. इस ऑपरेशन में सुरक्षाबल के जवान भी घायल हुए हैं. मुठभेड़ में नक्सलियों को भारी नुकसान होने की आशंका है. महाराष्ट्र में अगले महीने विधानसभा चुनाव होने हैं. चुनाव के मद्देनजर मुठभेड़ को अहम माना जा रहा.

इंडिया गठबंधन में सुलझा सीट विवाद : झामुमो लड़ेगा 41 और कांग्रेस 29 पर

सत्यानंद भोक्ता आउट, राजद को मिली 7 सीट, माले को 4

चार दिनों की माथापच्ची, किच-किच, हाई वोल्टेज ड्रामा और हेमंत के दखल के बाद बनी सहमति, बरकट्ठा ड्रॉप कर राजद को मिली **विश्रामपुर सीट**

कौशल आनंद। रांची

चार दिनों तक चले हाई वोल्टेज ड्रामे, किच-किच और माथापच्ची और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के दखल के बाद सोमवार को आखिरकार इंडिया गठबंधन में राजद और माले के बीच सीट का पेंच समाप्त हो गया है. नए सीट शेयरिंग फार्मूले तहत राजद को सात एवं माले को चार सीट दी गयी और जिस पर सहमति बन गयी. राजद को पिछली बार दी गयी बरकट्ठा सीट से ड्राप करके कांग्रेस अपने हिस्से की विश्रामपुर सीट देने को राजी हो गयी है.

पिछली बार इस सीट से कांग्रेस के ददई दूबे चुनाव लड़े थे. अब राजद के हिस्से में कोडरमा, गोड्डा, चतरा, हुसैनाबाद, विश्रामपुर, छत्तरपुर और देवघर सीट आई है. जबकि पिछले विधानसभा चुनाव में राजद के हिस्से बरकट्ठा सीट थी. पिछली बार की तरह ही राजद इस बार भी सात सीटों पर चुनाव लड़ेगी. अगर माले की बात करें तो उसे गठबंधन की ओर से बगोदर, धनवार, निरसा और सिंदरी सीटें दी गयी हैं. जबकि माले की जमुआ सीट पर भी दावेदारी थी. मगर जमुआ सीट से भाजपा के सिटिंग विधायक केदार हाजरा का पार्टी से टिकट कटने और झामुमो ज्वाइन करने के बाद झामुमो के लिए जमुआ सीट प्रतिष्ठा का विषय बन गई है. जिसमें अंततः हेमंत सफल रहे. समझौते के तहत अब झामुमो 41, कांग्रेस 29, राजद 07 और भाकपा माले 04 सीटों पर अपने प्रत्शाशी उतारेगी. हालांकि इसकी अभी तक आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है.

अंततः भोक्ता बाहर, केवल बहू लड़ेगी एससी सीट चतरा से

सत्यानंद भोक्ता.

रश्मि प्रकाश.

लाख प्रयास के बावजूद आखिरकार राजद कांग्रेस की आदिवासी आरक्षित सीट मानिका नहीं ले पाए. कांग्रेस किसी भी कीमत पर यह सीट देने को राजी नहीं हुई. ऐसे में हेमंत सरकार में राजद कोटे से इकलौते श्रम एवं उद्योग मंत्री सत्यानंद भोक्ता आउट हो गए. हालांकि पार्टी चाहे, तो अपने हिस्से में आई सामान्य सीट से भोक्ता को चुनाव लड़ा सकती है. मगर इससे पार्टी में विरोध होने की संभावना है, क्योंकि पहले ही चतरा एससी सीट से उनकी बहू रश्मि प्रकाश को पार्टी लड़ाने जा रही है. इसलिए केवल सात सीट में से दो सीट भोक्ता परिवार से ही लड़ाई जाएगी, इसकी इसकी संभावना नहीं है. बताते चलें कि भोक्ता जाति जो अनुसूचित जाति सूची में शामिल रही, उसे केंद्र सरकार ने अब अनुसूचित जनजाति सूची में शामिल कर दिया है. इसलिए अब सत्यानंद भोक्ता एससी सीट से चुनाव नहीं लड़ सकते हैं. चूंकि उनकी बहू रश्मि प्रकाश अनुसूचित जाति से संबंध रखती हैं, इसलिए सत्यानंद भोक्ता ने अपनी बहू का नाम चतरा के लिए आगे कर दिया. सत्यानंद भोक्ता हेमंत सोरेन के बहुत करीबी मंत्री के रूप में जाने जाते हैं, इसके बावजूद वे मनिका सीट उनके लिए कांग्रेस से नहीं दिलवा पाए.

पहली बार तेजस्वी ने चार दिनों से रांची में डाला डेरा

शायद अपने राजनीतिक जीवन में राजद के राजकुमार और बिहार प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव को पहली बार किसी चुनाव में सीट को लेकर इतनी मशक्कत करनी पड़ी. तेजस्वी यादव शुक्रवार की शाम को रांची आए. होटल रेडिसन ब्लू राजद के राजनीति का केंद्र बिंदु बना रहा. रविवार का दिन और सोमवार का दिन इंडिया गठबंधन और राजद के लिए काफी तनावपूर्ण एवं उतार-चढ़ाव वाला रहा. रविवार को पीसी का घोषित समय बढ़ाना पड़ा. पार्टी के राज्यसभा सांसद मनोज झा ने झामुमो और कांग्रेस को सोमवार को पहले सुबह 11 बजे तक समय दिया था. 11 बजे पार्टी कार्यालय में पीसी घोषित कर की गयी. मगर फिर इसे बढ़ाते हुए दिन के 1.30 बजे कर दिया गया. फिर सवा एक बजे पीसी को रद कर दी गयी. इस बीच सीएमओ के बुलावे पर तेजस्वी यादव और सांसद मनोज झा हेमंत से मिलने कांके रोड स्थित आवास पहुंचे. करीब 10 मिनट की वार्ता के बाद पुनः राजद नेता होटल वापस लौट गए. हेमंत सोरेन के लौटने के बाद पुनः राजद नेता सीएम हाउस पहुंचे. इसके बाद बात पटरी आ सकी.

विश्रामपुर से गिरिनाथ सिंह हो सकते हैं पार्टी के प्रत्याशी

विश्रामपुर से से पूर्व विधायक और मंत्री गिरिनाथ सिंह पार्टी प्रत्याशी हो सकते हैं. इसके पहले यह चर्चा थी कि अगर राजद के हिस्से यह सीट नहीं आई, तो गिरिनाथ सिंह निर्दलीय प्रत्याशी हो सकते हैं. मगर अब विश्रामपुर सीट चूंकि राजद के हिस्से में आती दिख रही है, तो गिरिनाथ का पार्टी प्रत्याशी होना तय माना जा रहा है.

जेल में बंद सुभाष यादव को कोडरमा से उतार सकती है पार्टी

राजद नेता सुभाष यादव जेल से ही चुनाव लड़ेंगे. इसकी चर्चा पार्टी में जोरों पर है. वे कोडरमा से राजद के टिकट पर चुनावी मैदान में उतरेंगे. सुभाष यादव राजद सुप्रीमो लालू यादव के करीबी माने जाते हैं. कुछ दिनों पहले उनको ईडी ने बालू से जुड़े गड़बड़ी मामले में गिरफ्तार किया था

कांग्रेस की सूची किसी भी वक्त : **रांची।** दिल्ली में कांग्रेस चुनाव समिति की बैठक सोमवार देरशाम संपन्न हो गई. माना जा रहा है कि किसी भी वक्त कांग्रेस झारखंड के लिए अपने प्रत्याशियों की सूची जारी कर सकती है. बैठक में झारखंड के नेताओं के अलावा कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी सहित कई बड़े नेता शामिल थे.

एनसीपीसीआर को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका

देश भर के मदरसों को मिलती रहेगी फंडिंग

एजेंसियां। नयी दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) की सिफारिशों पर सोमवार को रोक लगा दी. इस फैसले के बाद देश भर के मदरसों को सरकार से मिलने वाली फंडिंग जारी रहेगी. एनसीपीसीआर ने शिक्षा के अधिकार कानून का पालन नहीं करने पर सरकारी वित्त पोषित और सहायता प्राप्त मदरसों को मिलनेवाली धनराशि रोकने की मांग की थी.

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने गैर-मान्यता प्राप्त मदरसों के छात्रों को सरकारी स्कूलों में भेजने के संबंध में एनसीपीसीआर की सिफारिश खारिज कर दी. चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने इस मामलेपर फैसला सुनाया. जमीयत उलेमा-ए-हिंद के वकील की दलीलों को पीठ ने सुना, कहा गया कि एनसीपीसीआर और कुछ राज्यों की कार्रवाइयों पर रोक लगाने की जरूरत है. मुस्लिम संगठन ने यूपी और त्रिपुरा सरकारों के उस निर्देश को चुनौती दी थी, जिसमें कहा गया कि गैर-मान्यता प्राप्त मदरसों के छात्रों को सरकारी स्कूलों में भेज देना

सरकारी स्कूलों में नहीं ट्रांसफर होंगे बच्चे

चाहिए. शीर्ष अदालत ने आदेश दिया कि इस वर्ष 7 और 25 जून को जारी एनसीपीसीआर की सिफारिश पर रोक लगा दी गई है. कोर्ट ने यह भी कहा कि इसके चलते राज्यों के आदेश स्थगित रहेंगे. कोर्ट ने मुस्लिम संस्था को यूपी और त्रिपुरा के अलावा अन्य राज्यों को भी अपनी याचिका में पक्षकार बनाने की अनुमति दे दी.

एनसीपीसीआर का क्या है इस मामले पर तर्क : एनसीपीसीआर के अध्यक्ष प्रियांक कानूनगो ने बीते दिनों कहा था कि उन्होंने मदरसों को बंद करने के लिए कभी नहीं कहा. बल्कि, इन्हें सरकार की ओर से मिलने वाली धनराशि पर रोक लगाने की सिफारिश की थी. क्योंकि ये गरीब मुस्लिम बच्चों को शिक्षा से वंचित कर रहे हैं. गरीब प मुस्लिम बच्चों पर अक्सर धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के बजाय धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए दबाव डाला जाता है.

शेयर बाजार में हाहाकार, डूबे पांच लाख करोड़ रुपये

मुंबई। मिडकैप और स्मॉलकैप स्टॉक्स में गिरावट की सुनामी से सोमवार के कारोबारी सेशन में इन स्टॉक्स में मातम छा गया. निफ्टी का मिडकैप इंडेक्स दिन के हाई से 1350 अंकों तक नीचे जा गिरा तो निफ्टी के स्मॉल कैप इंडेक्स में 415 अंकों की गिरावट देखी गई. हालांकि सेंसेक्स - निफ्टी में उतनी बड़ी गिरावट नहीं रही. सेंसेक्स 73 अंक गिरकर 81,151 और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 73 अंक गिरकर 24,781 अंकों पर क्लोज हुआ है. बाजार में निवेशकों के पांच लाख करोड़ रुपए डूब गए.

- पेज 11 भी देखें

चुनाव आयोग ने अजय सिंह को बनाया झारखंड का नया डीजीपी

संवाददाता। रांची

भारत निर्वाचन आयोग ने अजय कुमार सिंह को झारखंड का नया डीजीपी बनाया है. इससे संबंधित आदेश सोमवार की दोपहर चुनाव आयोग ने जारी कर दिया गया है.

बता दें कि आयोग के निर्देश के बाद 1990 बैच के आईपीएस अनुराग गुप्ता से डीजीपी पद का प्रभार वापस ले लिया गया था. उन्हें निर्देश दिया गया कि झारखंड पुलिस हाउसिंग के एमडी के पद पर पदस्थापित अजय कुमार को अपना प्रभार सौंपें दें. चुनाव आयोग ने 19 अक्टूबर को

झारखंड सरकार को निर्देश दिया था, कि डीजीपी अनुराग गुप्ता को तत्काल हटाकर कैडर में वरिष्ठ डीजीपी अफसर को प्रभार सौंपे. चुनाव आयोग ने अनुराग गुप्ता के खिलाफ साल 2019 चुनावों में चुनाव आयोग द्वारा की गई कार्रवाई के आधार पर यह फैसला लिया था. चुनाव आयोग ने राज्य सरकार से अपने निर्देशों का पालन करने और 19 अक्टूबर की शाम सात बजे तक एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने को भी कहा था. चुनाव आयोग ने राज्य सरकार से सोमवार सुबह दस बजे तक पद के लिए विचार किए जाने वाले सीनियर आईपीएस अधिकारियों का एक पैनल भेजने को भी कहा था. गौरतलब है,कि बीते 26 जुलाई को झारखंड सरकार ने 1990 बैच के आईपीएस अनुराग गुप्ता को सरकार ने झारखंड का प्रभारी डीजीपी बनाया था.

केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से मिला बड़ा झटका

नयी दिल्ली। दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से पीएम नरेंद्र मोदी की डिग्री मामले में बड़ा झटका लगा है. कोर्ट ने मानहानि के इस मामले पर रोक लगाने की उनकी मांग को खारिज कर दिया है, जिससे अब केजरीवाल के खिलाफ गुजरात में आपराधिक मानहानि का मामला चलता रहेगा. केजरीवाल ने निचली अदालत से जारी समन को चुनौती देते हुए मामले में रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी. इससे पहले, गुजरात हाईकोर्ट ने भी उनकी इस मांग को अस्वीकार कर दिया था.

जिनके दो से ज्यादा बच्चे, वही लड़ सकेंगे चुनाव : चंद्रबाबू

एजेंसियां। हैदराबाद

आंध्र प्रदेश के सीएम एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा है कि, राज्य में विकास दर बढ़नी चाहिए. सभी को इस बारे में सोचना चाहिए और परिवारों को कम से कम दो या उससे अधिक बच्चे पैदा करने का लक्ष्य रखना चाहिए.

दरअसल केंद्र की यूथ इन इंडिया-2022 रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में 25 करोड़ युवा 15 से 25 साल के बीच के हैं. अगले 15 साल में यह और तेजी से गिरेगी. उन्होंने आगे कहा कि, हालांकि अतीत में, मैंने जनसंख्या नियंत्रण की वकालत की, लेकिन अब हमें भविष्य के लिए जन्म दर बढ़ाने की जरूरत है. सीएन नायडू ने बताया कि, राज्य सरकार एक कानून लाने की योजना बना रही है, जिसके तहत केवल दो या उससे अधिक बच्चों वाले लोग ही स्थानीय निकाय चुनाव लड़ सकेंगे.

आंध्र के सीएम चंद्रबाबू नायडू ने घटती प्रजनन दर पर जताई चिंता

भारत में घट रही युवा आबादी

वहीं केंद्र की यूथ इन इंडिया-2022 रिपोर्ट के अनुसार 2036 तक देश की 34.55 करोड़ आबादी ही युवा होगी, जो अभी 47 फीसदी से ज्यादा है. इसके अनुसार अभी देश में 25 करोड़ युवा 15 से 25 साल के बीच के हैं, लेकिन अगले 15 साल में यह और तेजी से गिरेगी.

अगले 12 साल में 12 फीसदी से ज्यादा होंगे बुजुर्ग : संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 की मानें तो साल 2011 में भारत में युवा आबादी की औसत उम्र 24 साल थी, जो अब 29 साल हो गई है. वहीं 2036 तक भारत में बुजुर्गों जनसंख्या का 12.5 फीसदी, 2050 तक 19.4 फीसदी और सदी के अंत तक ये 36 फीसदी तक पहुंच जाएगी.

बड़ी पहल ब्रिक्स सम्मेलन से पहले पड़ोसी के साथ बनी सहमति, आज रूस रवाना होंगे पीएम

भारत और चीन के बीच खत्म होगा सीमा विवाद!

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारत और चीन लगातार बातचीत के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा पर पेट्रोलिंग के लिए एक निश्चित व्यवस्था पर सहमत हो गए हैं. भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने सोमवार को यह घोषणा की कि दोनों देशों के अधिकारियों के बीच हुई हालिया बातचीत के बाद भारत और चीन एलएसी पर पेट्रोलिंग के लिए एक समझौते पर पहुंचे हैं. उन्होंने कहा कि इस समझौतेके बाद दोनों देशों की सेनाओं के बीच सीमा पर चल रहे स्टैंडऑफ में कमी आने की उम्मीद है. मिस्त्री ने कहा कि हम चीन के साथ पेट्रोलिंग के मुद्दों पर चर्चा के बाद एक अहम समझौते पर पहुंच गए हैं. इस समझौते के बाद

सीमा पर दोनों देशों के बीच जारी स्टैंड ऑफ में कमी आने की उम्मीद है. उन्होंने कहा कि पिछले कई सप्ताहों से जारी बातचीत के बीच अंततः हम वास्तविक नियंत्रण रेखा पर पेट्रोलिंग के लिए एक निश्चित व्यवस्था पर पहुंचे हैं. इस समझौतेके जरिए हमें 2020 सीमा पर जारी तनाव को कम करने में मदद मिलेगी.

विदेश सचिव ने कहा कि बाकी मुद्दों को लेकर भारतीय और चीनी अधिकारी पिछले कुछ हफ्तों से लगातार संपर्क में हैं. हमें उम्मीद है कि बाकी मुद्दे भी सुलझ जाएंगे. कथित तौर पर भारत और चीन के बीच पेट्रोलिंग को लेकर हुआ यह समझौता देपसांग और डेमचोक क्षेत्रों से संबंधित है.

पीएम से होगी जिनपिंग की मुलाकात : पीएम मोदी रूसी राष्ट्रपति पुतिन के बुलावे पर 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने मंगलवार को कजान रवाना होंगे. इस सम्मेलन का विषय वैश्विक विकास और सुरक्षा के लिए बहुपक्षवाद को मजबूत करना है. भारत ब्रिक्स में अहम स्थान रखता है और उसके योगदान ने आर्थिक और सतत विकास, वैश्विक शासन सुधार जैसे क्षेत्रों में ब्रिक्स के प्रयासों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. विदेश सचिव मिस्री ने बताया कि सम्मेलन 22 से शुरू होगा. मुख्य दिन 23 अक्तूबर है. उम्मीद है कि पीएम मोदी चीनी प्रीमियर जिनपिंग के बीच इस दौरान बातचीत होगी. सम्मेलन 24 को समाप्त होगा. लेकिन प्रधानमंत्री 23 अक्तूबर को नई दिल्ली लौटेंगे.

एलएसी गश्त पर सहमति

भारत और चीन के बीच 45 माह से चल रहा सीमा तनाव सुलझ गया है. दोनों देशों के बीच एलएसी पर गश्त और सैन्य तनाव घटाने पर सहमति बन गई है. 2020 में एलएसी पर हुई घटनाओं के बाद से हम चीनी पक्ष के साथ सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर लगातार संपर्क में थे. डब्ल्यू एम सी सी और सैन्य कमांडर स्तर पर दोनों देशों के बीच कई दौर की बातचीत हुई है. कई मोर्चों पर तनाव मिटाने में कामयाबी मिली है. फिर भी असहमति के कुछ बिंदु थे. विदेश सचिव के मुताबिक वार्ताओं के बाद सीमा क्षेत्र में सैन्य गश्त की व्यवस्था पर सहमति बन गई है.

आरटीआई में मिला चौंकानेवाला जवाब

बदबू आने पर ही धुलता है ट्रेन के एसी कोच वाला कंबल..?

एजेंसियां। नयी दिल्ली

ट्रेन के एसी कोच में यात्रा करने के दौरान आपको बेड रोल मिलता है, जिसमें दो चादर, तकिया और कंबल शामिल होता है. इसे लेकर आप आगे की यात्रा आराम से करते हैं. अब क्या कभी आपने सोचा है कि आखिर इन चादरों, कंबल और पिलो कवर को रेलवे कितनी बार धोता है.

अगर नहीं पता तो हाल ही में एक आरटीआई यानी सूचना का अधिकार के जरिए इस सवाल का जवाब सामने आ गया है. द न्यू इंडियन एक्सप्रेस की आरटीआई के जवाब के हवाले से बताया गया है कि यात्रियों को दिया जानेवाला लिनन हर एक इस्तेमाल के बाद धोया जाता है. आरटीआई के जरिए रेलवे ने यह भी बताया है कि ऊन के कंबलों को महीने में एक बार या दो बार

क्या रेलवे कंबल और चादर के लिए करता है अलग से चार्ज : रिपोर्ट के मुताबिक, रेलवे की तरफ से दिए गए आरटीआई के जवाब में बताया गया है, यह सब रेलवे के किराये में शामिल होता है. गरीब रथ और दुरंतो जैसी ट्रेनों में टिकट बुक करने के साथ हर किट के हिसाब से चार्ज देकर बेडरोल हासिल किया जा सकता है.

धोया जाता है. अगर बदबू आने लगे तो जल्दी भी धोया जाता है. यह इनके लॉजिस्टिक्स पर निर्भर करता है.

स्टाफ ने क्या बताया : लंबी दूरी की अलग-अलग ट्रेनों में काम करनेवाले हाउसिंग स्टाफ के 20 सदस्यों ने अखबार को बताया कि कंबलों को महीने में सिर्फ एक बार धोया जाता है. एक कर्मचारी ने बताया, हर ट्रिप के बाद हम बैडशीट्स और पिलो कवर्स को बंडल में लॉन्ड्री के लिए दे देते हैं. कंबल के मामले में हम उन्हें ठीक से फोल्ड कर रख देते हैं. हम उन्हें लॉन्ड्री के लिए तब भेजते हैं, जब कोई बदबू आ रही हो या खाने का कोई दाग लगा हो. एक अन्य कर्मचारी ने अखबार को बताया, इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि कंबल महीने में दो बार धोए जाते हैं.

खेल बिगड़ा देख पाला बदल रहे हैं नेता और विधायक

प्रवीण कुमार। रांची

झारखंड में विधानसभा चुनाव को लेकर विभिन्न राजनीतिक दल अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गए हैं. राज्य में लगभग 8 सीटें ऐसी हैं जहां हल्का से भी वोटों में स्विंग चुनाव के नतीजों को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है. करीबी मुकाबलों वाली 8 सीटों में चार सीट भाजपा के हिस्से में आई थीं. वहीं दो सीट झामुमो और दो कांग्रेस को मिला था. 2019 के विधानसभा चुनाव में काम वोटों से जीतने वाले विधायक जेपी पटेल भाजपा से कांग्रेस में और सीता सोरेन झामुमो छोड़ भाजपा में शामिल हो चुके हैं. भाजपा ने सबसे पहले अपने 66 उम्मीदवारों की नाम जारी किया. इसके बाद भाजपा से के चार पूर्व विधायकों सहित आधे दर्जन नेता

8 सीटों पर था 3700 से कम वोटों का फैसला

पार्टी से इस्तीफा दे चुके हैं. रांची से संदीप वर्मा. सरायकेला से 2019 में चंपाई सोरेन से मुकाबला करने वाले भाजपा नेता गणेश महाली और सारठ के चुन्ना सिंह दुमका से पार्टी के पूर्व विधायक व मंत्री लुईस मरांडी , महेशपुर के पूर्व विधायक सह भाजपा नेता मिस्त्री सोरेन, पूर्व कृषि मंत्री और नाला से विधायक रहे सत्यानंद झा बाटुल ने भाजपा से इस्तीफा दे दिया है. ये नेता दूसरे दलों में टिकट का जुगाड़ में लग गये हैं.

2019 में यहां हुआ कम मतों से हार-जीत का फैसला

विधानसभा	पार्टी	उम्मीदवार	मिले वोट	जीत का अंतर
नाला	झामुमो	रविन्द्र नाथ महतो	61356	3620
जामा	झामुमो	सीता सोरेन	60925	2426
जरमुंडी	कांग्रेस	बादल	52507	3099
देवघर	भाजपा	नारायण दास	95491	2624
कोडरमा	भाजपा	नीरा यादव	63636	1776
मांडू	भाजपा	जेपी पटेल	49855	2132
बाधमारा	भाजपा	ढुलू महतो	49855	2132
सिमडेगा	कांग्रेस	भूषण बाड़ा	60651	285

2019 के चुनाव में सबसे बड़ी हार और जीत

2019 के विधानसभा चुनाव में सबसे काम मतों के अंतर से सिमडेगा विधानसभा सीट कांग्रेस के भूषण बाड़ा ने कड़े मुकाबले में भाजपा के श्रद्धानंद बेसरा को 285 वोटों के अंतर से हरा दिया. यह सूबे की सबसे छोटी जीत है. इसी तरह बाघमारा सीट पर भी जीत हार का अंतर काफी कम रहा. यहां बीजेपी के ढूलू महतो ने कांग्रेस के जलेश्वर महतो को सिर्फ 824 वोटों शिकस्त दी. अगर राज्य में सबसे ज्यादा वोटों के अंतर से मिली जीत की बात करें तो कांग्रेस के आलमगीर आलम ने सबसे बड़ी जीत दर्ज की है. उन्होंने पाकुड़ विधानसभा सीट पर भाजपा के वेणी प्रसाद गुप्ता को 65,108 वोटों के अंतर से हराया है. पिछली बार बोकारो सीट से भाजपा के बिरांची नारायण को सबसे बड़ी जीत मिली थी, जिन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी को 72,643 वोटों के अंतर से हराया था.

2019 के चुनाव में दलगत स्थिति

विधानसभा चुनाव में प्रदर्शन की बात करें तो 2019 में भाजपा को 25, आजसू पार्टी 2, झामुमो को 30, कांग्रेस को 16, झाविमो 3, राजद को 1, माले 1, एनसीपी 1 सीटों अन्य -2 पर जीत हासिल की थी. वहीं, 2014 में हुए विधानसभा चुनाव में राज्य की 81 सीटों में भाजपा ने सबसे अधिक 35 सीटें जीती थीं. इससे पहले 2009 में भाजपा के खाते में महज 18 सीटें आई थीं. उस समय झारखंड मुक्ति मोर्चा ने 17 सीटें जीती थीं. वहीं ऑल झारखंड स्टूडेंट यूनियन को 5 सीटें मिली थीं. 18 सीटें अन्य के खाते में आई थीं.

2014 में 19 सीटों पर 5000 से काम वोटों से हुआ था फैसला

साल 2014 में हुए विधानसभा चुनाव में कुल 19 सीटों पर हार-जीत का अंतर 5000 से कम मतों का था. इन 19 में से अधिकतर सीटें भाजपा-आजसू गठबंधन के खाते में आई थीं. 5000 से कम वोटों से जहां हार जीत का फैसला हुआ था, उसमें बड़कागांव, तोरपा, सरायकेला, जामा, निरसा, भवनाथपुर, बगोदर, लोहरदगा, डालटनगंज, पांकी, सिमडेगा, टुंडी, राजमहल, बोरियो, सिसई, गुमला, दुमका, जारमुंडी और मनिका विधानसभा सीटें शामिल थीं. इनमें से 5 सीटें ऐसी थीं, जिन पर हार व जीत का अंतर 1000 से कम मतों का था. इसी तरह 5 अन्य सीटों पर हार और जीत का अंतर महज 1000-2000 वोटों के बीच था.

डुमरिया में बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं संग बैठक कर बनायी रणनीति

पत्नी की जीत के लिए मैदान में उतरे पूर्व केंद्रीय अर्जुन मुंडा

संवाददाता। डुमरिया

पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा अपनी पत्नी मीरा मुंडा को जीत दिलाने के लिए मैदान में उतर चुके हैं. अर्जुन मुंडा की पत्नी मीरा मुंडा को पोटका विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी घोषित किया गया है. सोमवार को केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा डुमरिया पहुंचे. उन्होंने बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं संग बैठक कर मीरा मुंडा को जीत दिलाने के लिए रणनीति बनायी. अर्जुन मुंडा ने कार्यकर्ताओं से कहा कि केंद्र से विकास के लिए मिले फंड में हिस्सेदारी करने पर राज्य सरकार का ध्यान है. राज्य में घूसखोरी चरम पर है. मुखिया व पंचायत प्रतिनिधियों को अधिकार नहीं दिया जा रहा है. आदिवासी को प्रलोभन नहीं अधिकार चाहिए. राज्य में वसूली का कार्य जोरशोर से चल रहा है. अबुआ आवास योजना में भी कमीशन देना पड़ रहा है. उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वसूली और घूसखोरी को राज्य से समाप्त करने के लिए भाजपा की सरकार बनाने के लिए पूरी ताकत के साथ लग जायें. भाजपा जो वादा करती है उसे पूरा करती है. भाजपा ही राज्य में व्यवस्था को सुधारने की क्षमता रखती है. इससे पहले डुमरिया पहुंचने पर पूर्व सीएम अर्जुन मुंडा का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया. मौके पर पोटका प्रभारी अमित सिंह, प्रवासी विशेश्वर टुडू, विस्तारक विभूति नारायण, सांसद

पोटका में मीरा मुंडा का विरोध जारी, 24 घंटे के अंदर प्रत्याशी बदलने की मांग

संवाददाता। जादूगोड़ा

भाजपा हाईकमान द्वारा 66 प्रत्याशियों की पहली सूची में पोटका से भाजपा प्रत्याशी मीरा मुंडा का नाम घोषित किए जाने के बाद से पोटका में विरोध रुकने का नाम नहीं ले रहा है. क्षेत्र के कार्यकर्ता किसी स्थानीय नेता को टिकट देने की मांग पर अड़े हुए हैं. भाजपा एसटी मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता होपना महाली की अगुवाई में दूसरे दिन सोमवार को भी भाजपा प्रत्याशी मीरा मुंडा के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन जारी रहा. इसे लेकर आदिम भूमिज मुंडा कल्याण समिति, जुड़ी में भाजपा की बूथ स्तर कमेटी की बैठक हुई. बैठक में 24 घंटे के अंदर पोटका से भाजपा प्रत्याशी मीरा मुंडा को बदलने की मांग की गई अन्यथा भाजपा कार्यकर्ता की ओर से किसी भी व्यक्ति को उम्मीदवार बनाकर खड़ा करने का फैसला लिया गया. बैठक में मीरा मुंडा वापस जाओ

के नारे लगे. बैठक में भाजपा एसटी मोर्चा के प्रवक्ता उपेन्द्र नाथ सरदार, गुलशन सरदार, संतोष सरदार, विवेक त्रिवेदी, ललन यादव, मनोज कुमार सिंह, जनता सरदार, श्यामल महाकूड, नील कमल सिंह समेत भारी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया.

एसटी मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता होपना महाली कर रहे अगुवाई
आदिम भूमिज मुंडा कल्याण समिति ने की भाजपा की बूथ स्तर कमेटी की बैठक

प्रतिनिधि बसंत मदिना, मंडल अध्यक्ष किशोर गिरि, दिलीप पंडा, रमाकांत पानी, बेहुला नायक, सुशील बारिक, टुकाई मरांडी, संजीत महापात्र, सुनील कुमार साव समेत अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे.

मेनका सरदार ने इस्तीफा वापस लिया

इस्तीफा वापस लेने के बाद मीरा मुंडा को गले लगातीं मेनका सरदार

संवाददाता। जादूगोड़ा

टिकट नहीं मिलने से नाराज चल रहीं पोटका की पूर्व विधायक मेनका सरदार ने प्रदेश अध्यक्ष बाबू लाल मरांडी को पत्र लिखकर अपना इस्तीफा वापस ले लिया है. इसके पूर्व आज दिन भर मेनका सरदार को मनाने की कवायद जारी रही. दोपहर करीब एक बजे रांची से राज्यसभा सांसद सह प्रदेश महामंत्री आदित्य साहू पोटका पहुंचे. दोनों के बीच उनके हाता स्थित आवास पर काफी देर तक बैठक चली. इस बैठक को काफी गुप्त रखा गया. मीडिया के अंदर जाने पर पर पूरी तरह रोक थी. इससे पूर्व पोटका से भाजपा प्रत्याशी मीरा मुंडा ने भी पूर्व विधायक मेनका सरदार से मिलकर जीत का आशीर्वाद मांगा. यहां बताते चलें कि पोटका से टिकट नहीं मिलने की वजह से मेनका सरदार ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था.

मतदाताओं के लिए ऑल इन वन एप वोटर हेल्पलाइन, एक क्लिक पर पूरी जानकारी

संवाददाता। जमशेदपुर

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रिया को आसान एवं मतदाताओं के लिए सुलभ बनाने के लिए कई स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं. मतदाताओं की सुविधा के लिए वोटर हेल्पलाइन एप बनाया गया है, जिसमें मतदाता सूची में अपना नाम, रजिस्ट्रेशन, वोटर स्लिप डाउनलोड लेकर चुनाव से जुड़ी अन्य जानकारी घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं.

इस एप की मदद से वोटर्स मतदाता सूची में अपना नाम खोज सकते हैं. इसके साथ ही वे यह भी चेक कर पाएंगे कि वे वोट डालने के योग्य हैं या नहीं. अगर आपका वोट रजिस्टर्ड नहीं है तो इस एप की वोटर्स चुनाव सूची में अपना वोट रजिस्टर कर सकते हैं. इसके साथ ही रजिस्ट्रेशन डिटेल्स में सुधार कर सकते हैं. वोटिंग के लिए योग्य यूजर्स इलेक्टोरल रोल या फिर डिजिटल फोटो वोटर स्लिप डाउनलोड कर सकते हैं. यूजर्स चुनाव से जुड़ी जानकारियां, रिजल्ट अपडेट और उम्मीदवारों के बारे में डिटेल्स जान सकते हैं.

वोटर हेल्पलाइन एप की खास बातें

- गूगल प्ले स्टोर और एपल एप स्टोर से फ्री में डाउनलोड किया जा सकता है.
- यह यूजर्स की किसी भी प्रकार की जानकारी स्टोर नहीं करता है.
- मतदाता सूची, वोटर रजिस्ट्रेशन फॉर्म, मॉडिफिकेशन, डाउनलोड डिजिटल फोटो वोटर स्लिप, शिकायत, उम्मीदवार की डिस्प्ले, रियल टाइम इलेक्शन रिजल्ट डेटा जैसी अहम जानकारी ऑफर करता है.
- यूजर्स को एपिक कार्ड से मोबाइल नंबर लिंक करने की सुविधा देता है.

भाजपा नेता रमेश उरांव ने दिया इस्तीफा, निर्दलीय लड़ेंगे चुनाव

लोहरदगा। भारतीय जनता पार्टी के कद्दावर नेता और बिशुनपुर विधानसभा के पूर्व विधायक रमेश उरांव ने पार्टी से इस्तीफा दिया दे दिया है. जानकारी के मुताबिक, रमेश उरांव बिशुनपुर व लोहरदगा विधानसभा से निर्दलीय चुनाव लड़ेंगे. इस्तीफा देने के बाद शुभम संदेश और लगातार के संवाददाता से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा में अब जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं की कोई पूछ नहीं है. इधर झारखंड में विधान सभा चुनाव से महज कुछ दिन पहले रमेश उरांव के भाजपा से इस्तीफा देने पर एनडीए गठबंधन को बड़ा झटका लगा है. रमेश उरांव ने भाजपा की साख के तौर पर शुरू से ही निस्वार्थ भाव के साथ जिम्मेदारियों का निर्वहन किया है. रमेश उरांव के निर्दलीय चुनाव लड़ने और पार्टी से इस्तीफा देने के बाद एनडीए गठबंधन को लोहरदगा और बिशुनपुर सीट पर जीतने के लिए काफी जद्दोजहद करनी पड़ेगी.

झारखंड विस चुनाव : 11 हजार अर्धसैनिक बल के जवान रहेंगे तैनात

संवाददाता। रांची

झारखंड विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा हो गयी है. राज्य में दो चरणों में चुनाव होगा. पहला चरण 13 नवंबर और दूसरा चरण 20 नवंबर को होगा. वहीं चुनाव के परिणाम 23 नवंबर को आयेंगे. तारीखों की घोषणा के बाद झारखंड पुलिस भी चुनाव की तैयारियों में जुट गयी है, ताकि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांतिपूर्ण तरीके से मतदान हो सके. इसको लेकर झारखंड में 119 कंपनी (11 हजार जवान) अर्धसैनिक बल की तैनाती होगी. जिनमें से 91 अर्धसैनिक बल की कंपनियां झारखंड आ गयी हैं. सुरक्षा व्यवस्था को लेकर झारखंड पुलिस ने चुनाव आयोग से 590 कंपनी अर्द्धसैनिक बल की मांग की थी.

जानें अर्धसैनिक बल की कितनी कंपनियां होंगी तैनात

बीएसएफ	:	43
सीआरपीएफ	:	36
आईटीबीपी	:	15
सीआईएसएफ	:	10
एसएसबी	:	15
कुल	:	119

एक जिले में तीन से पांच कंपनी अर्धसैनिक बल की होगी तैनाती : तीन से पांच कंपनी अर्द्धसैनिक बल एक-एक जिला को मिल सकेगा. इन बलों को फ्लैग मार्च, एरिया डोमिनेशन, चेकिंग आदि के कार्यों में लगाया जायेगा, ताकि आमजनों में यह विश्वास जगे कि चुनाव के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद है.

शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराया गया था लोकसभा चुनाव : बता दें कि झारखंड में लोकसभा चुनाव 2024 शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराया गया था. झारखंड पुलिस ने अपनी विशेष रणनीति के बल पर नक्सलियों की तमाम हिंसा की साजिश को नाकाम कर शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव संपन्न कराया था. अब झारखंड पुलिस के सामने विधानसभा चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करवाने की चुनौती है.

2019 के विस चुनाव में 127 महिला प्रत्याशियों में 104 की जमानत हुई थी जब्त

- 10 सीट पर जीती थीं महिला प्रत्याशी

शुभम किशोर। रांची

झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 की सरगर्मी बढ़ गई है. पॉलिटिकल पार्टियों ने प्रत्याशियों को घोषणा शुरू कर दी है. झारखंड में दो चरणों में मतदान होने है. 13 नवंबर को पहले चरण में 43 सीटों और 20 नवंबर को 38 सीटों पर चुनाव होने हैं. वहीं 23 नवंबर को चुनाव के नतीजे सामने आएंगे. 2019 के विधानसभा चुनाव में 64 विधानसभा क्षेत्र से 127 महिला प्रत्याशी मैदान में उतरीं थी. उनमें 10 प्रत्याशी ही जीत दर्ज कर पाई थी. वहीं 104 प्रत्याशियों का जमानत जब्त हो गया था. इनमे 25 प्रत्याशी नेशनल पार्टी ने और 26 प्रत्याशी स्टेट पार्टी ने उतारी थी. जिसमे सात नेशनल पार्टी और 3 स्टेट पार्टी की प्रत्याशी ने जीत दर्ज की थी. सबसे अधिक महिला प्रत्याशी बोकारो और झरिया से 5- 5 प्रत्याशी मैदान में थी. वहीं खिजरी, रांची, हटिया, बड़कागांव और रामगढ़ से 4- 4 प्रत्याशियों ने दावेदारी की थी.

कांग्रेस के चार, बीजेपी और जेएमएम के 3- 3 प्रताशी जीती थीं

2019 के चुनावी समर में कांग्रेस की महिला प्रत्याशियों ने अपना लोहा मनवाया था. कांग्रेस ने छह महिला प्रत्याशी मैदान में उतारे थे जिसे चार ने जीत दर्ज की थी, वहीं दो को हार मिली थी. जेएमएम ने भी छह महिला प्रत्याशियों को मैदान में उतारा था, जिसमें जेएमएम को तीन सीट पर जीत और तीन पर हार मिली थी. बीजेपी ने सात महिला प्रत्याशियों को मौका दिया था. जिसमें तीन प्रत्याशी ने जीत और चार प्रत्याशी को हार मिली थी.

बरकट्ठा और हजारीबाग के वोटरों का मिजाज, किसके सिर पर सजेगा ताज

ब्यूरो। हजारीबाग

पहला सप्ताह गुस्सा है, दूसरा सप्ताह बेबसी और फिर तीसरे सप्ताह से हार्दिक समर्थन शुरू. सभी पार्टियों के अंदर और सभी विधानसभा क्षेत्र के महत्वाकांक्षी कार्यकर्ताओं की स्थिति कमोबेश यही रहने वाली है. मैं बात कर रहा हूं हजारीबाग के बरकट्ठा और सदर विधानसभा के भाजपा उम्मीदवारों लेकर.

मुन्नू सिंह (पत्रकार)

सवाल यह उठता है कि क्या हजारीबाग सदर विधानसभा में बीजेपी जीत का हैट्रिक और बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र में बीजेपी हार का हैट्रिक लगा पाएगी? किसी भी चुनाव को जीतने के लिए आम आवाम का वोट के साथ-साथ कार्यकर्ताओं का जुनून और इच्छा शक्ति का होना बहुत जरूरी है. वही भीतरघात उम्मीदवार की आंखों पर पर्दा और उनकी नैया डुबोने के लिए काफी है. अब बात करते हैं दोनों विधानसभा क्षेत्र में तथ्यगत सर्वेक्षण के आधार पर लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि सदर सीट भाजपा के लिए काफी उपजाऊ साबित हुई है. याद रखें 2014 के विधानसभा चुनाव में भाजपा की ओर से मनीष जायसवाल उम्मीदवार थे और उन्होंने 27000 वोटो के अंतर से जीत दर्ज कराई थी और वही 2019 के चुनाव में इसके दोगुनी अंतर के लगभग पहुंच चुके थे. अब चूंकि भाजपा ने प्रदीप प्रसाद पर भरोसा दिखाया है ऐसे में प्रदीप प्रसाद जब निर्दलीय होकर 62000 वोट ला सकते हैं तो इस बार जीत का अंतर चौंकाने वाला हो सकता है, हालांकि प्रतिद्वंद्वी कौन होगा, यह तो आने वाला समय बताएगा और उसे नकारा नहीं जा सकता है .बात यदि बरकट्ठा विधानसभा की जाए तो पिछले दो बार के चुनाव में इस क्षेत्र में भाजपा को निराश किया है याद करें 2014 में जब भाजपा की लहर थी उस वक्त भाजपा के प्रत्याशी अमित यादव लगभग 8000 वोटों से हार गए थे. वहीं 2019 के चुनाव में भाजपा के प्रत्याशी जानकी यादव लगभग 25000 वोटों से हारे थे. इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि 2014 में भाजपा की लहर भी भाजपा को यहां जिता न पाई. वहीं 2019 में किसी पार्टी की लहर नहीं थी और ऐसे में निर्दलीय उम्मीदवार ने यहां भाजपा को हरा दिया था. बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र के लोगों की फितरत रही है की एक ही चेहरे को लगातार वह देखना नहीं चाहती है. इस बार भाजपा ने निवर्तमान विधायक अमित यादव पर भरोसा दिखाया है. लोगों के जेहन में झारखंड का भविष्य जरूर रहेगा और इसका सीधा लाभ आज भाजपा को मिल सकता है. वजह कई है जैसे हेमंत सरकार लाख रेवड़ियां बांटे और अंतिम दौर में घोषणाएं करें लेकिन नाकामियां भी शिक्षित वर्गों से छिपी नहीं है. सदर विधानसभा क्षेत्र में अगड़े और पिछड़े की बातें और अगड़े का गुस्सा सार्वजनिक है लेकिन इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि अगड़े अन्य की अपेक्षा ज्यादा शिक्षित और दूरदर्शी हैं. इसके विपरीत बरकट्ठा में ग्रामीण जनसंख्या काफी ज्यादा है, अशिक्षा हावी है. यहां दल के अपेक्षा चेहरे और संवेदनशीलता ज्यादा है इसकी बानगी यह है कि 2014 के चुनाव में एक उम्मीदवार हाथों में सल्फास की गोली लेकर घूम रहे थे और लोगों से वोट मांग रहे थे कि इस बार यदि वोट नहीं दिया तो मैं आत्महत्या कर लूंगा और जनता उन पर भरोसा करती है व उन्हें जीत का अमृत पिला देती है. इंतजार करें.

डिस्केलमरः यह टिप्पणी पत्रकार **मुन्नू सिंह** के फेसबुक वॉल से लिया गया है.

फ्लैश बैक - 04 गावां विधानसभा : बात 1962 की- नि:स्वार्थ भाव से कार्यकर्ता खुद करते थे प्रचार

पैदल दौरा कर टिकैत गिरजा प्रसाद बने थे गावां के विधायक

आदित्य कुमार । गावां

वर्तमान में चुनाव प्रक्रिया अत्यंत खर्चीली हो गई है.आर्थिक युग में चुनाव लड़ना अब सबके बस की बात नहीं रह गई है. महंगे वाहनों की कतार, बडे़-बड़े बैनर पोस्टर आदि के बिना तो अब चुनाव के मैदान में उतरने की बात सोचना ही बेमानी है. लाखों से करोड़ों का खर्च एक-एक प्रत्याशी करता है. लेकिन कभी प्रत्याशी बिना वाहनों के पैदल ही प्रचार कर विधायक बन जाते थे. ऐसी ही एक मिसाल है टिकैत गिरजा प्रसाद.

वर्ष 1962 में टिकैत गिरजा प्रसाद ने पैदल यात्रा कर गावां

गावां में टिकैत गिरजा प्रसाद का महल व फाईल फोटो

विधानसभा क्षेत्र से जीत दर्ज की थी. वे 1962 से 1967 तक क्षेत्र के विधायक रहे थे. उस समय गावां, सतगावां, तिसरी व देवरी प्रखंड को मिलाकर गावां विधानसभा क्षेत्र का निर्माण किया गया था.

उन्होंने स्वतंत्र पार्टी के टिकट से गावां विधानसभा से चुनाव लड़ा था व कांग्रेस प्रत्याशी गंगा भगत को लगभग 2272 मतों से पराजित किया था.स्वतंत्र पार्टी की स्थापना राजगोपालाचारी द्वारा 1959 में किया गया था. इस क्षेत्र में चुनाव का नेतृत्व पद्मा महाराज कामाख्या नारायण सिंह के द्वारा किया गया था.

स्व. टिकैत गिरजा प्रसाद के सुपुत्र भवानी प्रसाद सिंह ने कहा कि पिताजी प्रारंभ में पैदल भ्रमण कर चुनाव का प्रचार करते थे. कार्यकर्ता भी पैदल या साइकिल से भ्रमण करते थे. पिताजी द्वारा कार्यकर्ताओं के लिए भोजन की व्यवस्था की जाती थी. कहीं कोई बूथ खर्च आदि नहीं दिया गया था. कोई बैनर पोस्टर भी नहीं छपवाया गया था. कार्यकर्ता पैदल गावों में जाकर दीवारों पर लेखन करते थे. अंतिम समय में पार्टी के द्वारा एक जीप उपलब्ध करवाया गया था, जिससे वे क्षेत्र का दौरा करते थे. जीप के लिए पेट्रोल की व्यवस्था भी पार्टी के द्वारा ही की गई थी. सड़क नहीं होने के कारण मुख्यालय में ही जीप को रोककर पैदल सुदूर गांवों में डोर टू डोर भ्रमण करते थे. उनके व्यक्तित्व व मिलनसार स्वभाव के कारण कार्यकर्ता पूरे दिन क्षेत्र का दौरा कर प्रचार करते थे. अधिकांश नुक्कड़ सभाएं व बैठकों का आयोजन कर लोगों से मतदान का आग्रह किया जाता था.

सर्राफा

सोना (बिक्री)	73,200
चांदी (किलो)	1,00,000

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in ● रांची, मंगलवार 22 अक्टूबर 2024 ● कार्तिक कृष्ण पक्ष 05, संवत 2081 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 2, अंक : 192 आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

लुईस मरांडी, गणेश महली और कुणाल षांड़गी हुए झामुमो में शामिल

लुईस जामा, गणेश महली सरायकेला, षांड़गी बहरागोड़ा और चुन्ना सिंह सारठ से हो सकते हैं पार्टी प्रत्याशी

विशेष संवाददाता। रांची

बड़ी कामयाबी: सोमवार देरशाम भाजपा के कई बड़े नेताओं का झामुमो में स्वागत करते सीएम हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन. फोटो। रमीज

भाजपा से भागम भाग के बीच भाजपा नेत्री और पूर्व मंत्री लुईस मरांडी, सरायकेला से भाजपा के प्रत्याशी रहे गणेश महली और लोकसभा चुनाव के पहले ही भाजपा छोड़ चुके भाजपा नेता कुणाल षांड़गी समेत कई बड़े नेताओं ने सोमवार देर शाम झामुमो का दामन थाम लिया. मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित एक मिलन कार्यक्रम में हेमंत सोरेन ने उन्हें पार्टी में शामिल कराया.

बताते चलें कि लुईस मरांडी का टिकट भाजपा ने काट दिया है. उनकी जगह दुमका से सुनील सोरेन को टिकट मिला है. इससे वे पार्टी से नाराज चल रही थीं और हेमंत सोरेन से संपर्क बनाए हुई थीं. वहीं कुणाल षांडगी 2014 में झामुमो की टिकट पर जीते थे. मगर 2019 में वे भाजपा में शामिल हुए और झामुमो के समीर मोहंती से चुनाव हार गए. लोकसभा चुनाव के पहले से ये पार्टी से नाराज चल रहे थे और उसी दौरान पार्टी से इस्तीफा दे दिया. लोकसभा चुनाव के पूर्व ही उनके झामुमो में शामिल होने की सारी तैयारी हो गयी थी. मगर स्थानीय झामुमो इकाई के विरोध के बाद इनकी ज्वाइनिंग नहीं हो पाई. वहीं भाजपा से दो बार से सरायकेला प्रत्याशी रहे गणेश महली का टिकट काट कर भाजपा ने चंपाई सोरेन को दे दिया. इससे नाराज होकर वे पार्टी से इस्तीफा दे दिया है. सूत्रों के अनुसार झामुमो लुईस मरांडी को जामा, गणेश महली सरायकेला, कुणाल षांड़गी को बहरागोड़ा सीट से प्रत्याशी बना सकता है. जामा और सरायकेला को लेकर तो पार्टी को कोई दिक्कत भी नहीं होगी क्योंकि ये सीटें झामुमो के ही कोटे की हैं. बता दें कि अभी दो दिन पहले ही तीन बार के भाजपा विधायक केदार हाजरा और आजसू के उमाकांत रजक झामुमो में शामिल हो गए थे. भाजपा के पूर्व प्रवक्ता और बहरागोड़ा के पूर्व विधायक षाड़गी ने बताया, हम आज झामुमो में शामिल हो गए. लुईस मरांडी ने 2014 में हेमंत सोरेन को दुमका से 5,262 वोटों के अंतर सेहराया था.

लुईस ने भेजा इस्तीफा, संगठन और सीता पर लगाए आरोप

इससे पहले पूर्व मंत्री और भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ लुईस मरांडी ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया.उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी को चिट्ठी लिख कर औपचारिक जानकारी दे दी है. इसमें उन्होंने भाजपा से अपना सियासी सफर शुरू करने और 2014 के विधानसभा चुनाव में उन्हें मौका देने तथा मंत्री बनाने के लिए आभार जताया है. साथ ही आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी में आंतरिक अनुशासन कमजोर हुआ है. निष्ठावान कार्यकर्ताओं को दरकिनार किया जा रहा है. झामुमो छोड़ कर भाजपा में शामिल हुईं सीता सोरेन को निशाने पर लेते हुए कहा कि उन्होंने लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान उन पर जानबूझ कर गंभीर आरोप लगाए थे. इसके बाद उन्हें अपेक्षा थी कि पार्टी के लीडर इस पर पहल करेंगे पर ऐसा हुआ नहीं. लुईस के मुताबिक उन्हें 2024 के विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा की ओर से तैयारी करने को कहा गया था पर उनकी उपेक्षा हुई. ऐसे में अब वे भारी मन से पार्टी से इस्तीफा दे रही हैं.

इन्होंने ली झामुमो की सदस्यता

पूर्व मंत्री व भाजपा उपाध्यक्ष लुईस मरांडी, पूर्व विधायक घाटशिला लक्ष्मण टुडू, पूर्व विधायक बहरागोड़ा कुणाल षाड़ंगी, सरायकेला विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के पूर्व प्रत्याशी गणेश महली, पूर्वी सिंहभूम के भाजपा जिलाध्यक्ष बारी मुर्मू और भाजपा नेता बास्को बेसरा. इस अवसर पर पार्टी के केंद्रीय कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन जी ने सभी को पार्टी का अंगवस्त्र पहना कर पार्टी में शामिल किया. इस दौरान विधायक कल्पना सोरेन, पार्टी के केंद्रीय महासचिव विनोद पांडेय एवं बहरागोड़ा विधायक समीर मोहंती भी उपस्थित थे.

झामुमो ने नड्डा पर कसा तंज

उधर झामुमो ने एक्स पर तंज कसते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को लिखा - आदरणीय नड्डा जी, अगर आप तक भाजपा के समर्पित कार्यकर्ताओं की आवाज़ नहीं पहुंच रही है, तो ये वाक़ई शर्मनाक है. अगर पहुंच रही है फिर भी आप भाजपा को दल-दल बदलू दल बनने दे रहे हैं. तो फिर आप भी नॉन-बायोलॉजिकल सर्वशक्तिमान ही है और यह बिल्कुल सोची समझी रणनीति है - जहां समर्पित कार्यकर्ताओं का भविष्य नहीं है.

ब्रीफ खबरें

सुनील तिवारी के खिलाफ यौन उत्पीड़न का केस रद्द

रांची। झारखंड के पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के करीबी और उनके प्रेस सलाहकार रहे सुनील तिवारी के खिलाफ दर्ज यौन उत्पीड़न के केस को हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया है. सुनील तिवारी के खिलाफ कांड संख्या 229/ 2021 और 180/ 2024 दर्ज किया गया था. सुनील तिवारी की याचिका पर हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी की अदालत में सुनवाई हुई. उनकी ओर से अधिवक्ता प्रशांत पल्लव और पार्थ जालान ने पक्ष रखा. बता दें कि खूंटी की एक युवती ने सुनील तिवारी पर दुष्कर्म करने और जाति सूचक शब्द का इस्तेमाल करते हुए गाली देने का आरोप लगाया है. युवती ने 16 अगस्त 2021को रांची के अरगोड़ा थाना में प्राथमिकी दर्ज करवाई है. प्राथमिकी में पूरे घटनाक्रम का क्रमवार जिक्र किया गया है. जिसके बाद सुनील तिवारी ने उनके खिलाफ दर्ज प्राथमिकी रद्द करने के लिए हाईकोर्ट का रूख किया था.

जॉन जोनस टुडू को हाईकोर्ट से मिली बेल

रांची। खूंटी में वर्ष 2018 में हुए चर्चित कोचांग सामूहिक दुष्कर्म मामले के सजायाफ्ता जॉन जोनस टुडू को झारखंड हाइकोर्ट से बड़ी राहत मिली है. सोमवार को अदालत ने उसकी जमानत याचिका स्वीकार करते हुए उसे बेल दे दी है. हाईकोर्ट की डबल बेंच ने उसे जमानत दी है. कोर्ट ने उसकी न्यायिक हिरासत की अवधि को देखते हुए बेल दी है. बता दें कि खूंटी के सिविल कोर्ट ने 17 मई 2019 को जॉन जोनस टुडू को सामूहिक दुष्कर्म मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई है. सामूहिक दुष्कर्म का यह मामला साल 2018 जून महीने का है.

अवैध खनन मामले में पंकज मिश्रा को बेल

रांची। साहिबगंज जिले में अवैध खनन के जरिए अकूत संपत्ति अर्जित करने के आरोपी पंकज मिश्रा की जमानत याचिका पर हाईकोर्ट ने फैसला सुना दिया है.

शुक्रवार को अदालत ने ईडी और बचाव पक्ष की बहस सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था. सोमवार को अपना फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने पंकज मिश्रा को कुछ शर्तों के साथ बेल दे दी है. हाईकोर्ट से बेल मिलने के बाद अब पंकज मिश्रा के जेल से बाहर आने का रास्ता साफ हो गया है. पंकज की बेल पर हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस गौतम कुमार चौधरी की कोर्ट में सुनवाई हुई. बता दें कि पंकज मिश्रा ने रांची पीएमएलए (प्रीवेन्शन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) की विशेष कोर्ट से जमानत याचिका दायर की थी. लेकिन पीएमएलए कोर्ट ने उनकी याचका खारिज कर दी थी.

मिथिलेश व अनंत देव ने किया झामुमो से नामांकन, सीएम ने की सभा

शिबू का बेटा न कभी झुका है और न झुकेगा : हेमंत

विशेष संवाददाता। रांची/गढ़वा

झामुमो के गढ़वा प्रत्याशी मिथिलेश कुमार ठाकुर और भवनाथपुर प्रत्याशी अनंत प्रताप देव उर्फ छोटे राजा ने सोमवार को अपना-अपना नामांकन किया. इनके समर्थन में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गोसाईंबाग मैदान और गोविंद उच्च विद्यालय के मैदान इनके समर्थन में चुनावी सभा की. इस मौके पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन कहा कि ईडी और सीबीआई बीजेपी के राजनीतिक एजेंट की तरह की काम कर रहे हैं. हमारे लोगों को धमकाया जा रहा है. सीएम ने कहा कि गढ़वा में जनता रिकॉर्ड मतों से जीत दर्ज करेगी. विपक्ष के जो भी प्रत्याशी होंगे उनकी जमानत जब्त हो जाएगी. सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि उनको झूठे मामले में जेल में डाला गया, लेकिन उन्हें पता नहीं कि यह शिबू सोरेन का बेटा है. जो न कभी झुका है ना कभी झुकेगा. विपक्ष ने हमारे लोगों को तोड़ने का काम किया.

सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि झारखंड के इतिहास में पहली बार हमारी सरकार पांच साल का कार्यकाल पूरा करने जा रही है. हालांकि हमारे कार्यकाल के अभी कुछ दिन बाकी हैं. यह कहीं ना कहीं चिंता का विषय है कि किसी भी सरकार को समय सीमा तक काम क्यों नहीं करने दिया जाता है. आज जिस तरीके से संवैधानिक संस्थाएं केंद्र सरकार की कठपुतली बनी हैं, वो चिंता का विषय है. भारतीय जनता पार्टी के विरोध में आवाज उठने वाली आवाज को कुचला जा रहा है. इसे झारखंड की जनता बखूबी समझती है. एक बार फिर से ईडी, सीबीआई के माध्यम से हमारे कार्यकर्ताओं को, हमारे नेता को डराया धमकाया जा रहा है. आज ईडी, सीबीआई भारतीय जनता पार्टी के राजनीतिक एजेंट बन गये हैं.

- **सीएम बोले :** किसी भी चुनी हुई सरकार को पूरे कार्यकाल तक काम करने नहीं देना चिंता का विषय
- ईडी और सीबीआई बीजेपी के राजनीतिक एजेंट, हमारे लोगों को धमकाया जा रहा

भरी हुंकार, चुनावी सभा का आगाज: गढ़वा में जनसभा को संबोधित करते सीएम हेमंत सोरेन.

दोबारा सत्ता में आए तो भवनाथपुर में लगेगा पावर प्लांट

मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार को दुबारा सत्ता में आते ही भवनाथपुर में पावर प्लांट लगाया जाएगा। उन्होंने पहले कार्यकाल में पावर प्लांट की आधारशिला रखी थी, लेकिन कुछ विषम परिस्थितियों के कारण प्लांट नहीं बन सका था. उन्होंने कहा कि अपने कार्यकाल में विकास की ऐसी लकीर खींची है कि उसे गिनाना मुश्किल है.

तमाम विपरीत परिस्थितियों में हमने कई काम किए

सीएम ने कहा, किसानों की आय दोगुनी करने वाले लोग आज कहां चले गये. ना आय दोगुनी हुई, न उनका कोई और भला हुआ. हमारी सरकार ने किसानों की दो लाख की ऋण माफी की है. यह राज्य पिछड़ेपन और गरीबी का दंश झेल रहा है. गढ़वा इससे अछूता नहीं रहा. यहां भी कई प्रकार की समस्याएं थीं. पूर्व की सरकार की नजरें यहां तक पहुंच नहीं पाती थी. लेकिन आज हालात पूरी तरह से बदल चुके हैं. हमारी सरकार में कोरोना की चुनौतियों से लड़ते हुए सभी क्षेत्र में विकास किया. चाहे वह बिजली और पानी हो, या शिक्षा का क्षेत्र हो. सीएम ने कहा, गढ़वा में सड़कें बनाने का काम हमारी सरकार ने किया. आज गढ़वा में लोगों को 18 घंटा बिजली मिल रही है. सीएम ने कहा, इस राज्य में गरीबों को आम लोगों को, चाहे शहर में हों या गांव में हों 200 यूनिट बिजली फ्री देने का काम हमारे सरकार ने किया. महिला सशक्तीकरण को लेकर महिलाओं के खाते में 1000 रूपए डाल रहे हैं. आने वाले समय में हर एक घर में एक लाख रुपये पहुंचाने का काम करेंगे. दिसंबर के महीने से 2500 रुपए महिलाओं के खाते में जाएंगे.

झामुमो के प्रत्याशियों की सूची जारी नहीं, मगर प्रत्याशियों का नामांकन हुआ शुरू : झामुमो ने अब तक आधिकारिक रूप से अपने प्रत्याशियों की सूची जारी नहीं की. मगर इनके प्रत्याशियों का नामांकन सोमवार से शुरू हो गया है. सोमवार को झामुमो की ओर से गढ़वा से मिथिलेश ठाकुर, भवनाथपुर से अंनत प्रताप देश और पोटका से संजीव सरदार आदि ने अपना-अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया.

सीट शेयरिंग के किच-किच से दूर कल्पना उतरीं चुनावी समर में

कौशल आनंद। रांची

सीट शेयरिंग और प्रत्याशी चयन के किच-किच से दूर सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन चुनावी समर में उतर चुकी हैं. कल्पना का चुनावी अभियान 19 अक्टूबर से ही शुरू हो चुका है. 19 को कल्पना बोकारो और गिरिडीह दौरे पर रहीं. अभी तक इंडिया गठबंधन के किसी भी पार्टी ने आधिकारिक रूप से किसी भी प्रत्याशी का ऐलान नहीं किया, मगर कल्पना अपने अभियान में जुट गयी हैं. बोकारो नवाडीह में बिनोद बिहारी चौक में स्व. विनोद बिहारी प्रतिमा का माल्यार्पण किया. इसके बाद गिरिडीह के डुमरी पारगो तिलैया में जनसभा की. इसके बाद कल्पना ने गिरिडीह में हुरसोडीह डुमरी में जनसभा की. इसके अलावे उसी दिन उन्होंने डुमरी में रोड शो किया. 20 अक्टूबर को कल्पना गिरिडीह और धनबाद दौरे पर रहीं. इस दौरान उन्होंने पांच चुनावी सभा, पांच स्वागत समारोह में हिस्सा लिया. इसी तरह 21 अक्टूबर को कल्पना ने डुमरी, बोकारो में तीन चुनावी सभा को संबोधित किया. इस दौरान पार्टी के तय प्रत्याशी भी कल्पना के साथ नजर आ रहे हैं. साथ में मंत्री बेबी देवी इनका साथ दे रही हैं.

19 अक्टूबर से लेकर अब तक कर चुकी हैं कई चुनावी सभा, दौरा व रोड शो

उमड़ रही भारी भीड़: गिरिडीह में जनसभा को संबोधित करतीं कल्पना सोरेन.

झामुमो-हेमंत की रणनीति से विपक्षी खेमे में हलचल तेज : इंडिया गठबंधन में अब भी सीट शेयरिंग पर कई पेंच फंसे हुए हैं. मगर झामुमो ने या यों कहें कि खुद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कल्पना को चुनावी समर में झोंक दिया है. एनडीए में शामिल भाजपा और आजसू ने अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है. मगर अभी तक एनडीए खेमे से कोई बड़ी चुनावी सभा या कोई बड़ा नेता फिल्ड में नहीं उतरे हैं. राष्ट्रीय नेताओं का कार्यक्रम बनाया जा रहा है. मगर कल्पना सोरेन के चुनावी समर में कूद जाने से विपक्षी खेमे में हलचल तेज हो गयी है. अब सवाल उठ रहा है कि क्या लोकसभा चुनाव की तरह कल्पना सोरेन फ्रंट फूट पर रहेंगी. मिली जानकारी के अनुसार, हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन का चुनावी कार्यक्रम एक साथ नहीं होगा, हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन के नॉमिनेशन के दिन भले ही एक साथ ये दोनों आएं मगर दोनों अगल-अगल मोर्चा संभाले रखेंगे.

ऊर्जा विभाग से 100 करोड़ से अधिक की फर्जी निकासी मामले में ईडी ने दर्ज की ईसीआईआर

संवाददाता। रांची

- झारखंड पर्यटन विकास निगम लिमिटेड के नाम पर फर्जी खाता खोलकर उसमें 10 .40 करोड़ ट्रांसफर करने का मामला सामने आया था

झारखंड ऊर्जा विभाग के अलग-अलग बैंक खातों से एक सौ करोड़ से अधिक की फर्जी निकासी से जुड़े मामले में ईडी ने ईसीआईआर दर्ज की है. ईडी मनी लॉन्ड्रिंग के तहत इस मामले की जांच करेगी. गौरतलब है कि झारखंड पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (जेटीडीसी) के नाम पर फर्जी खाता खोलकर उसमें 10.40 करोड़ ट्रांसफर करने का मामला सामने आया था. इसको लेकर धुर्वा थाना में गिरजा प्रसाद, आलोक कुमार और अमरजीत कुमार के खिलाफ मामला दर्ज है. वहीं तीन अक्टूबर को झारखंड टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड के जीएम फाइनेंस द्वारा 10.4 करोड़ और झारखंड विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के मास्टर ट्रस्ट द्वारा नौ करोड़ की धोखाधड़ी कर फर्जी अकाउंट से निकासी की शिकायत नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर दर्ज करायी गयी थी. इसके बाद चार अक्टूबर को झारखंड ऊर्जा उत्पादन निगम लिमिटेड ने 40.5 करोड़ और झारखंड विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के मास्टर ट्रस्ट ने 56.5 करोड़ की राशि का फर्जी अकाउंट से निकासी की शिकायत पोर्टल पर दर्ज करायी थी.

राजनीति भाजपा पर परिवारवाद के आरोपों पर हिमंता विस्वा सरमा का पलटवार, कहा -

झामुमो ने तो पति-पत्नी और भाई तक को बनाया प्रत्याशी

संवाददाता। रांची

सोमवार को एयरपोर्ट से निकलते हुए असम के मुख्यमंत्री और झारखंड के चुनाव सह प्रभारी हिमंता विस्वा सरमा ने प्रेस को संबोधित किया. इस दौरान हिमंता ने बीजेपी में हो रहे पाला बदल और पार्टी पर लग रहे परिवारवाद के आरोपों पर बात की. उन्होंने कहा है कि पार्टी की सूची जारी होने के बाद झारखंड में यह इतिहास रहा है कि कुछ असंतुष्टि नजर आती ही है और कुछ इस्तीफे मिलते हैं. हमारे पास यही संकेत आ रहे हैं कि चुनाव को लेकर लोग बहुत उत्साहित हैं, ज्यादा लोगों में असंतुष्टि नहीं है. सरमा ने कहा कि लोग नामांकन के काम में लग गए हैं, थोड़ी बहुत जो लोगों में असंतुष्टि है, वह स्वाभाविक है. जिनके भी मन में खेद और दुख है, उससे हम बात कर लेंगे. हर पॉलिटिकल पार्टी में टिकट एनाउंसमेंट के बाद 2-3 दिनों तक असंतुष्टि होती है, इसलिए मैं इसमें कोई भी टिप्पणी नहीं करूंगा.

युद्ध की हो चुकी है शुरुआत

हिमंता विस्वा सरमा ने अपने संबोधन में प्रेस से कहा कि अभी युद्ध की शुरुआत हो चुकी है. हमारा मेनिफेस्टो है, हमारा संकल्प है, उसको लेकर हम जनता के बीच में जाएंगे और एनडीए को जनता विजई बनाएगी. हमारा विश्वास है, हमारा कोई परिवारवाद नहीं है. बाबूलाल मरांडी चुनाव नहीं लड़ रहे हैं इसलिए उनकी पत्नी को टिकट दिया गया है, उसी तरह रघुवर दास चुनाव नहीं लड़ेंगे, इस कारण उनकी बहु पूर्णिमा को टिकट मिला है.

विरोधी दल न दे हम को सीख : परिवारवाद पर बिना झामुमो का जिक्र किए हिमंता ने पलटवार करते हुए कि हमारी पार्टी में ऐसा नहीं है कि बीवी भी चुनाव लड़ रही है, पति भी चुनाव लड़ रहे हैं और उनका भाई भी चुनाव लड़ रहा है. ऐसा हमारी पार्टी में नहीं है. चंपाई सोरेन हमारी पार्टी में नए-नए आए हैं और ज्वॉइनिंग के वक्त उनसे कुछ बातें हुई थी, आश्वासन दिया गया था, जिन पर अमल किया गया है. सरमा ने आगे कहा कि चंपाई सोरेन को थोड़ा अलग तरीके से देखना होगा क्योंकि वो पहले बीजेपी में नहीं थे. चंपाई सोरेन के बेटे को छोड़ दें, तो हमारी पार्टी में कोई परिवारवाद नहीं है. इस दौरान हिमंता ने बताया कि बरहेट और टुंडी सीट पर जल्द उम्मीदवार घोषित कर दिए जाएंगे. इसका चुनाव दूसरे फेज में होने का है इसलिए पूरा समय लेकर हम इन सीटों पर उम्मीदवारों के नाम की घोषणा करेंगे. हमलोग चर्चा कर रहे हैं, धीरे-धीरे पिक्चर क्लीयर हो जाएगी, तो हम अनाउंस कर देंगे. कोई-कोई व्यक्ति टिकट अनाउंसमेंट की बात मान लेते हैं और बहुत सारे हैं जो नहीं मानते हैं, तो ये एक नेचुरल प्रॉसेस है. जो लोग बीजेपी के हैं, वो मान जाएंगे और जिसके मन में है कि टिकट नहीं मिलने से हम पार्टी में काम नहीं करेंगे, वो चले जाएंगे. हमारे इतने उम्मीदवार हैं, ज्यादा बगावत नहीं हुई है. हम इस बगावत को संभाल लेंगे और चुनाव में जीतेंगे भी.

शिबू के नेतृत्व में झामुमो के स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी

विशेष संवाददाता। रांची

झामुमो ने अपने 33 स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है. पार्टी के महासचिव विनोद कुमार पांडेय ने इसकी सूचना मुख्य निर्वाचन आयोग नई दिल्ली को भेज दी है. जारी सूची में पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष शिबू सोरेन प्रचार अभियान का नेतृत्व करेंगे.

इसके अतिरिक्त पार्टी की ओर से कार्यकारी अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, मंत्री हफीजुल अंसारी, मिथिलेश कुमार ठाकुर, बेबी देवी, दीपक बिरूआ, सांसद नलिन सोरेन, जोबा मांझी, विजय हांसदा, सरफराज अहमद, विधायक कल्पना मुर्मू सोरेन, प्रो स्टीफन मरांडी, मथुरा प्रसाद महतो, सविता महतो, बैद्यनाथ राम, दशरथ गगराई, बंसत सोरेन, सुखराम उरांव, सुदिव्य कुमार सोनू, भूषण तिर्की, मंगल कालिंदी, विनोद कुमार पांडेय, फागु बेसरा, सुप्रियो भट्टाचार्य, मोहन कर्मकार, अभिषेक कुमार पिंटू, राजू गिरि, हेमलाल मुर्मू, सुनील श्रीवास्तव आदि शामिल हैं. ये सभी केंद्रीय नेतृत्व के साथ संपूर्ण झारखंड राज्य में वायु, सड़क एवं रेल मार्ग से यात्रा करके चुनावी प्रचार में हिस्सा लेंगे.

ये जानकारी देते हुए झामुमो महासचिव विनोद पांडेय ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग की इसकी सूचना देते स्टार प्रचारक लिस्ट पर स्वीकृति प्रदान करने तथा इनके द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली गाड़ियों का झारखंड के अंदर परिचालन की अनुमति के लिए पास निर्गत करने की भी अपील की है.

झारखंड विधानसभा चुनाव : सोमवार को 21 लोगों ने किया नामांकन, के रवि कुमार ने कहा-मात्र 3 प्रतिशत मतदान केंद्रों पर ही शाम 4 बजे तक मतदान होगा

जेएमएम नेता के आरोप बेबुनियाद व तथ्यों से परे : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी

संवाददाता । रांची

सोमवार को निर्वाचन सदन में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने मीडिया को संबोधित किया. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) ने कहा है झारखंड मुक्ति मोर्चा नेता सुप्रियो भट्टाचार्य द्वारा मतदान के समय को लेकर लगाये गये आरोप बेबुनियाद और तथ्यों से परे हैं. उन्होंने कहा कि झारखंड विधानसभा 2024 में मात्र 3% मतदान केंद्रों पर ही शाम 4 बजे तक मतदान होगा. झारखंड विधानसभा 2014 में 89% एवं 2019 में 63% मतदान केंद्रों पर सुबह 7 बजे से शाम 3 बजे तक मतदान हुआ था. उन्होंने बताया कि झारखंड मुक्ति मोर्चा द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान के कम समय को लेकर लगाए गए आरोप के संदर्भ में तथ्य निम्नानुसार हैं.

1. राज्य में कुल 29,562 मतदान केंद्र हैं, जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों में 24,520 मतदान केंद्र हैं और शहरी क्षेत्र में 5,042 मतदान केंद्र है.
2. 981 नक्सल प्रभावित ग्रामीण मतदान केन्द्रों को छोड़कर, 23,539 ग्रामीण क्षेत्रों के मतदान केंद्रों में एवं सभी शहरी क्षेत्र के मतदान केंद्रों में मतदान का समय सुबह 7 बजे से सांय 5 बजे तक का है
3. 2014 व 2019 के विधानसभा चुनावों में 89% (22,132) व 63% (18,555) मतदान केंद्रों पर मतदान का समय प्रातः 7 बजे से सायं 3 बजे तक रखा गया था. इस बार मात्र 3% (981) मतदान केंद्रों पर प्रातः 7 से सायं 4 बजे का समय रखा गया है, जो आयोग के विशेष प्रयासों से ही संभव हुआ है.
4. मतदान के समय का पर्याप्त प्रचार होता है। मतदान समाप्ति का समय कोई भी हो, उस समय क़तार में खड़े समस्त मतदाता को मतदान करने का पूर्ण अवसर मिलता है.

कानूनी प्रावधान

आयोग की धारा 56 लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 में मतदान का समय निर्धारित करने का कानूनन अधिकार है. यह समय 8 घंटे से कम नहीं हो सकता है. आयोग मतदान का समय निर्धारित करने से पूर्व अपनी राज्य की यात्रा के दौरान राजनीतिक पार्टियों, ज़िला प्रशासन, राज्य प्रशासन से क्षेत्र के सुरक्षा संबंधी ऐतिहासिक और वर्तमान मसलों पर गौर करता है. इस के अतिरिक्त क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, सड़क नेटवर्क, ऋतु अनुसार सूर्यास्त के समय को भी ध्यान में रखा जाता है. राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा सभी ज़िला प्रशासन से इस संबंध में लिखित अनुशंसा लेकर आयोग को भेजा जाता है. नक्सल प्रभावित या नक्सली इतिहास वाले ग्रामों या ग्राम समूहों के लिए यह सुनिश्चित किया जाता है कि पोलिंग पार्टी सूर्यास्त के पूर्व मतदान की कार्यवाही संपन्न कर सुरक्षित लौट आएं. इन दूरस्थ मतदान केंद्रों पर औसतन मतदाता अन्य शहरी और ग्रामीण मतदान केंद्रों से कम ही रहते हैं.

अब तक कुल 25 प्रत्याशियों ने किया नामांकन

सीईओ ने बताया कि प्रथम चरण के विधानसभा चुनाव को लेकर सोमवार को कुल 21 प्रत्याशियों ने नामांकन का पर्चा दाखिल किया. इसे लेकर अब तक कुल 25 लोग अपनी उम्मीदवारी का पर्चा दाखिल कर चुके हैं. उन्होंने बताया कि आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर अभी तक छह एफआईआर दर्ज कर नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है. उन्होंने बताया कि झारखंड में गलत ट्रेंड सेट किया जा रहा है. कुछ क्षेत्रों में घड़ी और साड़ी बंटवाया जा रही है, जिसे लेकर एफआईआर की गयी है. उन्होंने आम नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि किसी को भी, कहीं से भी आदर्श आचार संहिता उल्लंघन का कोई मामला मिलता है, तो वह अविलंब निर्वाचन आयोग के एप्प सी विजिल पर उसे अपलोड करें. उन्होंने कहा कि आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद से अब तक 7 करोड़ 72 लाख रुपये की अवैध सामग्री और नकदी जब्त किये गये हैं.

चुनाव को लेकर रांची रेंज डीआईजी ने सिमडेगा में की इंटर स्टेट मीटिंग

रांची। विधानसभा चुनाव के दौरान सुरक्षा के इंतजामों का जायजा लेने रांची रेंज के डीआईजी अनूप बिरथरे सोमवार को सिमडेगा पहुंचे. इस दौरान उन्होंने ओडिशा और छत्तीसगढ़ के पुलिस अधिकारियों के साथ इंटरस्टेट मीटिंग की. साथ ही कई आवश्यक निर्देश दिए. डीआईजी ने सिमडेगा एसपी सहित सिमडेगा के पुलिस पदाधिकारी को चुनाव के दौरान सुरक्षा बरतने के लिए कई तरह के निर्देश दिए, उन्होंने बताया कि इंटर स्टेट पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर लोकसभा चुनाव के दौरान सुरक्षा के मद्देनजर विशेष रणनीति तय की गई है. साथ ही ओडिशा और छत्तीसगढ़ की सीमाओं पर चेक पोस्ट एक्टिव कर दिए गए हैं और वहां लगातार निगरानी रखी जा रही है. जिससे चुनाव के दौरान गड़बड़ी करने के उद्देश्य से कोई भी रुपए, शराब और हथियार आदि का परिवहन ना कर सकें. साथ ही उन्होंने कहा कि हर तरह की आपराधिक गतिविधि पर अंकुश लगाते हुए, जिले की सभी सीमाओं पर पुलिस की विशेष निगरानी रखी जा रही है, जिससे साफ सुथरी और सुरक्षित चुनाव हो सके.

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने प्रवर्तन एजेंसियां के साथ की समीक्षा बैठक

नशीले पदार्थों के आवागमन वाले ठिकानों पर छापेमारी कर कार्रवाई करें : के रवि कुमार

संवाददाता । रांची

निर्वाचन सदन में सोमवार को मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) ने प्रवर्तन एजेंसियों के वरीय पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने कहा कि विधानसभा चुनाव में सभी प्रत्याशियों के लिए सामान्य अवसर प्राप्त हो, इसे लेकर भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों का अनुपालन कराना जरूरी है. उन्होंने कहा कि चुनाव के क्रम में अवैध धन के आवागमन के माध्यम

से मतदाताओं को प्रभावित करने के प्रयास हो सकते हैं. इसे लेकर सभी प्रवर्तन एजेंसियों का कर्तव्य है कि अवैध धन और अवैध सामग्री पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगाएं. उन्होंने कहा कि वन विभाग अपने सभी चेकपोस्टों पर सघन जांच करते हुए अवैध सामग्री के आवागमन पर रोक लगाएं. सीईओ ने आयकर विभाग को अवैध धन के संभावित ठिकानों और उसके आवागमन पर सघन छापेमारी करते हुए उसपर रोक लगाने का निर्देश दिया. साथ ही नशीले पदार्थों के संभावित ठिकानों और उसके आवागमन के साधनों पर छापेमारी करते हुए पूर्णतः प्रतिबंध लगाने का निर्देश दिया. इस अवसर पर अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ. नेहा अरोड़ा, सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देव दास दत्ता सहित प्रवर्तन एजेंसियों के वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे.

झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण की अधिसूचना आज होगी जारी

रांची। झारखंड विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है. झारखंड की 81 विधानसभा सीटों पर दो चरणों में मतदान होगा. पहले चरण का चुनाव 13 नवंबर को और दूसरे चरण का चुनाव 20 नवंबर को होगा. 23 नवंबर को चुनाव के नतीजे आएंगे. 22 अक्टूबर से राज्य में दूसरे चरण के नॉमिनेशन के लिए अधिसूचना जारी होगी. दूसरे चरण के लिए मंगलवार से झारखंड में 38 सीटों पर नॉमिनेशन की प्रक्रिया शुरू होगी. 29 अक्टूबर को दूसरे चरण के नॉमिनेशन करने की अंतिम तारीख होगी. 30 अक्टूबर को नॉमिनेशन के स्क्रूटनी की जाएगी. वहीं 1 नवंबर को प्रत्याशियों के नॉमिनेशन वापस लेने का अंतिम दिन होगा. दूसरे चरण का मतदान 20 नवंबर को होगा.

दूसरे चरण में 38 सीटों पर मतदान

सीट- राजमहल, बोरियो, बरहेट, लिट्टीपाड़ा, पाकुड़, महेशपुर, शिकारीपाड़ा, नाला, जामताड़ा, दुमका, जामा, जरमुंडी, मधुपुर, सारठ, देवघर, पौड़ेयाहाट, गोड्डा, महगामा, रामगढ़, मांडू, धनवार, बगोदर, जमुआ, गांडेय, गिरिडीह, डुमरी, गोमिया, बेरमो, बोकारो, चंदनकियारी, सिंदरी, निरसा, धनबाद, झरिया, टुंडी, बाघमारा, सिल्ली व खिजरी.

ब्रीफ खबरें

झारखंड के छात्रों को मिलेगा न्याय: शिवराज

रांची। भाजपा प्रदेश चुनाव प्रभारी सह केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को कहा कि जो अन्याय झारखंड के विद्यार्थियों और युवाओं के साथ हुआ है उसकी मिसाल पूरे हिंदुस्तान में कहीं देखने को नहीं मिलती. हेमंत सरकार ने बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया गया है. बार-बार इन छात्रों के साथ धोखा किया गया. यहां भेदभाव नहीं बेईमानी हुई है. भाजपा ने छात्रों को न्याय देने का संकल्प लिया है. जिन्होंने बार-बार पेपर लीक किया है वे जेल जाएंगे.

जमैतुल इराकीन की मुख्यमंत्री से गुहार

रांची। जमैतुल इराकीन रांची के महासिचव सैफुल हक ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखा है. पत्र के माध्यम से उन्होंने कहा कि कलाल एराकी जाति की झारखंड में बड़ी आबादी है. इस जाति ने शुरू से झारखंड मुक्ति मोर्चा को ही समर्थन किया है. गत दिनों वक्फ बोर्ड अध्यक्ष पद के चुनाव में पार्टी के पूर्व विधायक नेजामुद्दीन अंसारी ने राज्यसभा सांसद सरफराज अहमद को जिताने के लिये कलाल जाति के साथ अपशब्दों का प्रयोग किया. इससे समुदाय वर्ग आहत है, इस लिये इसकी जांच की कृपा करें.

विधानसभा चुनाव : भाजपा पर लग रहे परिवारवाद के आरोपों का मरांडी ने खंडन किया

पति-पत्नी बंटी और बबली हैं, झारखंड के लोगों को ठगा है : बाबूलाल मरांडी

ब्यूरो चीफ । रांची

विधानसभा चुनाव में प्रत्याशियों की घोषणा के बाद से भाजपा पर लग रहे परिवारवाद के आरोपों का बाबूलाल मरांडी ने खंडन किया है. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सोमवार को धनबाद में मीडिया को संबोधित करते हुए झामुमो-कांग्रेस पर जम कर आरोप लगाए. झारखंड में द्वितीय चरण के मतदान जिन - जिन विधानसभा क्षेत्र में है, वहां विधानसभा प्रभारियों के साथ बाबूलाल बैठक कर रहे हैं. इसी के क्रम में वो आज बाबूलाल धनबाद पहुंचे. उन्होंने कहा कि जिस पार्टी की पहचान और पार्टी का संचालन परिवार से होता है वह परिवारवाद है. कांग्रेस, जेएमएम, राजद और सपा ऐसी ही पार्टी है. देश में कांग्रेस पार्टी की पहचान और संचालन गांधी परिवार से होता है. झारखंड में झामुमो की पहचान और संचालन शिबू सोरेन के परिवार से होता है. बिहार में राष्ट्रीय जनता दल की पहचान और संचालन लालू प्रसाद यादव के परिवार से होता है।.उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की पहचान और संचालन भी मुलायम सिंह यादव के परिवार से होता है. इसे परिवारवाद कहते हैं.

उन्होंने कहा कि कोई चुनाव लड़ता है तो कहीं ना कहीं किसी का कोई बेटा होता है, कोई बहू होती है, कोई पत्नी होती है, कोई भाई होता है. यह हो सकता है, लेकिन पार्टी का संचालन वे नहीं करते हैं. पार्टी का संचालन कार्यकर्ता करते हैं. भारतीय जनता पार्टी का एक सिस्टम है. इसी सिस्टम के तहत पार्टी का संचालन होता है. इसे परिवारवाद कहना गलत है. उन्होंने कहा कि चुनाव के समय कुछ लोगों की नाराजगी होती है. सभी से हम लोग बात कर रहे हैं. मरांडी ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा को यह पता है कि वह चुनाव बुरी तरीके से हार रहे हैं. इसलिए अभी से उन्होंने बहाना बनाना शुरू कर दिया है. आरोप लगाना शुरू कर दिया है कि भाजपा चुनाव आयोग से मिली हुई है. कोई सबूत तो दे दे. मरांडी ने कहा कि बंटी और बबली पति-पत्नी हैं. 5 साल इन दोनों ने झारखंड के लोगों को ठगा है. उन्होंने कहा था कि लोगों को 1 साल में 72000 रुपए देंगे. 5 साल हो गए हेमंत सोरेन ने किसी गरीब को 72000 रुपए नहीं दिये. मां बहनों को चूल्हा खर्च हर महीने 2000 रुपए देने की बात कही थी। 5 साल बीत गये, किसी को चूल्हा खर्च नहीं दिया.

झारखंड में चल रहा बंटी बबली का खेल

उन्होंने बेटियों से कहा था कि शादी होने पर सोने का सिक्का देंगे. एक भी लड़की को सोने का सिक्का नहीं दिया. वृद्ध, दिव्यांग को कहा था कि ढाई हजार रुपए महीने पेंशन देंगे. किसी को नहीं दिया. नौजवानों को 5 लाख नौकरी देने की बात कही थी. अपने पिताजी की कसम खाई थी. कहा था कि 5 लाख नौकरी नहीं देने पर राजनीति से संन्यास ले लेंगे. जो व्यक्ति पिताजी की कसम खाकर पूरा नहीं करता है, उन पर कौन भरोसा करेगा. विधानसभा में कहा था कि बीए पास को 5000 और एमए पास को 7000 रुपए भत्ता देंगे. एक भी काम पूरा नहीं किया. जब चुनाव आ गया, तब नया तरकीब भिड़ाया और महिलाओं को अगस्त से 1000 रुपए देने लगे. 3 महीना दिए हैं. उन्होंने दिसंबर से 2500 देने की बात कही है. यही बंटी और बबली का खेल है. मरांडी ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी गरीब कल्याण का काम कर रहे हैं. देश की 86 करोड लोगों को प्रत्येक महीने 5 किलो मुफ्त में प्रत्येक व्यक्ति को अनाज देने की बात कही थी. झारखंड में भी 2 करोड़ से अधिक लोगों को यह अनाज मिल रहा है. प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के किसानों के खाते में प्रत्येक साल 6000 रुपए देंगे. वह भी भेज रहे हैं. आज जिन राज्यों में बीजेपी की सरकार है, वहां अलग-अलग नाम से मां बहनों के सशक्तीकरण के लिए योजना चलाई जा रही है. सहयोग राशि दी जा रही है. भारतीय जनता पार्टी किसी का नकल नहीं करती है. जो योजना बीजेपी चला रही है, उसकी चोरी कर दूसरी पार्टी लागू की है.

मुखिया संघ ने सुदेश को सौंपी पांच सूत्री मांगें

रांची। सोमवार को झारखंड प्रदेश मुखिया संघ के अध्यक्ष सोमा उरांव के नेतृत्व में अपनी पांच सूत्री मांगों को लेकर पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी, आजसू प्रमुख सुदेश कुमार महतो और इरफान अंसारी को सोमवार को ज्ञापन सौपा गया. झारखंड प्रदेश मुखिया संघ के अध्यक्ष सोमा उरांव ने कहा कि झारखंड प्रदेश में मुखिया संघ को षड्यंत्र के तहत 11 दिन से अनिश्चितकालीन चल रहे धरना को तुड़वाया गया. प्रोजेक्ट बिल्डिंग में लिखित आश्वासन देने के बाद भी मांगे पूरा नहीं हुआ है. जो राजनीति पार्टियां मुखिया संघ का साथ देगा. उसे निधानसभा चुनाव में सहयोग किया जाएगा. मौके पर प्रतिनिधिमंडल में, दिलीप कुमार उराव, परमेश्वर महली, वासुदेव उराव , रामकिशन उरांव, दिलीप साहू, विकास गिरी, बबलू उरांव, दीपक बड़ाईक, शिवनाथ मुंडा, सुनील उरांव, वीरेंद्र मुंडा, रमेश बेदिया, लक्ष्मण भगत, शंकर उरांव, गोपाल उरांव, वीरेंद्र उरांव, संतोष किसपोटा एवं झारखंड प्रदेश मुखिया संघ के पूर्व अध्यक्ष विकास कुमार महतो समेत अन्य शामिल थे.

स्वीप के कार्यों में गति लाने पर हुई चर्चा

रांची। सोमवार को निर्वाचन सदन में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने स्वीप समिति के सभी सदस्यों के साथ आयोजित बैठक की. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा की विधानसभा निर्वाचन 2024 में मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए स्वीप के कार्यों में तेजी लाएं. उन्होंने कहा कि जनसंपर्क के सभी साधनों यथा पोस्टर, बैनर, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया, नुक्कड़ नाटक, प्रचार वाहन आदि का इस्तेमाल करते हुए मतदाताओं के बीच जागरूकता फैलाने का कार्य करें. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि स्कूली शिक्षा विभाग द्वारा मतदान के कार्य में लगने वाले वॉलिंटियर को चयनित कर मुख्यालय द्वारा उनकी ट्रेनिंग के लिए तैयार सामग्री से उनकी ट्रेनिंग भी पूरी कर लें. उन्होंने कहा कि वॉलिंटियर के रूप में काम करने वाले स्कूली बच्चों को ससमय सर्टिफिकेट एवं आईडी कार्ड उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें. मौके पर अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ. नेहा अरोड़ा, कल्याण विभाग के सचिव कृपानंद झा, शिक्षा विभाग के राज्य परियोजना निदेशक शशि रंजन आदि उपस्थित थे.

कल से करवट लेगा मौसम, 26 तक हैं बारिश के आसार

मौसम साफ होते ही ठंड देगी दस्तक

संवाददाता । रांची

मौसम केंद्र रांची के अनुसार उत्तरी अंडमान सागर और उससे सटे पूर्वी-मध्य और दक्षिण-पूर्वी बंगाल की खाड़ी पर कल के ऊपरी वायु चक्रवाती परिसंचरण के प्रभाव में, सोमवार की सुबह 5.30 बजे पूर्वी-मध्य बंगाल की खाड़ी व उससे सटे उत्तरी अंडमान सागर पर कम दबाव का क्षेत्र बना है. इसके पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने और 22 अक्टूबर की सुबह तक दबाव का प्रभाव, 23 अक्टूबर तक पूर्वी-मध्य बंगाल की खाड़ी पर चक्रवाती तूफान की संभावना है. इस तरह झारखंड में 23 से मौसम में बदलाव के संकेत हैं, राज्य के कई जिलों में 26 अक्टूबर तक बारिश की संभावना है. मौसम विभाग केअनुसार, बंगाल की खाड़ी में 20 अक्टूबर को बने लो प्रेशर का प्रभाव झारखंड में भी नजर आयेगा. इस कारण से झारखंड में 23 व 24 अक्टूबर को बारिश की संभावना है. इसका प्रभाव 26 अक्टूबर तक रहने के आसार हैं. आकाशीय बिजली गिरने की संभावना भी है, मौसम विभाग ने इसे लेकर यलो अलर्ट जारी किया है. इसके पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने और 22 अक्टूबर की सुबह तक पूर्वी मध्य बंगाल की खाड़ी में एक अवदाब और 23 अक्टूबर, 2024 तक एक चक्रवाती तूफान में तब्दील होने की संभावना है. इसके बाद, इसके उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने और 24 अक्टूबर की सुबह तक ओडिशा-पश्चिम बंगाल तटों से उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी तक पहुंचने की संभावना है. 24 की रात और 25 अक्टूबर, 2024 की सुबह के दौरान पुरी और सागर द्वीप के बीच उत्तरी ओडिशा और पश्चिम बंगाल के तटों को 100-110 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से 120 किमी प्रति घंटे गस्टिंग के साथ एक प्रचंड चक्रवाती तूफान के रूप में पार करने की संभावना है.

नगर निगम ने सुपरवाइजों को शहर की बेहतर सफाई के लिये निगरानी का दिया निर्देश

दीपावली नजदीक, शहर को करें चकाचक

संवाददाता । रांची

नगर आयुक्त के निर्देश पर नगर निगम की टीम शहर में साफ सफाई के कार्य में लग गई है. मालूम हो महज एक सप्ताह में दीपावली का त्योहार आने वाला है. शहर के घर-घर के लोग अपने घरों को चकाचक करने में लग गये हैं. वहीं कचरों का अंबार भी बड़ी मात्रा में एकत्रित हो रहा है. नगर निगम की टीम द्वारा

शहर की नालियों में जमा कचरे, सड़कों पर रखे कचरे एवं घर घर से कचरों का उठाव किया जा रहा है.

यहां चला अभियान: नगर निगम की टीम की ओर से सोमवार को हरमू रोड, हरमू बस्ती, बाजार क्षेत्र , हिंदपीढ़ी, पुरानी रांची, अपर बाजार, मेन रोड, किशोरगंज, लेक रोड, चर्च रोड, काली मंदिर रोड आदि क्षेत्रों में अभियान चलाया. नगर निगम की टीम को निर्देश दिया गया कि टीम समन्वय स्थापित कर कार्य करें और समस्त वार्डों में अभियान चलाये ताकि गंदगी की परेशानी समय से पूर्व दूर हो जाये.

- **शहरवासियों से स्वच्छ व सुंदर शहर बनाने में सहयोग की अपील :** निगम नगर निगम ने इसके साथ साथ शहरवासियों से अपने शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाने में सहयोग करने की अपील की है. नगर निगम ने कहा कि सड़क में यहां वहां कचरा नहीं फेंके, कचरों को डस्टबीन में ही डाले, घर के कचरे का जमा कर के रखें कचरा वाहन आने पर उसे दें, गंदगी की कही परेशानी है, तो निगम को सुचित करें. सभी के सहयोग से ही शहर स्वच्छ व सुंदर बनेगा.

मतदान नगर निगम एवं जिला प्रशासन ने मतदाता जागरूकता को लेकर की बैठक

आरडब्लूए की सहभागिता से लोगों को किया जाएगा जागरूक

संवाददाता । रांची

रांची नगर निगम एवं जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को नगर निगम सभागार मतदाता जागरूकता अभियान के तहत रांची नगर निगम अंतर्गत रेसिडेंशियल वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्लूए) के साथ बैठक उप विकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव की अध्यक्षता में हुई. उन्होंने कहा कि शहरी उदासीनता को दूर करने के साथ साथ मतदान के प्रति आम नागरिकों को जागरूक करने के लिये आरडब्लूए की सहभागिता सुनिश्चित करना होगा. उन्होंने कहा कि एक स्वास्थ्य एवं मजबूत लोकतंत्र के लिये जरूरी है कि अधिक से अधिक संख्या में लोग मताधिकार का प्रयोग करें. प्रत्येक नागरिक अपने-अपने परिवार, आस पास के लोगों, परिजनों आदि को इसके प्रति जागरुक करने का कार्य करें.

नगर निगम सभागार में उप विकास आयुक्त दिनेश कुमार की अध्यक्षता में बैठक हुई.

उन्होंने रेसिडेंशियल वेलफेयर एसोसिएशन के निवासियों से अपील करते हुए कहा कि अपने अपने अपाअमेंट्स तथा आस पड़ोस के लोगों के बीच मतदान जागरुकता अभियान के तहत विभिन्न स्वीप संबंधित एक्टिविटीज आयोजन करें. ताकि आम लोग मतदान के प्रति जागुरक हो सके. मौके पर अपर प्रशासक संजय कुमार ने आरडब्लूए का स्वागत करते हुए कहा कि समाज को बदलने व विकसित करने के लिये मतदान करना अहम है.

उन्होंने सभी सम्मानित नागरिकों से अपील की है, कि मतदान दिवस के दिन अपने मतदाता होने के कर्तव्यों का निर्वहन अच्छी तरह करें व मतदान जरूर करें. वोटर हेल्प लाइन एप तथा सी एंड वीजील एप के बारे में भी जानकारी दी गई. साथ ही सीप के तहत क्विज का आयोजन किया गया तथा मतदान की शपथ दिलाई गई. मौके पर सहायक समाहर्ता आदित्या पांडेय, अपर प्रशासक संजय कुमार, उप प्रशासक गौतम प्रसाद साहु, सहायक प्रशासक निकेश कुमार, चंद्रपीप कुमारी, रेजिडेंशियल वेलफेयर एसोसिएशन के निवासी शामिल थे.

लोकतंत्र बचाओ अभियान ने चुनाव आयोग को सौंपा ज्ञापन

सांप्रदायिक भाषणों पर रोक लगाने की रखी मांग

ब्यूरो । रांची

लोकतंत्र बचाओ अभियान का प्रतिनिधिमंडल झारखंड के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से मिलकर राज्य में बिना धार्मिक ध्रुवीकरण के निष्पक्ष विधान सभा चुनाव सुनिश्चित करने की मांग की है. प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को 2024 के लोक सभा चुनाव के दौरान भारतीय जनता पार्टी द्वारा आचार संहिता का व्यापक उल्लंघनों करने की बात कही. लोकसभा चुनाव में भाजपा के विभिन्न राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय नेता लगातार अपनी चुनावी भाषणों में मुसलमानों के विरुद्ध नफरत व झूठी बातों को फैलाये थे व धार्मिक ध्रुवीकरण कर वोट मांगे थे. उनके द्वारा आचार संहिता व लोक प्रतिनिधित्व कानून का लगातार

उल्लंघन किया गया था. इसके अलावा विभिन्न फेज के चुनाव के दिन भाजपा द्वारा राज्य के सभी प्रमुख अखबारों के पहले पृष्ठ में पार्टी का चिह्न व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फ़ोटो के साथ चुनावी विज्ञापन छापा गया था. यह साफ रूप से चुनाव को भाजपा के पक्ष में प्रभावित करने की पहल थी. लोकतंत्र बचाओ अभियान ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को गौर करवाया कि कई बार इन सबकी शिकायत भी की गयी थी, लेकिन नफरती भाषण और विज्ञापन के आलोक में किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गयी थी. साथ ही, हर फेज में ऐसी पर्चियां बांटना भी जारी रहा. इस आलोक में इस संभावना से नकारा नहीं जा सकता है कि भाजपा व इनके नेताओं द्वारा फिर से धार्मिक ध्रुवीकरण किया जायेगा. दल में में अपूर्वा, लीना, मंथन, नंदिता भट्टाचार्य, प्रवीर पीटर, सिसिलिया लाकड़ा व विनोद कुमार शामिल थे.

चैंबर ऑफ कॉमर्सने की सिटी एसपी संग बैठक

रांची। मतगणना कार्य के लिए पंडरा कृषि मंडी की दुकान/गोदामों के अधिग्रहण के लिये जिला प्रशासन और बाजार समिति द्वारा नोटिस जारी कर, दुकान/गोदाम खाली करने के निर्देश से दुकानदारों की उत्पन्न समस्या को देखते हुए सोमवार को झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स ने सदर अनुमंडल पदाधिकारी व सिटी एसपी के साथ बैठक की. मालूम हो कि जिला प्रशासन द्वारा 21 अक्टूबर को ही दुकान/गोदाम खाली करने का निर्देश दिया गया था. काफी अल्प अवधि में दुकान/गोदामों को खाली करने में होनेवाली कठिनाई को देखते हुए चैंबर ने जिला प्रशासन से सहयोगात्मक रवैया अपनाने का आग्रह किया. बेहद ही सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न हुई, वार्ता के अनुसार व्यापारियों द्वारा तय समय पर दुकान/गोदाम प्रशासन को हैंडओवर करने की सहमति दी गई. मौके पर चैंबर के कार्यकारिणी सदस्य राम बांगड, रोहित पोद्दार, संजय अखौरी, साहित्य पवन, रांची चेंबर पंडरा के संजय महुरी, रौनक पोद्दार, अभय बदानी, आलू प्याज संघ के मदन सा मौजूद रहे.

ट्यूमर से पीड़ित महिला को मिला नया जीवन

रांची। झारखंड के एक सुदूर ग्रामीण क्षेत्र की रहने वाली एक मरीज़ को

एक जटिल सर्जरी से नया जीवन मिला. मरीज़ पिछले 5 सालों से जबड़े के ट्यूमर से ग्रसित थी. बढ़ते बढ़ते ट्यूमर का वजन क़रीब एक किलोग्राम हो गया था, जिसकी वजह से मरीज़ को मुंह खोलने और खाने में समस्या आने लगी. गंभीर स्थिति होने पर मरीज़ को रांची में मैक्सिलोफ़ेशियल सर्जन डॉ. अनुज के पास ले जाया गया. डॉ. अनुज ने एक जटिल सर्जरी के ज़रिए ट्यूमर को काट के हटाया. डॉ. अनुज ने बताया कि महिला अमीलोब्लास्टोमा नाम के ट्यूमर से ग्रसित थी, जिसकी वजह से उसके चेहरे में इतनी विकृति आ गई और उसे खाने में भी समस्या आने लगी. उन्होंने बताया कि रांची के हेल्थ पॉइंट में क़रीब 3 घंटे चले सर्जरी में ट्यूमर से ग्रसित जबड़े को काट कर अलग किया गया.

छलका दर्द : अतिथि शिक्षकों ने रांची विश्वविद्यालय के कुलसचिव को सौंपी प्रतिलिपि

17 माह से वेतन नहीं, कार्य से भी रोका जा रहा

संवाददाता। रांची

रांची विश्वविद्यालय के सभी अतिथि शिक्षक सोमवार को आरयू मुख्यालय पहुंचे. उन्होंने सामूहिक रूप से कुल सचिव को उच्च न्यायालय के आदेश की प्रतिलिपि विभाग में सौंपी.

मौके पर अतिथि शिक्षकों ने कहा कि यह पूरी तरह से उच्च न्यायालय के आदेशों की अवहेलना है. हमारी नियुक्ति रांची विश्वविद्यालय द्वारा नियम संगत की गई है और अब इसी के द्वारा हम लोगों को कार्य करने से रोका जा रहा है, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है. अतिथि शिक्षकों को पिछले 17 माह से वेतन का भुगतान नहीं किया गया है और अब इन्हें कार्य से रोका जा रहा है.

कुल सचिव को उच्च न्यायालय के आदेश की प्रतिलिपि विभाग में सौंपते रांची विश्वविद्यालय के सभी अतिथि शिक्षक.

संघ के अध्यक्ष अरविंद प्रसाद ने कहा कि उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग और रांची विश्वविद्यालय हमारे जीवन से खेल रही है, इन्हें किन्ही के आदेश से डर नहीं लगता. संघ के संयोजक डॉ धीरज सिंह सूर्यवंशी ने कहा कि यह शिक्षक विरोधी संकल्प है इस पर माननीय उच्च न्यायालय द्वारा त्वरित स्वतः संज्ञान लेकर संबंधित पदाधिकारी पर कार्रवाई करनी चाहिए ताकि हम लोगों के जैसे और किसी के जीवन के साथ खिलवाड़ न किया जा सके. रांची विश्वविद्यालय परिसर में डॉ धीरज सिंह सूर्यवंशी, डॉ जमील अख्तर, डॉ आशीष कुमार, शिवकुमार, सौरभ कुमार, कृष्णकांत, डॉ ज्योति डुंगडुंग, डॉ रंजू, राजू हजम, आसिफ अंसारी, सरफराज अहमद, डॉ ताल्हा नदवी, डॉ खातून, डॉ पूनम, डॉ चक्षु पाठक, विकास कुमार, डॉ जिज्ञासा ओझा, डॉ नाजिश हसन, अंकित शर्मा डॉ आरती, दीपशिखा, सुषमा साहू, डॉ निशा आदि शिक्षक उपस्थित थे.

मेडिका अस्पताल में ऑस्टियोपोरोसिस मैनेजमेंट पर सीएमई कार्यक्रम आयोजित

रांची । मेडिका अस्पताल ने सफलतापूर्वक सीएमई कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें ऑस्टियोपोरोसिस पर केंद्रित चर्चाएं की गईं जिसमे रांची के प्रमुख अस्थि रोग विशेषज्ञ उपस्थित थे. इस कार्यक्रम का उद्देश्य ऑस्टियोपोरोसिस फ्रैक्चर के मैनेजमेंट में आने वाली चुनौतियों और अनुभवों पर चर्चा करना था साथ ही उपचार के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए सहयोगात्मक देखभाल के महत्व पर जोर देना था. इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पैनल चर्चा थी, जिसमें मेडिका के अस्थि रोग विभाग के सीनियर कंसल्टेंट डॉ. निर्मल कुमार और डॉ. राकेश अग्रवाल ने विस्तार पूर्वक

प्रकाश डाला.मेडिकल डायरेक्टर, डॉ. विजय मिश्र ने कहा, रोगियों की देखभाल को बेहतर बनाने के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों के बीच नवीन जानकारी साझा करने के लिए इस प्रकार की सीएमई बहुत जरूरी है.सीएमई में अस्थि रोग विशेषज्ञों के व्याख्यान में ऑस्टियोपोरोसिस के निदान और उपचार की जटिलताओं पर प्रकाश डाला, उन्होंने फ्रैक्चर मैनेजमेंट में नवीनतम प्रगति और मरीजों की देखभाल में बहुआयामी दृष्टिकोण की महत्वपूर्ण भूमिका पर गहन चर्चा की.

एक्सआईएसएस व एक्सएएच का हैदराबाद में एलुमिनाई मीट समारोह

ब्रांडिंग, टीम वर्क और संगठन के भविष्य के बारे में हुई चर्चा

- पूर्व छात्रों की लिखित किताब 'द अनटोल्ड जर्नी ऑफ लीडर्स' का हुआ विमोचन

संवाददाता। रांची

जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एक्सआईएसएस), रांची एवं एक्सआईएसएस एलुमनाई एसोसिएशन हैदराबाद चैप्टर (एक्सएएच) ने नो वोटेल हैदराबाद कन्वेंशन सेंटर में एलुमनाई मीट समारोह का आयोजन किया. तेलंगाना सरकार के योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष डॉ जी चिन्ना रेड्डी ने अतिथियों संग मिलकर एक्सआईएसएस के एलुमनाई द्वारा लिखी पुस्तकः द अनटोल्ड जर्नी ऑफ लीडर्स का विमोचन किया. ये एलुमनाई प्रमुख सीईओ, सीएचआरओ, पीएचडी, आईपीएस अधिकारी, पब्लिक सर्वेंट, इंटरप्रेन्योर और कॉर्पोरेट ट्रेलब्लेजर हैं. डॉ रेड्डी ने ने कहा कुशल नेतृत्व

में योगदान के लिए संस्थान की प्रशंसा की और हैदराबाद के मुख्यमंत्री से शहर में दूसरा एक्सआईएसएस परिसर स्थापित करने का आग्रह किया. उन्होंने इस किताब के लेखकों को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए बधाई दी.

उन्होंने पुस्तक के 31 लेखकों को भी सम्मानित किया, जिनमें लिपिका वर्मा, चिन्मय सेनगुप्ता, डॉ राजोरशी गांगुली, शान प्रभाकरन व डॉ अनीता मैथ्यू शामिल हैं.

इससे पूर्व एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसेफ मारियानुस कुजूर एसजे ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और मजबूत मूल्यों वाले लीडर्स को तैयार करने में संस्थान की भूमिका पर जोर दिया. कार्यक्रम में आयोजित पैनल डिस्कशन में संस्थान के एलुमनाई ने ब्रांडिंग, टीम वर्क व संगठन के भविष्य के विस्तार के बारे में चर्चा की. जेनसेक्स्टी ट्राइब की संस्थापक मीनाक्षी मेनन व रियलपेज इंडिया के एमडी आइजैक राजकुमार के नेतृत्व में मुख्य चर्चा इस बात पर केंद्रित थी कि एक्सआईएसएस अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैसे प्रमुखता हासिल कर सकता है. मारुती सुजुकी इंडिया लिमिटेड के एग्जीक्यूटिव ऑफिसर व सीएचआरओ, सलिल लाल, ईसीएल की सेवानिवृत्त डीपी, आहुति स्वैन व एमआईटीएस के आईआर डीन, श्रीमंत बसु समेत पैनलिस्टों ने बताया कि कैसे एलुमनाई नेटवर्क और सहयोग एक्सआईएसएस को वैश्विक शिक्षा केंद्र के रूप में स्थापित कर सकते हैं, और इसके पाठ्यक्रम को इंडस्ट्री की जरूरतों व भविष्य के रुझानों के साथ जोड़ सकते हैं. मारुति व ईसीएल द्वारा प्रायोजित यह कार्यक्रम एक्सआईएसएस के लिए मील का पत्थर था, जिसका श्रेय एक्सआईएसएस एलुमनाई एसोसिएशन हैदराबाद चैप्टर व इसके अध्यक्ष ईआर वेंकट को जाता है, जिन्हें उनके नेतृत्व के लिए कार्यक्रम के दौरान सम्मानित भी किया गया.

पुलिस संस्मरण दिवस मनाया गया

शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि, वीरता को नमन

संवाददाता। रांची

डोरंडा स्थित जैप-1 परिसर में सोमवार को पुलिस संस्मरण दिवस पर परेड का आयोजन किया गया. इस समारोह में डीजीपी से लेकर पुलिस मुख्यालय के वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे. सभी ने पुलिस संस्मरण दिवस पर शहीदों को याद किया और जैप परिसर स्थित शहीद स्मारक में श्रद्धांजलि अर्पित की गयी.

इस साल 216 पदाधिकारी व जवान वीरगति को हुए प्राप्त : बता दें कि इस साल देश के पारा मिलिट्री फोर्स और विभिन्न राज्यों की पुलिस बल के कुल 216 पदाधिकारी और जवानों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए वीरगति को प्राप्त हुए हैं. इसमें झारखंड के हवलदार चौहान हेंब्रम 12 अगस्त को सजायाफ्ता कैदी की सुरक्षा में प्रतिनियुक्ति के दौरान कैदी द्वारा किये गये हमले में शहीद हुए थे. वहीं दूसरी तरफ आरक्षी सिकंदर सिंह और सुकन राम, चतरा जिले में सात फरवरी को नक्सली हमले में शहीद हुए थे. इसके अलावा आरक्षी रामदेव महतो ने अपराधियों के साथ हुए मुठभेड़ में अपने प्राणों की आहुति दी थी. शहीदों के परिवारों के साथ झारखण्ड पुलिस के सभी पदाधिकारी और कर्मी हमेशा साथ खड़े रहेंगे.

रांची पुलिस लाइन में वीर शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित

रांची। पुलिस संस्मरण दिवस पर सोमवार की सुबह रांची पुलिस लाइन में वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गयी. इस दौरान देश की आंतरिक सुरक्षा में जान गंवाने वाले रांची सहित झारखंड के वीर शहीदों को याद किया गया. साथ ही रांची के एसएसपी चंदन सिन्हा सहित अन्य अधिकारियों ने उन शहीदों के परिवारों के बीच दुख बांटने की कोशिश की. एसएसपी ने इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि अपने कर्तव्य के दौरान देश के लिए शहीद होना गौरव की बात है, हालांकि शहीदों की क्षति को भुलाया नहीं जा सकता है. इस संस्मरण दिवस के दौरान एसएसपी ने शहीदों को सलामी भी दी. उन्होंने बताया कि 21 अक्टूबर 1959 को लद्दाख के हॉट स्प्रींग में चीनी सेना के आक्रमण में सीआरपीएफ अधिकारी करम सिंह अपने 20 साथियों के साथ शहीद हो गये थे. तब से 21 अक्टूबर को पुलिस संस्मरण दिवस मनाया जाता है. इस दौरान पिछले एक साल में शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि दी जाती है. मौके पर सिटी एसपी राजकुमार मेहता समेत कई पुलिस पदाधिकारी उपस्थित थे.

प्रकाश पर्व : निकाली जाएगी शोभायात्रा भव्य नगर कीर्तन भी होगा, सजेंगे दीवान

- 13 नवंबर की सुबह आठ बजे से दस बजे तक और शाम सात बजे से नौ बजे तक दीवान सजेंगे

संवाददाता। रांची

श्री गुरु नानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में निकाले जाने वाले नगर कीर्तन की तिथि में बदलाव किया गया है. 13 नवंबर को सुबह आठ बजे से दस बजे तक और शाम सात बजे से नौ बजे तक दो दीवान सजाए जाएंगे. श्री गुरु नानक सत्संग सभा, कृष्णा नगर कॉलोनी में सुबह दस बजे से बैठक हुई. गुरुनानक सत्संग सभा के अध्यक्ष द्वारका दास मुंजाल की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई. बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 14 नवंबर को नगर कीर्तन शोभायात्रा निकाली जाएगी. मुख्य दीवान को कृष्णा नगर कॉलोनी स्थित गुरुद्वारा मैदान में सुबह दस बजे से दोपहर दो

बजे तक सजाया जाएगा. इस अवसर पर गुरुनानक सेवक जत्था द्वारा रक्तदान शिविर भी लगाया जाएगा. दोपहर एक बजे से गुरु का अटूट लंगर चलाया जाएगा.

दीवान समाप्ति के बाद दोपहर दो बजे गुरुद्वारा मैदान से पुष्प से सज्जित सवारी पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को विराजमान कर भव्य नगर कीर्तन निकाला जाएगा, जो मेट्रो गली,रातु रोड, किशोरी यादव चौक, प्यादा टोली, गांधी चौक, शहीद चौक, अल्बर्ट एक्का चौक, सर्जना चौक, डेली मार्केट, चर्च कॉम्प्लेक्स, लाला लाजपत राय चौक होते हुए पीपी कंपाउंड स्थित गुरु नानक स्कूल परिसर पहुंचकर रात नौ बजे विसर्जित होगा. मौके पर सुंदर दास मिड्ढा, सुरेश मिड्ढा, हरविंदर सिंह बेदी, चरणजीत मुंजाल, अशोक गेरा, हरगोविंद सिंह, मोहन लाल अरोड़ा, लेखराज अरोड़ा, अमरजीत गिरधर, नरेश पपनेजा, मनीष मिड्ढा, मोहन काठपाल, लक्ष्मण दास मिड्ढा, अश्विनी सुखीजा, महेंद्र अरोड़ा, महेश सुखीजा, हरीश मिड्ढा, अनूप गिरधर, बिनोद सुखीजा, राकेश गिरधर समेत अन्य शामिल थे.

टूर्नामेंट का विजेता बनी पतराचवली की टीम

रांची । हुलहुंडू, कैथोलिक महाधर्मप्रांत द्वारा स्व. कार्डिनल तेलेस्फोर पी टोप्पो की स्मृति में आयोजित इंटर कैथॉलिक पल्ली फुटबॉल टूर्नामेंट का समापन सोमवार को हो गया.पतराचावली और दिघिया पल्ली के बीच फ़ाइनल मैच खेला गया. इस टूर्नामेंट की विजेता पतराचावली की टीम रहीं. दिघिया पल्ली की टीम उपविजेता रहीं. सामलोंग पल्ली की टीम ने तीसरा स्थान पर रहे.

विजेताओं के बीच बांटे गए एक लाख तीन हजार रुपये : पांच दिवसीय कार्डिनल स्व तेलेस्फोर पी टोप्पो की स्मृति में बीस टीम हिस्सा लिया था.सभी विजेताओ को पूर्व शिक्षा मंत्री बंधु तिर्की और आर्चबिशप विसेंट आइंद ने अपने हाथो से पुरस्कृत किया. इसमें पहला पुरस्कार लाने वाले टीम को 51 हजार,उप विजेता टीम को 31 हजार , तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले टीम को 21 हजार रुपये दिए गए. मौके पर आनंद डेविड खलखो आद शामिल थे.

रांची जिले के सातों विस क्षेत्र का फर्स्ट रेडमाइजेशन किया

संवाददाता ।रांची

विधानसभा चुनाव को लेकर रांची जिला के अंतर्गत तमाड़, सिल्ली, खिजरी, रांची, हटिया, कांके और मांडर विधानसभा क्षेत्रों के ईवीएम और वीवी पैट का फर्स्ट रेंडमाइजेशन किया गया.

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह रांची डीसी वरुण रंजन कि अध्यक्षता में सोमवार को समाहरणालय में आयोजित रेडमाइजेशन में सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि मौजूद थे. इस दौरान डीईओ लेवल पर स्ट्रांग रूम खोला गया. बता दें कि चुनाव आयोग के सॉफ्टवेयर के माध्यम से बीयू-सीयू और वीवीपैट मशीन विधानसभावार भेजा जायेगा. रेडमाइजेशन के दौरान उप निर्वाचन पदाधिकारी विवेक कुमार सुमन, नोडल पदाधिकारी ईवीएम कोषांग-सह-सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा रविशंकर मिश्रा, डीआईओ राजीव कुमार एवं संबंधित एआरओ उपस्थित थे.

पानी से जलने वाले दीये होंगे दीवाली में आकर्षण के केंद्र

बसंत मुंडा ।रांची

धनतेरस के दो दिन बाद दिवाली मनाई जाएगी. दिवाली के लिए कुम्हार रंगबिरंगे दीए बनाने में जुटे हुए है. इसबार अलग अलग वेराईटी के दीए, घर की सजावटी सामग्री, आकर्षक लाइटें बाजार मे उतारी गई है, जो लोगों को काफी आकर्षक कर रही हैं. वही इस बार दिवाली को खास बनाने के लिए दुकानदारों ने पानी से जलने वाली दीए बाजार में उतारे हैं, जो तेज बारिश और हवा में भी नहीं बुझेगा. पुरानी रांची के योगेंद्र प्रजापति और सतीश प्नजापति ने बताया कि इस बार दिवाली में 60-70 हजार दीए बनाये हैं. पिछली बार की तुलना में दस हजार ज्यादा दीए बनाये थे. दिवाली पर्व को देखते हुए कोलकाता, बंगाल से भी मिट्टी से बने जरूरी सामान मंगाये हैं. इसमें घर की दीवारों को सजाने के लिए मिट्टी का मुखौटा,कछुआ, कैंडल स्टैंड, गुलदस्ते भी लाए हैं. इसके साथ ही बंगाल से कलश स्थापना वाले दीए भी मंगाए हैं. इसमे स्टैंड ,थाली में सात दीए, कलश और नारियल से बने हुए दीए भी शामिल हैं.

राजस्थान के लादू बकरिया ने बताया कि धुर्वा रोड मे पिछले 25 साल से धनतेरस और दिवाली में उपयोग होने वाले सजावटी सामान बेच रहे हैं. ये दरवाजे के दोनों ओर सजाए जाते हैं. दरवाजे के ऊपर बंदनवार का उपयोग करते हैं. इसके साथ ही रूम के अंदर के लिए घंटा भी लाए हैं. इसमे छोटी छोटी पांच घंटी और बीच मे लकड़ी से बने

जानें कैसे-कैसे दीये

कलश वाले दीए	250 रुपए
सबसे छोटे दीए	एक रुपए
कलरफुल दीए	35 रुपए पीस
टेरा कोटा दीए	2 रुपए
बड़े दीए	19 रुपए पीस
घरकुंदा	200-250 रुपए
पानी वाले दीए	12 रुपए

गणेश भगवान को प्रदर्शित किया गया है. जो लोगों को अपनी ओर आकर्षिक कर रहा है. इस कारोबार में 12-15 परिवार शामिल हैं. रोड किनारे ही दुकानें लगाते हैं.दर्जनों स्थानों पर चमचामते बंदनवार, झालर, घंटा सड़क किनारे बेचते हैं. डेली मार्केट के एटूजेड के सैयद हसन ने बताया कि धनतेरस और दिवाली मे पानी से जलने वाले दीए दिल्ली, कोलकाता से मंगाए हैं.जो प्रति दीए 12 रुपए में ग्राहक खरीद रहे हैं. एक पैकेट मे छह दीए रहते हैं.इसमे पानी डालने पर ही जलता, जो आंधी पानी में भी नही बुझता है. इससे प्रदूषण भी नही फैलता है.

राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए झारखंड की 42 सदस्यीय टीम घोषित

संवाददाता। रांची

भारतीय एथलेटिक्स संघ नयी दिल्ली व ओडिशा एथलेटिक्स संघ के संयुक्त तत्वावधान में भुनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम में 25 से 29 अक्टूबर तक आयोजित 39वीं राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में भाग लेने वाली 42 सदस्यीय झारखंड टीम की घोषणा की गई. झारखंड एथलेटिक्स संघ के सचिव ने बताया कि एक वर्ष के अंदर राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करने वाले, इसी माह ओडिशा में संपन्न 35वीं पूर्वी क्षेत्र जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप और राम के रजरप्पा में 14 से 15 अक्टूबर तक रामगढ़ में संपन्न 18वीं राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर 42 सदस्यीय झारखंड टीम की घोषणा की गई.

42 सदस्यीय झारखंड टीम

बालक अंडर 14 वर्ष

ट्रायथलन ग्रुप ए.- संतोष मुर्मू – साहिबगंज, ट्रायथलन ग्रुप बी.- **विमल राज** – रामगढ़.

बालिका अंडर 14 वर्ष

ट्रायथलन ग्रुप ए.- खुशबू यादव – **रामगढ़ ट्रायथलन ग्रुप बी** – सपना यादव – रामगढ़ , ट्रायथलन **ग्रुप सी.**- नैना सिंह – रामगढ़.

बालक अंडर 16 वर्ष

लंबीकूद एवम मिडले रिले – विनीत उरांव- गुमला,60 मी.,80 मीटर हर्डल्स,मिडले रिले मो साजिद- बोकारो,60 मी.,80 मीटर हर्डल्स, मिडले रिले- अनित उरांव – गुमला, 600 मी.,मिडले रिले – अभय लोहरा -चतरा, शॉटपुट – **छोटू रजक** -रांची, जेवलिन प्रकाश गंझू – गुमला, लंबी कूद, मिडले रिले- राहुल बोबोंगा- प सिंहभूम.

बालिका अंडर 16 वर्ष

60 मी.,- ममता मेरी मुर्मू- पुर्वी सिंहभूम, 80 मी.हर्डल्स, दशमी कुंडलना-रांची, जेवलिन थ्रो -शिल्पा कुमारी, नेहा कुमारी -रांची, ऊंची कूद – संध्या कुमारी- पलामू.

बालक अंडर 18 वर्ष

ऊंची कूद – हिमांशु कुमार सिंह – पुर्वी सिंहभूम, 200 मी.,400 मी.- साकेत मिंज – रांची,1000 मी.-मो सरवर – गोड्डा, अमित कुमार महतो -रांची,110 मी.

स्थापना दिवस आईएचएम में अंतरराष्ट्रीय शेफ दिवस एवं कहीं गुम ना हो जाए राष्ट्रीय कुकरी प्रतियोगिता का आयोजन

अतिथियों ने उठाया झारखंडी व्यंजनों का लुत्फ, की सराहना

संवाददाता। रांची

होटल प्रबंधन संस्थान (आईएचएम) रांची के स्थापना दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय शेफ दिवस एवं कहीं गुम ना हो जाये - सीजन 7- हमारी विरासत, हमारा व्यंजन विषय पर संस्थान में राष्ट्रीय पाक प्रतियोगिता का आयोजन एनजीओ लेट्स गिव बैक के संग किया गया. कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की पारंपरिक स्वस्थ और अनूठी खोई हुई व्यंजनों जो हमारी समृद्ध संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं, को प्रस्तुत और बढ़ावा देना है ताकि हमारी समृद्ध परंपराओं और संस्कृति को

पुनर्जीवित किया जा सके.

इस कुकरी प्रतियोगिता में झारखंड के विभिन्न शहरों से कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसके मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री मधु मंसूरी हंसमुख, विशिष्ट अतिथि में श्री रजत आनंद, प्लैकबैक सिंगर-इंडियन आइडल फेम 6 एवम डॉ. भूपेश कुमार, प्राचार्य, आईएचएम रांची तथा निर्णायक मंडली में गौरमेट शेफ मीरा सिंह, शेफ राम चंद्र उरांव, कमल अग्रवाल, अध्यक्ष, झारखंड कैटर्स एसोसिएशन, शेफ मकसूद आलम, एग्जीक्यूटिव शेफ, होटल ले लेक सरोवर पोर्टिको, रांची तथा डॉ. मनीषा उरांव, सह संस्थापक, द ओपन फील्ड, सरोज झा, दूरदर्शन रांची उपस्थित रहे.

कूकरी प्रेतयोगिता में प्रतिभागियों द्वारा गोभी की मिठाई, कसार मडुआ हलवा, सनई फूल साग, पुटकल साग, चाकोड़ गोड़ा चावल, कोयेणार फूल चटनी, गुलड़, कोन्गा रोटी, मडुआ पीठा, मडुआ लड्डू, रागी दाल पीठा, नारियल पीठा, पुटकल सरबत, रुगडा आचार, बेंग साग की चटनी, शरक़ंद पीठा जैसे विभिन्न स्थानीय व्यंजनों को पकाकर परोसा गया. इसके बाद निर्णायक मंडली द्वारा प्रदर्शित व्यंजनों की प्रामाणिकता, प्रस्तुति और रचनात्मकता, स्वाद और फ्लेवर एवं ऐतिहासिक महत्व जैसे मापदंड के आधार पर मूल्यांकन किया गया. तत्पश्चात संस्थान के सभागार में पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवम् छात्रों द्वारा प्रस्तुत गणेश वंदना से की गयी. संस्थान के प्राचार्य द्वारा मुख्य अतिथि पद्मश्री मधु मंसूरी हंसमुख को कृतज्ञता पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया.

पद्मश्री हंसमुख ने इस कार्यक्रम कहीं गुम ना हो जाए का उत्कृष्ट एवं अद्वितीय आयोजन हेतु आईएचएम रांची के साथ साथ प्राचार्य डॉ. भूपेश कुमार की सराहना की. साथ हीं झारखंड की कला - संस्कृति एवम् प्रकृति से अपने अटूट प्रेम को नागपुरी गीत गांव छोरब नाहीं के माध्यम से सभी उत्साहित कर दिये. डॉ. भूपेश कुमार, प्राचार्य, आईएचएम ने प्रतियोगिता के विजेताओं को बधाई देते हुए एवं इस कुकरी प्रतियोगिता को सफल बनाने हेतु लेट्स गिव बैक एवं प्रायोजन भागीदार का अभिवादन करते हुए सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई दी. साथ हीं बताया की इस प्रतियोगिता से प्रेरित होकर आईएचएम रांची भवीष्य में मास्टर शेफ के तर्ज पर "ट्राईबल शेफ" प्रतियोगिता का आयोजन करेगा.

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल [illegible] साहू का ग्राम टैसरा थाना गुमला जिला गुमला में अवस्थित भूमि जिसका खाता नं0 45 प्लॉट नं0 371 एवं 372 है रकबा 67 डिसमिल जो मेरे मुवक्किल के पिता सुकुमार साहू [illegible] की खतियानी जमीन है एवं टैसरा के खाता नं0 14 प्लॉट नं0 38, 502, 558, 330 एवं 331 कुल रकबा 3.13 एकड़ एवं खाता नं0 15, प्लॉट नं0 229, 230, 588, 590, 591 एवं 592 कुल रकबा 1.79 एकड़ जो खतियानी जमीन है पर सुकुमार साहू के परिवार का दखल कब्जा है।

सुकुमार साहू वृद्ध हो चुके है तथा उनकी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं उन्हें कुछ भी याद नहीं रहता है जिसका नाजायज फायदा कुछ जमीन दलालों द्वारा उठाए जाने की संभावना है एवं उनसे किसी कागजात पर हस्ताक्षर / अंगूठा लगवाकर उसका गलत फायदा उठाने कि संभावना है। जो हर दृष्टिकोण से नाजायज एवं गैरकानूनी होगा।

अधिवक्ता
[illegible]

कोर्ट नोटिस

न्यायालय,
सिविल जज [illegible] डिविजन -I गुमला
[illegible] वाद संख्या 7/14
[illegible] ..... आवेदकगण
बनाम
[illegible] ..... विपक्षीगण

[illegible]

सिविल जज [illegible] डिविजन - I
गुमला।

ब्रीफ खबरें

इटकी में पुलिस ने 100 लीटर शराब जब्त की

इटकी। प्रखंड के दरहाटाड़ और सियारटोली में पुलिस ने गुप्त सूचना पर छापेमारी कर लगभग 100 लीटर शराब नष्ट कर दी. पुलिस की आने की भनक मिलते ही शराब कारोबारी भाग निकले. इसके बाद पुलिस ने शराब की भट्ठी ध्वस्त कर दी. छापेमारी में थाना प्रभारी अभिषेक कुमार, एएसआई सहित सशस्त्र बल शामिल थे.

सोनाहातू में 65 ली. शराब व 600 किलो जावा महुआ नष्ट

सोनाहातू। थाना क्षेत्र में सोमवार को पुलिस ने 65 लीटर शराब और 600 किलो जावा महुआ नष्ट कर दिया. थाना प्रभारी चंदन कुमार के नेतृत्व में क्षेत्र के नरसिंह लोवाडीह, जाड़ेया और बलुवाडीह गांव में छापेमारी कर शराब की भट्ठी तोड़ी गई. वहीं बलुवाडीह के चंद्रशेखर कुमार के खिलाफ शराब बनाने की प्राथमिकी दर्ज की गई. थाना प्रभारी ने कहा कि विधानसभा चुनाव को लेकर शराब के खिलाफ लगातार छापेमारी जारी रहेगी.

बाइक से गिरकर चालक घायल

मांडर । थाना क्षेत्र के पर यागो गांव के पास सड़क पर बाइक सेगिरकर चालक घायल हो गया. घटना सोमवार शाम की है. मंगरा अपनी बाइक से कहीं जा रहा था. हादसे में उसके सिर पर गंभीर चोट लगी है, ग्रामीणों ने उसे रेफरल अस्पताल मांडर पहुंचाया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उसे रिम्स रेफर कर दिया गया.

बाइक से गिरकर चालक हुआ घायल

इटकी। थाना क्षेत्र के नारो गांव के पास बिडपीटोली निवासी राकेश महली बाइक से गिरकर घायल हो गया. राकेश का रांची के एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है. घटना रविवार देर शाम की है. राकेश बाइक से मांडर से इटकी अपने घर लौट रहा था. उसके सिर में गंभीर चोट आई है. हादसे के बाद वह घंटों सड़क के किनारे खेत में बेहोशी हालत में पड़ा रहा.

बुंडू में अंतर महाविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता शुरू

बुंडू। पांच परगना किसान महाविद्यालय में दो दिनी रांची विश्वविद्यालय अंतर महाविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता (पुरुष) 2024-25 सोमवार को शुरू हुई. प्रथम दिन सभी मैच महाविद्यालय के पुराने भवन में आयोजित किए गए. इस मैच में कुल 11 टीमों द्वारा 21 अक्तूबर को लीग टूर्नामेंट खेला गया. मैच का उद्घाटन प्राचार्य डॉ विनीता कुमारी, जैक सदस्य डॉ राधा रमन साहू, प्रो हंस कुमार प्रो, सुबोधचंद्र शुक्ल, प्रो भूतनाथ हजाम, प्रो रविकांत मेहता ने दीप जलाकर किया. फाइनल मैच का मुकाबला 22 अक्तूबर को खेला जाएगा.

मालगाड़ी की चपेट में आने से युवक की मौत

खलारी। खलारी रेलवे स्टेशन पर सोमवार सुबह मालगाड़ी की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई. मृतक 32 वर्षीय रंजीत सिंह उर्फ मंटू ग्राम गोके थाना नरकोपी, प्रखंड चान्हो का निवासी था. रंजीत सिंह अपने गांव सेमां और बुआ के साथ मामा के घर कट्टारा गोमियां जाने के लिए गोमो बरवाडीह पैसेंजर ट्रेन पकड़ने खलारी स्टेशन आया था. ट्रेन लेट थी, रंजीत टिकट कटाकर दो नंबर प्लेटफार्म के आखिरी छोर की तरफ गया था, जहां अप मेन लाइन थ्रूपर मालगाड़ी की चपेट में आ गया. घटना से अनभिज्ञ रंजीत की मां और बुआ पैसेंजर ट्रेन से गोमियां चली गईं. आरपीएफ एएसआई ने बताया कि रेलवे ट्रैक पर काम कर रहे कर्मियों से घटना की जानकारी मिली.

छात्राओं ने निकाली जागरूकता रैली

राहे। झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय राहे की छात्राओं ने डोमनडीह गांव में डिस्लेक्सिया जागरूकता रैली निकाली. रैली के माध्यम से लोगों को डिस्लेक्सिया की जानकारी देकर सुधार करने की जानकारी दिया गया. स्कूल के वार्डन परमेश्वरी कुमारी ने बताया कि यह एक न्यूरो बायोलॉजिकल विकार है. अडिस्लेक्सिया एक सीखने की अक्षमता है,जिससे पढ़ने और भाषा से जुड़े कामों में दिक्कत होती है. डिस्लेक्सिया बच्चों को स्कूल के साथ मिलकर काम करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपके बच्चे को वह शिक्षा मिले जिसके वे हकदार हैं. प्रशिक्षित शिक्षक के द्वारा बीमारी को दूर किया जा सकता है. रैली में शिक्षक विमला देवी, प्रीतम महतो आदि मौजूद थे.

कांग्रेसी कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भारी भीड़ उमड़ी अजय नाथ शाहदेव के आवास पर, लोगों ने कहा कि हम सब आपके साथ

हटिया की जनता के प्रेम और स्नेह का ऋणी हूं: अजय नाथ शाहदेव

संवाददाता। रांची

कांग्रेस नेता अजय नाथ शाहदेव के आवास पर सोमवार को हटिया विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भारी भीड़ उमड़ी. टिकट को लेकर चल रहे उहापोह के बीच कार्यकताओं और समर्थकों ने एक स्वर से अपने प्रिय नेता के लिए आवाज बुलंद की. लोगों ने खुल कर अजय नाथ शाहदेव के लिए हटिया विधानसभा से टिकट की मांग की. समर्थकों का कहना था कि अजय नाथ शाहदेव पिछले चुनाव में हारने के बाद भी जनता के सुख-दुख में साथ हैं. किसी के दुख तकलीफ़ में वे तुरंत उपस्थित हो जाते हैं. ऐसे नेता को टिकट नहीं देकर किसी और को टिकट देना पार्टी का गलत फैसला होगा. वक्ताओं ने कहा कि अजय नाथ शाहदेव की स्वीकार्यता सभी धर्म और सभी वर्गों में है. गांव से लेकर शहर तक सभी चाहते हैं कि अजय नाथ शाहदेव कांग्रेस से उनके विधायक बने. लोगों ने कहा कि हटिया विधानसभा से अजय नाथ शाहदेव का टिकट काटने के लिए विरोधियों ने षड्यंत्र भी किया. थोड़ा सा भी गलत फैसले से पार्टी यहां पर चूक जाएगी और विरोधी अपने मंसूबे पर कामयाब हो जाएंगे. उपस्थित सभी लोगों ने एक स्वर में कहा कि वे कांग्रेस पार्टी के साथ हैं और अजय नाथ शाहदेव को ही पार्टी यहां से उम्मीदवार बनाएं. सभी ने अजय नाथ शाहदेव का हौसला

कांग्रेस नेता अजय नाथ शाहदेव के आवास पर उनके साथ पार्टी के कार्यकर्ता.

बढ़ाया और कहा कि दिल्ली भी जाना होगा तो जाएंगे और आपके लिए राहुल गांधी से टिकट लेकर आएंगे.

आवास पर अचानक से इतनी संख्या में समर्थकों और कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को देखकर कांग्रेस नेता अजय नाथ शाहदेव भी काफी उत्साहित नजर आएं. अजय शाहदेव ने कहा कि लोगो के प्यार और स्नेह का मैं ऋणी हूं. मेरा सौभाग्य है कि हटिया की जनता मेरे साथ है. मैं कांग्रेस पार्टी का एक सच्चा सिपाही हूं और पार्टी के लिए समर्पित हूं. विरोधियों का मेरे खिलाफ साजिश का जनता ने स्वयं मुंहतोड़ जवाब दिया है. केंद्रीय नेतृत्व पर मुझे पूरा भरोसा है और कांग्रेस पार्टी हटिया को लेकर सही फैसला लेगी ऐसा विश्वास है मुझे. आम जनता के दिलों में मेरे लिए इतना स्नेह है ये मैंने नहीं सोचा था. मैं इमानदारी से दिन रात जनता की सेवा में लगा रहता हूं और आगे भी जब तक मेरा जीवन है मैं जनसेवा में निस्वार्थ भाव से लगा रहूंगा. मैंने क्या कमाया है ये मैंने आज देख लिया. कार्यकर्ता, समर्थक,आम जनता मेरे साथ खड़ी है इससे बड़ी सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है. मेरा एकमात्र लक्ष्य हटिया का विकास है. जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, अच्छे स्कूल, रोजगार की व्यवस्था मेरी प्राथमिकता है जो मैं हर हाल में करूंगा. मैं हटिया के हर चेहरे पर खुशियों की मुस्कान देखना चाहता हूं. कोई गरीब का बच्चा पैसे के अभाव में शिक्षा से वंचित न रहे इसके लिए मैं विशेष योजनाएं लाउंगा. खिलाड़ियों के लिए बेहतर सुविधायुक्त स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स जिससे वे न सिर्फ फिट रहेंगे बल्कि खेल गतिविधियों में राज्य का नाम भी रौशन करेंगे. अजय शाहदेव ने उपस्थित सभी लोगों का आभार जताया और कहा कि ये प्यार और स्नेह हमेशा बनाए रखियेगा.

फहीम के पुराने विरोधी बाबला को मारी गोली

गोली मारने के बाद पिस्टल छोड़कर भाग गए शूटर, पिस्टल बरामद, दो खोखे जब्त

संवाददाता। धनबाद

दशकों पूर्व गैंग्स आफ वासेपुर के सरदार फहीम खान के घोर विरोधियों में शामिल अरशद आलम उर्फ बाबला को सोमवार की देर शाम उनके आवास के निकट गोली मार दी गई. बाइक सवार अपराधियों ने उनके सिर को निशाना बनाया और वहां से भाग निकले. जख्मी हालत में उन्हें तत्काल उठाकर एटलेन के एक अस्पताल में ले जाया गया. जहां उनका इलाज चल रहा है, चिकित्सकों के मुताबिक उनकी हालत काफी गंभीर है. खबर पाकर उनके परिजनों के अलावा आसपास के लोगों की भीड़ अस्पताल पहुंच गई है.

वारदात के बारे में बताया जा रहा है कि करीब आठ बजे वे अपने घर से कुछ दूरी पर स्थित मैक्स लैब के समीप खड़े थे और अपने घर को रवाना हो रहे थे. इसी बीच बाइक पर सवार दो अपराधी आए और उनसे बातचीत करने लगे. बातचीत करते नया बाजार मार्केट के अंदर ले गए. वहां उनपर गोली चला दी.गोली उनके सिर पर लगी और वे गिर पड़े. इसके बाद वे जख्मी को होकर गिर

खास बातें

- नया बाजार में अपराधियों ने सिर को बनाया निशाना
- गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती, हालत नाजुक

गए. शूटरों ने वहीं पिस्टल भी छोड़ दिया और भाग निकले. इधर गोली के लगने के बाद आसपास के लोग उनकी तरफ दौड़े और तत्काल घर वालों को खबर दी गई. घर वाले और मुहल्ले के लोगों ने जख्मी हालत में उठाकर अस्पताल में भर्ती कराया. इधर मामले की खबर पाकर धनबाद

फहीम के साथ हो गया था पैचअप

गैंग्स आफ वासेपुर के साथ बाबला की पुरानी रंजिश को लेकर कहा जा रहा है कि दोनों के बीच की दुश्मनी बहुत पहले ही खत्म हो गई थी. दशकों से दोनों तरफ से कोई विवाद नहीं हुआ था. इधर पारिवारिक लोगों का कहना है कि गोलीबारी के पीछे जमीन संबंधी विवाद कारण हो सकता है. क्योंकि वे पिछले काफी दिनों से जमीन का काम कर रहे थे. लेकिन जमीन कारोबार को लेकर नहीं बल्कि जिस जगह पर मकान बनाकर रह रहे हैं, उक्त जमीन को लेकर भी विवाद की बातें सामने आ रही है. फिलहाल तक इस मामले को लेकर परिजनों द्वारा लिखित शिकायत नहीं की गई है. बता दें कि धनबाद रांगाटांड़ में उसकी एजेंटी भी चलती है.

डीएसपी विधि व्यवस्था नौशाद आलम समेत कई थानों की पुलिस नया बाजार पहुंची और तहकीकात में जुट गई. मौका-ए-वारदात से पुलिस ने पिस्टल बरामद किया और मौके से दो खोखे बरामद किए गए हैं.

बीसीसीएल कोलियरी में सेंधमारी, चोरी का प्रयास

कतरास। रविवार की देर रात अज्ञात अपराधियों ने बीसीसीएल के एरिया तीन के ब्लॉक फोर कोलियरी के साउथ गोविंदपुर स्थित एक कमरे में सेंधमारी कर लाखों रुपये के स्क्रैप की चोरी का प्रयास किया। हालांकि, अपराधी स्क्रैप को वहां से हटा नहीं पाए। इस संबंध में, ब्लॉक 4 कोलियरी के परियोजना पदाधिकारी एसके शरण ने बताया कि घटना घटित हुई है, लेकिन स्क्रैप की चोरी नहीं हुई है। उन्होंने आगे बताया कि घटना को लेकर सोनाडीह ओपी में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई जाएगी।

लखनपुर रेल फाटक आज 4 घंटे के लिए बंद

महुदा । दक्षिण पूर्व रेलवे के महुदा अनुभाग के तालगड़िया महुदा रेल खंड पर स्थित लखनपुर रेल फाटक मंगलवार को सुबह 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक सड़क यातायात के लिए बंद रहेगा। दक्षिण पूर्व रेलवे महुदा के वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (रेल पथ) ने इस संबंध में महुदा थाना और पदुगोड़ा पंचायत के मुखिया को पत्र जारी कर इसकी सूचना दी है। पत्र में बताया गया है कि लेवल क्रॉसिंग संख्या बीजी 19 लखनपुर का अति आवश्यक रखरखाव कार्य मंगलवार को होगा, जिसके कारण यह 4 घंटे के लिए बंद रहेगा। उन्होंने लोगों से अपील की है कि इस मार्ग से आने-जाने वाले लोग फाटक अवरोध रहने के समय वैकल्पिक मार्ग का प्रयोग करें।

न्यूज अपडेट

झारखंड से दी गई थी अभिनेता सलमान खान को धमकी

रांची। अभिनेता सलमान खान को झारखंड से धमकी दी गई. गौरतलब है कि बाबा सिद्दीकी की हत्या के बाद मुंबई ट्रैफिक पुलिस के व्हाट्सएप नंबर पर एक धमकी भरा मैसेज आया है, जिसमें अभिनेता सलमान खान से पांच करोड़ रुपये की मांग की गई है. भेजने वाले ने दावा किया, "इसे हल्के में न लें, अगर सलमान खान जिंदा रहना चाहते हैं और लॉरेंस बिश्नोई से दुश्मनी खत्म करना चाहते हैं तो उन्हें 5 करोड़ रुपये देने होंगे. अगर पैसे नहीं दिए गए तो सलमान खान की हालत बाबा सिद्दीकी से भी खराब होगी. इस मामले में जांच शुरू कर दी गई. जांच शुरू होने के बाद मुंबई ट्रैफिक पुलिस को कुछ दिन बाद उसी व्हाट्सएप नंबर से एक और मैसेज मिला जिसमें धमकी देने वाले ने माफी मांगी, मैसेज भेजने वाले ने कहा कि यह मैसेज गलती से भेजा गया था और उसने इसके लिए माफी मांगी. मुंबई पुलिस को मैसेज भेजने वाले की लोकेशन झारखंड में मिली है. आगे की जांच जारी है.खबर है,कि मुंबई पुलिस की एक टीम झारखंड आकर मामले की जांच करेगी.

चोरी के सामान के साथ तीन अरोपी गिरफ्तार

नामकुम। पुलिस ने चोरी का सामान बाजार में बेचने ले जा रहे दो नाबालिग सहित एक युवक को गिरफ्तार कर लिया. पकड़े गए दोनों नाबालिगों को सोमवार को बाल संप्रेक्षण गृह भेज दिया गया और एक आरोपी को जेल भेज दिया गया. बताया जाता है कि दोनों नाबालिग पहले बंद मकानों की रेकी करते हैं और उसके बाद चोरी की घटना को अंजाम देते हैं. पकड़ा गया एक आरोपी अमन कुमार साहू कमरू तालाब चुटिया का निवासी है. तीनों ने मिलकर चुटिया के विंध्यवासिनी नगर के बंद पड़े एक मकान में मोटर, पंखा, तार और छड़ चुराई थी तथा उसे बेचने कांटाटोली जा रहे थे. पुलिस ने आरोपियों के पास से दो मोबाइल जब्त किया है. पकड़े गए आरोपियों ने कई घरों में चोरी की बात स्वीकार की. थानेदार ब्रह्मदेव प्रसाद ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि तीन आरोपी चोरी के सामान को टोटो पर लादकर उसे बेचने कांटाटोली की ओर ले जा रहेथे. इसके बाद एसआई मो मोबिन को बाइक से मौलाना आजाद कॉलोनी के पास भेजा, जहां गश्ती दल के एसआई चंद्रदीप प्रसाद और एएसआई तारकेश्वर केशरी के साथ वाहन चेकिंग अभियान चलाया. उसी दौरान एक टोटो पर सवार तीन युवक मौके पर पहुंचे और पुलिस देखकर भागने लगे, गश्ती दल ने उन्हें दबोच लिया.

दीपा चौरसिया ने रामकुमार पाहन को बधाई दी

ओरमांझी। खिजरी विधानसभा से भाजपा ने एक बार फिर रामकुमार पाहन पर भरोसा जताया है. उन्हें प्रत्याशी बनाए जाने पर क्षेत्र के लोगों में उत्साह का माहौल है. उनके आवास पर बधाई देने वालों की लंबी कतार लगी हुई है. भाजपा कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया है कि खिजरी विधानसभा में कमल निश्चित रूप से खिलाएंगे. रामकुमार पाहन जो इस क्षेत्र के बेटे हैं, 2014 में खिजरी विधानसभा से जीत दर्ज कर विधानसभा पहुंचे थे. बधाई देने वालों में भाजपा नेत्री सह समाजसेविका दीपा चौरसिया एवं अन्य प्रमुख नेताओं के नाम शामिल हैं. वहीं दीपा चौरसिया ने कहा कि भाजपा का यह कदम पार्टी के प्रति स्थानीय जनता के विश्वास को और मजबूत करेगा. उन्होंने बधाई देते हुए कहा कि खिजरी विधानसभा क्षेत्र से भाजपा की जीत सुनिश्चित करेंगे.

राष्ट्रीय कुकरी प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

रांची। ब्राम्बे में आईएचएम कॉलेज के सभागार में लेट्स गिव बेक ,बेक टू रूट के तत्वावधान में राष्ट्रीय कुकरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया है. प्रतियोगिता में भारत के विभिन्न राज्यों से महिलाएं उन राज्यों की लुप्त रेसिपीज को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाने का प्रयास की. प्रतियोगिता में यूपी ,एमपी राजस्थान पंजाब, उत्तराखंड, झारखंड, महाराष्ट्र, ओडिशा, असम ,दिल्ली एनसीआर , प बंगाल और जम्मू कश्मीर से प्रतिभागी शामिल हुए.प्रतियोगक्रिता के ज्यूरी सदस्य,शेफ मीरा सिंह, डॉ मनीषा उरांव, झारखंड कैटरर्स एसोसिएशन प्रेजिडेंट कमल अग्रवाल, शेफ राम चंद्र उरांव व शेफ मकसूद आलम. मुख्य अतिथि पद्मश्री मधु मंसूरी हंसमुख गेस्ट आफ आनर है.

सीओ ने चुनाव की तैयारियों की समीक्षा की

इटकी। विधान सभा चुनाव 2024 की तैयारी को लेकर प्रखंड मुख्यालय में सोमवार को अंचल अधिकारी मो अनीस की अध्यक्षता में समीक्षात्मक बैठक की गई. बैठक में चुनाव की तैयारियों का जायजा लिया गया. मौके पर बीएलओ के द्वारा प्रखंड के सभी मतदान केंद्रों की वस्तु स्थिति से अवगत कराया गया. तथा मतदान केंद्रों में उपलब्ध संसाधनों व सुविधाओं की समीक्षा की गई. मौके पर अंचल अधिकारी ने सभी बीएलओ सुपरवाइजर सहित पंचायत सचिवों को बुथ केंद्रों में उपलब्ध बिजली, पानी व शौचालय सहित अन्य संसाधनों का भौतिक निरीक्षण व सत्यापन कर गड़बड़ियों को दूर करने का निर्देश दिया. साथ ही 85 प्लस बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं को चिन्हित कर सूची तैयार करने की बात कही.

मांडर में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन

मांडर। कंदरी स्थित भारथी कॉलेज ऑफ एजुकेशन मेंसोमवार से चार दिनी फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के आयोजन की शुरुआत की गई. इस प्रोग्राम में मुख्य अतिथि महाविद्यालय के सचिव नितिन पराशर और विशिष्ट अतिथि शैक्षणिक सचिव सह प्राचार्या दीपाली पराशर, गोस्सनर महाविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ प्रदीप कुमार गुप्ता और संत जेवियर कॉलेज के असिस्टेंट प्रो पंकज कुमार मौजूद थे. शैक्षणिक सचिव सह प्राचार्या दीपाली ने कहा कि युवाओं को सही दिशा देने की जरूरत है. डॉ प्रदीप कुमार गुप्ता ने कहा कि एआई हमारे सीखने के तरीकों को बदलने की क्षमता रखता है जिससे सीखना जीवंत हो जाता है. पंकज कुमार ने कहा कि शिक्षा में एआई शिक्षकों को छात्रों के ज्ञान में अंतर की पहचान करने और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए मदद करता है.

सेम्बो में पुलिस स्मृति दिवस समारोह मनाया गया

पिस्कानगड़ी। प्रखंड के सेम्बो स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र में पुलिस स्मृति दिवस के मौके पर समारोह का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि केरिपुबल झारखंड सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक साकेत कुमार सिंह मौजूद थे. पुलिस स्मृति दिवस पर केन्द्र में स्थित शहीद स्मारक स्थल पर शहीदों की स्मृति में पूरे सम्मान के साथ अधिकारियों और कार्मिकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की. शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए मुख्य अतिथि साकेत कुमार सिंह ने 21 अक्तूबर 1959 को 21 जवानों के गश्ती दल ने ''हॉट-स्प्रिंग'' लद्दाख में चीनी सेना के बड़े दस्ते के आक्रमण को विफल कर मातृभूमि की रक्षा करते हुए 10 जवानों नेअपने प्राणों की आहुति दी थी. मौके पर डीएन लाल, पुलिस उप महानिरीक्षक समूह केन्द्र रांची के मार्गदर्शन में समूह केन्द्र परिसर मेंयह कार्यक्रम मनाया गया. मौके पर उप महानिरीक्षक, सतीश लिंडा, उप महानिरीक्षक, पी कुजूर, उप महानिरीक्षक, लॉरेंस बॉण्डो, उप महानिरीक्षक (चिकित्सा) और अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा जवान मौजूद थे.

---

23 -27 अक्टूबर को मोराबादी में जेसोवा दिवाली मेला लगेगा

आयोजन की जानकारी देते जेसोवा की सदस्य.

संवाददाता । रांची

23 से 27 अक्टूबर तक जेसोवा दिवाली मेला का आयोजन किया जा रहा है. इसी कड़ी में सोमवार को आइएएस क्लब में जेसोवा की प्रेसिडेंट ख्यांगते ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी. ख्यांगते ने बताया कि झारखंड आईएएस ऑफिसर वाइव्स एसोसिएशन के तत्वावधान में आगामी 23 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक दिवाली मेला का आयोजन किया जा रहा है. यह मेला मोरहाबादी मैदान में लगेगा. सुबह 11 से रात्रि 10 बजे तक चलेगा. इस मेले को लगाने का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के कलाकारों को एक मंच देना है, जहां वह अपने उत्पादों को प्रदर्शन कर सकें. दिवाली मेला हर साल एसोसिएशन की ओर से लगाया जाता है. **मेले के माध्यम से समाज सेवा :** पांच दिनों तक चलने वाले इस मेले में देशभर से स्टाल आ रहे हैं. मैसूर, जयपुर, कश्मीर, नागपुर, सिलीगुड़ी, भागलपुर जैसे कई शहरों के हैंडलूम वर्क के स्टाल लगाए जाएंगे और बड़ी संख्या में बुनकर भी भाग लेंगे और अपने हुनर से सबको परिचित कराएंगे. मेले में नाबार्ड और झारक्राफ्ट के भी स्टॉल लगाए जाएंगे. दिवाली मेले में फूड कोर्ट भी बनाया जा रहा है जिसमें तरह तरह के करीब 100 व्यंजनों का भी लोग लुत्फ उठा सकेंगे. रात्रि में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे. सांस्कृतिक कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण गिरजा देवी की शिष्या इंडियन कल्चर प्रोग्राम की प्रस्तुति देंगी. साथ ही झारखंड के पाइका, छऊ नृत्य एवं नागपुरी संगीत से जुड़े कलाकार भी प्रस्तुति देंगे.प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुख्य रूप से झारखंड आईएएस ऑफिसर वाइव्स एसोसिएशन की सचिव गायत्री सिंह, संयुक्त सचिव दिव्या श्रीनिवासन, कोषाध्यक्ष यामिनी, दीप्ति जयराज, निक्की टोप्पो, जे रविकुमार, जेसिना सिद्दीकी, अपर्णा शर्मा, सहित कई सदस्य उपस्थित थे.

तमाड़ में छह प्रत्याशियों ने नामांकन पर्चा खरीदा

बुंडू। बुंडू अनुमंडल कार्यालय में 58 तमाड़ विधानसभा अनुसूचित जनजाति सुरक्षित सीट से निर्वाचन कार्यालय से नामांकन के तीसरे दिन छह प्रत्याशियों ने नामांकन पर्चा खरीदा. नामांकन पर्चा खरीदने वालों में पूर्व मंत्री स्व रमेश सिंह मुंडा के बड़े पुत्र और वर्तमान विधायक विकास कुमार मुंडा के बड़े भाई राजकुमार मुंडा ने झारखंड पार्टी की ओर से नामांकन पर्चा खरीदा है. यह उनका दूसरा नामांकन पर्चा है .आजसू के वरिष्ठ नेता परमेश्वरी सांडिल्य,सिंगराय टुटी, गुंजल ईकीर मुंडा एवं झामुमो के रविन्द्र नाथ मुंडा ने पार्टी से बगावत कर निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन प्रपत्र खरीदा अब तक कुल 13 प्रत्याशियों ने नामांकन प्रपत्र खरीदा है. लेकिन अभी तक एक भी प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया है. निर्वाची पदाधिकारी सह एसडीओ किस्टो कुमार बेसरा ने बताया कि आदर्श आचार संहिता सभी राजनीतिक दलों का अनुपालन करना है. सोमवार से नामांकन दाखिल करने बालों भीड़ होने की संभावना जताई जा रही थी. जिसको लेकर अनुमंडल कार्यालय घेराबंदी कर दिया गया है और बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किए गए हैं.

लापुंग सीएचसी प्रांगण व 14 हेल्थ सब सेंटर में स्वास्थ्य मेला लगा

स्वास्थ्य मेले के दौरान लाभुकों को पुरस्कृत करती डॉ नमिता .

संवाददाता। लापुंग

स्वास्थ्य विभाग की ओर से लापुंग सामुदायिक स्वास्थ केंद्र के प्रांगण में सोमवार को आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया. इस शिविर के दौरान प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ नमिता आशावंती लकड़ा की देखरेख में कुल 114 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया. इसमें छह डेंटल एवं 60 अलग-अलग तरह के लैब टेस्ट समेत परिवार कल्याण दिवस पर गर्भवती महिलाओं की जांच भी की गई. इस मौके पर सभी मरीजों को निःशुल्क दवा का वितरण किया गया. यहां लगने वाले जांच शिविर के बाद अब यहां के गरीब आदिवासी पिछड़ों एवं दलित पुरुष महिलाओं को इलाज के लिए शहर नहीं जाना पड़ेगा. सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लापुंग में डेंटल चिकित्सक डॉ शिखा कुमारी, नेत्र चिकित्सक डॉ माधवी कुमारी, ओपीडी में डॉ दिलीप उरांव, प्रभारी डॉ नमिता आशावंती लकड़ा ने जांच किया. इस आयुष्मान आरोग्य शिविर के दौरान सामुदायिक स्वास्थ केंद्र के स्वास्थ्य कर्मी दीपक कुमार, कविता बेदिया, सूरज कुमार साहु, श्रवण सिंह, राजेश मांझी, लाल प्रवीण सिंह, नीलम आइंद, प्रवीण कुमार, प्रद्युम्न सिंह, जगन्नाथ बडाईक, भीम साहु, पवन लकड़ा, राजेश कुमार, सावना उरांव, बलभद्र साय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. स्वास्थ्य मेला को सफल बनाने में सीएचओ रीमा खलखो, सोनी मेरी एक्का, सिनी मिंज, सिमसन केरकेट्टा एएनएम सीता कुमारी, एएनएम उषा बाला जयंती कुजूर, यशोदा कुमारी, सावित्री तिर्की सहित दर्जनों स्वास्थ्यकर्मियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

आयोजन | दोलैचा में आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेले में उमड़ी भीड़

लोक कलाकार पवन रॉय ने लोगों को खूब झुमाया

संवाददाता। लापुंग

दोलैचा दुर्गा पूजा आयोजन समिति के तत्वावधान में दुर्गा पूजा को लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम सह मेला का भव्य आयोजन किया गया. सरगम म्यूजिकल ग्रुप के द्वारा आयोजित नागपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी. सोमवार को सुबह में शुरू हुई सांस्कृतिक कार्यक्रम देर शाम तक जारी था. प्रसिद्ध लोक कलाकार पवन कुमार रॉय ने आधुनिक नागपुरी की गीतों से लोगों को खूब झुमाया. वहीं नागपुरी में लोक गीतों एवं नृत्य नाटिका से ओडिशा की लोक कलाकार उर्मिला महंतों की

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती लोक कलाकारों की टीम.

टीम में शामिल खुशी मोहंतो एवं वर्षा मोहंतो सहित अन्य लोक कलाकारों ने आकर्षक प्रस्तुति से लोगों को बांधे रखा. वहीं ओड़िशा के प्रसिद्ध लोक कलाकार हुलास महतो, फूलमणी देवी, सुहाना देवी, कयूम अब्बास तथा काजल कुमारी ने भी एक से बढ़कर एक गीत एवं नृत्य प्रस्तुत कर लोगों को खूब झुमाया.

मंच का संचालन प्रभात साहु और सरोज राम धुसिया ने किया. इसके पूर्व बतौर मुख्य अतिथि मुखिया मालती रानी केरकेट्टा ने आयोजन समिति के पदाधिकारी के साथ मिलकर सांस्कृतिक कार्यक्रम का फीता काट कर उद्घाटन किया. वहीं दूसरी ओर दोलैचा में आयोजित मेला के दौरान हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी. मेला में लोगों ने खासकर महिलाओं और बच्चों ने खूब आनंद उठाया. खिलौने, मिठाईयों, ईख सहित विभिन्न प्रकार के सामानों की लोगों ने खूब खरीददारी की. कार्यक्रम को सफल बनाने में दुर्गा पूजा आयोजन समिति के अध्यक्ष कंचन कुमार साहु उर्फ बबलू साहु, कोषाध्यक्ष नीलकमल साहु, सचिव राम गोविंद साहु एवं कार्यकारिणी सदस्य श्याम किशोर भगत,जयकांत भगत उर्फ मंटु कुमार भगत, श्रीकांत भगत उर्फ अन्नु भगत, अमित भगत, रोहित साहु, ब्रजेश भगत, कमलेश गोप, नारायण साहु, विभाष साहु, राजेश साहु, राम गोविंद साहु, रितेश जयसवाल, रामकृष्ण साहु, अजय साहु , पवन सिंह सहित दर्जनों पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष मेहनत से जीवन बेहतर होगा. जीवन सुखमय व्यतीत होगा. प्रसन्नता व उत्साह से ओत-प्रोत रहेंगे. पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा. चोट-रोग व चोरी-विवाद से बचें. यात्रा लंबी तथा मनोरंजक रह सकती है. अप्रत्याशित लाभ के योग हैं.

वृष धन मिलेगा पर लेन-देन में जल्दबाजी व लापरवाही न करें. भावनाओं को वश में रखें. मन की बात किसी को न बतलाएं. प्रतिष्ठा में कमी हो सकती है. जल्दबाजी से चोट लग सकती है. कुसंगति से बचें. कोई अप्रत्याशित खर्च सामने आएगा.

मिथुन मानसिक और शारीरिक सुख प्राप्त होगा. व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा. नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं. घर-बाहर पूछ-परख रहेगी. प्रमाद न करें. बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे. यात्रा मनोरंजक रहेगी. दिन का इंजॉय करें

कर्क घर में अतिथियों का आगमन होगा. व्यय बढ़ेगा. आत्मविश्वास में वृद्धि होगी. कोई बड़ा काम करने तथा यात्रा पर जाने का मन बनेगा. आय बनी रहेगी. प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी. भेंट व उपहार देना पड़ सकते हैं.

सिंह आय के लिए आप प्रयासरत है. इसका लाभ मिलेगा. पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. धन प्राप्ति सुगम होगी. कारोबारी कामकाज चलते रहेंगे. घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी. सुख के साधन जुटेंगे. यात्रा मनोरंजक रहेगी. मित्रों का साथ मिलेगा.

कन्या समय शुभ है पर पुराने रोग को नजरअंदाज न करें. व्यय होगा. कीमती वस्तुएं संभालकर रखें. व्यापार-व्यवसाय की गति धीमी रहेगी. शत्रु पीठ पीछे षड्यंत्र रच सकते हैं. प्रियजनों के साथ रिश्तों में खटास आ सकती है. अन्न दान करें.

तुला भाग्य का सहारा मिलेगा. सृजनशीलता का विकास होगा. धन प्राप्ति सुगम होगी. व्यापार-व्यवसाय सुखद रहेगा. जल्दबाजी न करें. शारीरिक कष्ट संभव है. चिंता तथा तनाव रहेंगे. संतान संबंधी बुरी सूचना प्राप्त हो सकती है. मिठाई का दान करें.

वृश्चिक पार्टनर तथा मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा. रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे. आपके कार्य और प्रभाव से नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं. किसी भी व्यक्ति के उकसाने में न आएं. अजनबी से बातचीत में संयम रखें.

धनु जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा. व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा. शत्रुभय रहेगा. नौकरी में मातहतों का सहयोग मिलेगा. परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य संबंधी चिंता रहेगी. मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा.

मकर लाभ के अवसर हाथ आएंगे. जीवनसाथी की चिंता रहेगी. घर में सुख-शांति बनी रहेगी. घर-बाहर पूछ-परख रहेगी. विवेक से कार्य करें, लाभ होगा. किसी धार्मिक स्थल के दर्शन का कार्यक्रम बन सकता है. मित्रों से भेंट होगी.

कुंभ नौकरी में जवाबदारी बढ़ सकती है. थकान व कमजोरी रह सकती है. विरोधी सक्रिय रहेंगे. ऐश्वर्यादि पर खर्च होगा. यश बढ़ेगा. लाभ के अवसर हाथ आएंगे. नए काम मिल सकते हैं. आर्थिक वृद्धि के लिए योजना बनेगी.

मीन दूसरों के मामलों में हाथ न डालें. लेन-देन में जल्दबाजी न करें. किसी व्यक्ति के व्यवहार से क्लेश होगा. आय होगी. जोखिम न उठाएं. वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें. अनहोनी की आशंका निर्मूल नहीं हो सकती है.

प्रत्याशी बनाये जाने के बाद पहली बार खूंटी पहुंचे नीलकंठ सिंह मुंडा

भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया जोरदार स्वागत

संवाददाता। खूंटी

खूंटी पहुंचने पर नीलकंठ सिंह मुंडा का स्वागत करते भाजपा कार्यकर्ता.

जनजातियों के लिए सुरक्षित खूंटी विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी बनाये जाने के बाद विधायक और राज्य के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री सोमवार को खूंटी पहुंचे. रांची से खूंटी आने के क्रम में भाजपा कार्यकर्ताओं ने जगह-जगह पारंपरिक ढंग से विधायक का स्वागत किया. भाजपा प्रत्याशी का स्वागत करते हुए पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक विशाल मोटरसाइकिल जुलूस से उनकी आगवानी करते नीलकंठ सिंह मुंडा को खूंटी लाये. इसके पूर्व डुंगरा मोड़, कालामाटी, हुटार, भाजपा कार्यालय, पिपराटोली, मेन रोड सहित कई जगहों पर सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया. समर्थकों ने उन्हें फूलमालाओं से लाद दिया और जयकारे लगाए. खूंटी पहुंचने पर उन्होंने मिश्राटोली स्थित माता दुर्गा मंदिर में माथा टेका. बाद में उन्होंने नेताजी चौक में सुभाष चंद बोस और नीचे चौक में भगत सिंह की प्रतिमा और कचहरी पार्क स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर तीनों महापुरुषों को नमन किया.

मौके पर विधायक नीलकंठ सिह मुंडा ने कहा कि भाजपा नेतृत्व ने उन पर छठी बार उन पर भरोसा जताया और खूंटी सीट से उन्हें फिर से उम्मीदवार बनाया. इसके लिए भाजपा के केंद्रीय और प्रदेश नेतृत्व के आभारी हैं. उन्होंने कहा कि क्षेत्र की जनता ने उन्हें जो स्नेह दिया है, इसके लिए वे सभी मतदाताओं का कृतज्ञ हैं. नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि क्षेत्र के मतदाताओं के आशीर्वाद और स्नेह के कारण वे पिछले पांच चुनावों से लगातार विधानसभा में खूंटी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते आ रहे हैं.

उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि इस बार भी जनता का आशीर्वाद उन्हें मिलेगा और वे छठी बार विधायक बनकर खूंटी विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेंगे. मौके पर चुनाव में विधानसभा क्षेत्र के प्रभारी ओम सिंह, विधायक प्रतिनिधि काशीनाथ महतो, पूर्व जिलाध्यक्ष ओम प्रकाश कश्ययप, जिलाध्यक्ष सीएस गुप्ता, भाजपा के जिला उपाध्यक्ष संजय ,निखिल कंडुलना, रौशनलाल गौझू,, युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष रोहित साहू सहित काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक मौजूद थे.

चुनाव में होने वाला था नकली शराब का इस्तेमाल, पुलिस ने किया जब्त, दो गिरफ्तार

बंगाल-झारखंड के बॉर्डर पर पकड़ा गया एक टेंपो बियर

संवाददाता। रामगढ़

चुनाव के दौरान शराब और पैसे का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर होता है. इसी मंसा से शराब के तस्कर भी पुलिस को चकमा देकर बाजार में नकली शराब बेचने का जुगाड़ लगाते हैं. रामगढ़ पुलिस ने ऐसे तस्करों के मंसूबे को विफल कर दिया है. झारखंड और बंगाल के बॉर्डर पर बनाए गए चेक-नाके पर एक टेंपो बियर पुलिस ने जब्त किया है. इसके अलावा गोला थाना क्षेत्र में परचून की दुकान की आड़ में नकली शराब बेचने वाले एक तस्कर को भी गिरफ्तार किया है. इस मामले की जानकारी सोमवार की शाम प्रेस कांफ्रेंस के दौरान रामगढ़ एसपी अजय कुमार ने दी. उन्होंने बताया कि इन दोनों छापेमारी में लगभग 8 लाख रुपये के शराब को जब्त किया गया है. साथ ही दो तस्करों को गिरफ्तार किया गया है. इनमें रजरप्पा थाना क्षेत्र के जवाहर रोड चितरपुर निवासी ओम पोद्दार और गोला थाना क्षेत्र निवासी शिवा बेदिया शामिल हैं.

परचून की दुकान में बिक रही थी नकली शराब की बोतल: एसपी अजय कुमार ने बताया कि गोला थाना क्षेत्र में घाघरा टोला तोपासारा में परचून की दुकान में नकली शराब बेची जा रही थी. सूचना मिलने के बाद पुलिस ने जब वहां छापेमारी की तो नकली शराब विक्रेता शिवा बेदिया को गिरफ्तार किया गया. वह अपने घर में ही भारी मात्रा में नकली शराब रखकर उसकी बिक्री करता था. जांच के दौरान यह पाया गया कि शिवा बेदिया घर के आगे परचून की दुकान चलाता था और उसके पीछे नकली शराब का गोदाम बनाकर रखा था. तलाशी के दौरान उसके घर से नकली शराब की 536 बोतल बरामद की गई. जिसमें रॉयल स्टैग प्रीमियम व्हिस्की, स्टर्लिंग रिजर्व बी-7, मैकडॉवेल नंबर 1 लग्जरी शराब शामिल है.

बरलंगा चेकपोस्ट पर बंगाल से लाया जा रहा था बियर

एसपी अजय कुमार ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि नशे के कारोबारी बंगाल राज्य से अवैध शराब का परिवहन कर रामगढ़ जिला में प्रवेश करने वाले हैं. इस सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए बरलंगा थाना प्रभारी अनंत कुमार सिंह और उत्पाद विभाग के सब इंस्पेक्टर कांग्रेस कुमार के नेतृत्व में संयुक्त छापेमारी की गई. इस दौरान डाकागढ़ा स्थित अंतरराज्यीय चेकनाका पर एक टेंपो जेएच 24 ई 0652 को पुलिस ने पकड़ा. उसे टेंपो पर 96 पीस हाइबर्ड 5000 कंपनी का कैन बियर था. गिरफ्तार टेंपो चालक ओम पोद्दार, जवाहर रोड, चितरपुर का रहने वाला है. एसपी ने बताया कि बंगाल में शराब पर एक्साइज ड्यूटी काम है. इसी वजह से वहां से अवैध रूप से शराब रामगढ़ में लाया जा रहा था. जिसका प्रयोग चुनाव के दौरान हो सकता था.

झारखंड-बिहार सीमा अवैध विदेशी शराब लदा वाहन जब्त

14 पेटी में 366 अंग्रेजी शराब की बोतल पाई गई, कीमत डेढ़ लाख रुपये

चौपारण। झारखंड विधानसभा चुनाव के लेकर चौपारण थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश अवैध कार्य करने वाले तस्करों पर पैनी निगाह एवं सतर्कता के साथ कार्रवाई कर रहे हैं. इसी क्रम में झारखंड-बिहार सीमा अंतर्गत चोरदाहा चेकपोस्ट के पास से अवैध अंग्रेजी शराब शराब लदा वाहन पुलिस ने जब्त किया है. इस संबंध में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने बताया कि आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चोरदाहा चेकपोस्ट पर चौपारण की तरफ से आने वाले सभी वाहनों की जांच की जा रही थी. इसी बीच मध्य रात्रि एक महिंद्रा कंपनी का जैलो वाहन चेकपोस्ट से कुछ दूरी पर रोका गया. गाड़ी से उतरकर कुछ लोग इधर-उधर भागने लगे. संदेह होने पर उक्त गाड़ी के पास जाकर पुलिस बल के सहयोग से गाड़ी की जांच की गई तो गाड़ी के अंदर अंग्रेजी शराब लदी हुई गई. पूरी गाड़ी की तलाशी के दौरान अंदर से सात पेटी 375 एमएल रॉयल स्टैग, सात पेटी 375 एमएल इंपीरियल ब्लू कंपनी की सहित कुल 14 पेटी में 366 अंग्रेजी शराब की बोतल पाई गई. इसकी अनुमानित कीमत एक लाख पचास हजार रुपये है. इस संबंध में उत्पाद अधिनियम में मामला दर्ज कर संलिप्त अभियुक्तों के विरुद्ध छापामारी की जा रही है. चेकिंग अभियान में सहायक अभियंता बरही (दण्डाधिकारी) पप्पू कुमार, थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश, सअनि मनोज कुमार सिंह, अशोक राम, गुड्डू कुमार, चौपारण थाना एवं चोरदाहा चेक पोस्ट के सशस्त्र बल शामिल थे.

24वीं झारखंड राज्य टेबल टेनिस प्रतियोगिता संपन्न

21 मेडल के साथ पूर्वी सिंहभूम बना ओवरऑल चैंपियन

- पुरुष वर्ग में रांची के शत्रुंजय और महिला वर्ग में पूर्वी सिंहभूम की सानिया बनर्जी बनी स्टेट चैंपियन

संवाददाता। गढ़वा

बंधन मैरिज हॉल में खेले जा रहे 24 वीं झारखंड राज्य टेबल टेनिस प्रतियोगिता में पूर्वी सिंहभूम ने सात गोल्ड छह सिल्वर और आठ ब्रांज सहित कुल 21 मेडल प्राप्त कर ओवरऑल चैंपियन बना. वहीं, रांची जिला की टीम ने आठ गोल्ड, पांच सिल्वर और छह ब्रांज सहित 19 मेडल प्राप्त किया जबकि गढ़वा ने तीन गोल्ड , छह सिल्वर और दस ब्रांज सहित 19 मेडल प्राप्त किया. धनबाद की टीम ने एक सिल्वर और तीन ब्रांज सहित कुल चार मेडल ,हजारीबाग ने पांच ब्रांज और बोकारो की टीम ने एक ब्राउंज मेडल प्राप्त किया. समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित गढ़वा जिला टेबल टेनिस के संरक्षक अलखनाथ पांडेय ने कहा कि झारखंड राज्य टेबल टेनिस को और बेहतर करने की जरूरत है और इसके लिए गढ़वा जिला झारखंड राज्य टेबल टेनिस संघ के साथ मिलकर पूरा करने के लिए तैयार है. झारखंड के खिलाड़ी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी मेडल प्राप्त करें और वहां से ओलंपिक में जाने का रास्ता तय करें, यह हम सबका लक्ष्य होना चाहिए.

झारखंड राज्य टेबल टेनिस संघ के सचिव समरजीत सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बेहतर करने के लिए अपना अभ्यास जारी रखे तभी आप और बेहतर कर सकते हैं. पुरुष वर्ग के फाइनल में रांची के शत्रुंजय ने रांची के ही सोमनाथ चक्रवर्ती को चार -एक से व महिला वर्ग में पूर्वी सिंहभूम की सानिया बनर्जी ने गढ़वा की अंजलि को हराकर खिताब पर कब्जा जमाया. पुरस्कार का वितरण झारखंड राज्य टेबल टेनिस संघ के सचिव समरजीत सिंह उपाध्यक्ष सैबल गुप्ता, गढ़वा जिला टेबल टेनिस संघ के संरक्षक अलखनाथ पांडेय, अध्यक्ष मदन प्रसाद केशरी सचिव आनंद सिन्हा, सह सचिव प्रिंस सोनी, उपाध्यक्ष सुशील केसरी अमित कुमार सिंह, अशोक विश्वकर्मा महेंद्र विश्वकर्मा, संजय सोनी सिस्टर रौशमा, चंद्रभूषण सिन्हा, नंद कुमार गुप्ता ने पुरस्कार वितरण किया. इस मौके पर अजय ठाकुर ,संजय सिंह अभय कुमार, रामाशंकर सिंह, मोजीबुद्दीन खान ,अयोध्या ठाकुर, अमोद कुमार पांडेय सहित काफी संख्या में खिलाड़ी एवं अभिभावक उपस्थित थे.

प्रतियोगिता को सफल बनाने में मुख्य रेफरी संदीप शाहा, किरण बिहारी शुक्ला, अंपायर एल एन मित्रा, आशीष बनर्जी, आशुतोष कुमार दुबे अमल कुमार ठाकुर ऋभ राज आयुषी कुमारी सांइ अक्षय, सुधांशु रंजन ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कार्यक्रम का संचालन संघ के कोषाध्यक्ष कमलेश कुमार दुबे ने की जबकि धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष मदन प्रसाद केशरी ने किया.

16 दिव्यांगजनों को दिये गये व्हीलचेयर व सहायक उपकरण

खूंटी। द हंस फाउंडेशन रूपांतरण परियोजना खूंटी द्वारा तोरपा प्रखंड क्षेत्र के दिव्यांगजनों को चिह्नित कर सोमवार को तोरपा रेफरल अस्पताल में शिविर का आयोजन कर 16 दिव्यांग जनों के बीच सहायक उपकरण उपलब्ध कराने के लिए शिविर लगाया गया. हंस फाउंडेशन से दिव्यांग जनों के बीच व्हीलचेयर और सहायक उपकरणों का वितरण्ध किया गया. फाउंडेशन के सदस्यों ने बताया कि तोरपा और रनिया प्रखंड क्षेत्र के 20 गांवों के हजारों लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है. मौके पर रोहित सुरीन, संतोष कुमार कर, डॉ मिदेन मुंडू, बीपीएम विजय शेखर, अजय साहू और हंस फाउंडेशन के कर्मी मौजूद थे.

पलामू केंद्रीय कारा में ढाई घंटे तक चला औचक सर्च अभियान

मेदिनीनगर। पलामू केंद्रीय कारा में सोमवार की शाम लगभग ढाई घंटे तक औचक सर्च अभियान चलाया गया. इस अभियान के तहत जेल के सभी बैरकों एवं कैदियों की गहन तलाशी ली गई. जांच के दौरान 100 से अधिक पुलिस कर्मियों की टीम ने इस अभियान में भाग लिया. जेल में किसी भी प्रकार के आपत्तिजनक सामग्री की उपस्थिति की जांच की गई, लेकिन छापेमारी के दौरान कोई आपत्तिजनक वस्तु बरामद नहीं हुई. छापेमारी एक विशेष रणनीति के तहत की गई थी, जिसमें जेल के हर बैरक की अलग-अलग टीमें बनाकर गहन तलाशी ली गई. अभियान का नेतृत्व जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के उच्च अधिकारियों ने किया.

डीसी के हाउस गार्ड से दो लाख रुपये की हुई छिनतई

कोडरमा। कोडरमा थाना के पीछे मत्स्य विभाग के समीप सोमवार को बैंक से पैसा निकाल कर लौट रहे डीसी हाउस गार्ड मंटू नायक से मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक दो लाख रुपये से भरा बैग की छिनतई कर फरार हो गए. जानकारी के अनुसार मंटू नायक बैंक से पैसे को निकालकर कोडरमा बाजार सहाना रोड होते हुए कोडरमा थाना के पीछे से डीसी आवास जा रहा था. जहां बैंक से पीछा करते हुए आ रहे दो बाइक सवार ने घटना को अंजाम दिया. वहीं इस घटना के बाद कोडरमा थाना प्रभारी सुजीत कुमार ने मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली.

डीसी ने नागपुरी वीडियो एलबम का किया विमोचन

संवाददाता। लातेहार

उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता व उप विकास आयुक्त सुरजीत कुमार सिंह तथा अपर समाहर्त्ता रामा रविदास ने सोमवार को समाहरणालय के सभागार में मतदाता जागरूकता को लेकर बनाये गये नागपुरी वीडिओ एलबम का विमोचन किया. इस एलबम का नाम चला सभे करे मतदान है. एलबम में अपनी आवाज दी है मशहूर कुड़ख व नागपुरी गायक व निर्देशक रविकांत भगत व रीला कुमारी. रविकांत लातेहार जिले के चंदवा प्रखंड के बनहरदी-बारी ग्राम निवासी हैं. एलबम में संगीत सुकुल उरांव व निर्देशन जीतेंद्र भगत ने किया है. इसमे रिंकू उरांव, लवकेश, शारदा, मोनिका टोप्पो व पिंटू उरांव ने अभिनय किया है. मौके पर संबोधित करते हुए उपायुक्त श्री गुप्ता ने कहा कि आम मतदाता को जागरूक करने के लिए जिला प्रशासन के द्वारा इस वीडिओ एलबम का निर्माण कराया गया है. उन्होने कहा कि इस एलबम के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं से आगामी 13 नवंबर को मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया है. उन्होने निर्भिक हो कर मतदान करने की अपील की है. मौक पर जिला आपूर्ति पदाधिकारी रश्मि लकड़ा, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी जगतमणी टोप्पो व जिला जनसंपर्क पदाधिकारी डा चंदन आदि मौजूद थे.

भाजपा से सुरेंद्र भाई मोदी ने दिया इस्तीफा

बरकट्ठा से निर्दलीय लड़ेंगे चुनाव

संवाददाता। कोडरमा

ले के जयनगर प्रखंड के पथिक बसेरा आवास में भाजपा नेता सुरेन्द्र भाई मोदी ने समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की. बैठक की अध्यक्षता बंशीधर बर्णवाल व संचालन संतोष मोदी ने किया. भाजपा से टिकट कटने पर भावुक होते हुए सुरेन्द्र भाई मोदी ने समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं से कहा कि मैं टिकट की प्रबल दावेदार था और मेरे नाम पर सहमति भी जताई गई थी. लेकिन आखिरी समय में मेरा टिकट काटकर और निर्दलीय विधायक अमित कुमार यादव को टिकट दिया गया. टिकट नहीं मिलने से नाराज सुरेन्द्र भाई मोदी ने भाजपा के सभी पदों से इस्तीफा देते हुए निर्दलीय से चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी. उन्होंने अपने समर्थकों से विचार विमर्श के पश्चात यह कदम उठाया. वहीं उपस्थित समर्थकों ने कहा कि क्षेत्र के मान-सम्मान की बात करनेवाली भाजपा ने एक कर्मठ शिक्षाविद को टिकट नहीं देकर क्षेत्र के जनता का अपमान किया है. इस अपमान का बदला हमलोग समाजसेवी मोदी को विधानसभा भेजकर दम लेंगे.

सीओ ने किया कोटाम स्थित वज्रगृह का निरीक्षण

गारू (लातेहार)। गारू अंचलाधिकारी दिनेश मिश्रा ने सोमवार को प्रखंड के मध्य विद्यालय कोटाम स्थित वज्रगृह का निरीक्षण किया. इस दौरान उन्होने मतदान केंद्रों में भी तैयारियों का जायजा लिया. उन्होंने बताया कि मध्य विद्यालय कोटाम में स्थित बूथ संख्या 224, 225 और 226 का निरीक्षण उन्होने किया और इन मतदान केंद्रों में सभी मूलभूत सुविधायें बहाल कराने का निर्देश दिया है.

एसजीएफआई राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता

23 सदस्यीय झारखंड टीम मेरठ रवाना

संवाददाता। रांची

23 से 27 अक्टूबर 2024 तक उत्तर प्रदेश के मेरठ में आयोजित 68वीं एसजीएफआई राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता (अंडर 19 बालक, बालिका फ्री स्टाइल) मे भाग लेने के 23 सदस्यीय झारखंड टीम रवाना हुई. खेलो झारखंड अंतर्गत चयनित कुश्ती टीम में टीम 10 बालक, 9 बालिका पहलवान, 2 प्रशिक्षक तथा 2 टीम मैनेजर शामिल हैं. टीम को जेईपीसी द्वारा ट्रैक सूट, टीशर्ट, खेल किट देकर आज रांची से मेरठ के लिए रवाना किया गया.

टीम की सूची

- **पुरुष फ्री-स्टाइल :** विकास कच्छप- जेएसएसपीएस, पुटूस रमन -रांची, आकाश कुमार महतो-, जेएसएसपीएस, बिट्टू मंडल- धनबाद, आयुष कुमार - कोडरमा, मोहम्मद अफरान आलम- धनबाद, अजीत कुमार यादव -हजारीबाग, हर्षित कुजूर - गुमला, जीत सिंह - गोड्डा, सुमित कुमार सिंह- धनबाद. प्रशिक्षक-राजीव रंजन- रांची
- **महिला वर्ग :** पूनम उरांव- जेएसपीएस, नेहा मरांडी- जेएसएसपीएस, नेहा उरांव-जेएसएसपीएस, स्नेहा कुमारी -जेएसएसपीएस, सिमरन बिलचन मिंज -जेएसएसपीएस, विद्या कुमारी- गुमला, प्रियंका असुर -गुमला, सुष्मिता कुमारी -धनबाद, सांझ कुमारी -धनबाद. प्रशिक्षक-बालमुनि कुमारी- गुमला. टीम मैनेजर-शंभू, आशा कुमारी.

फोटो हुआ वायरल नॉमिनेशन के दिन कैमरे में कैद हुए स्कूल के सचिव-टीचर विनोद प्रजापति

स्कूल टाइम में चुनावी मीटिंग में पहुंचे मवि पुला पखा के शिक्षक

डॉ शशिभूषण मेहता के फॉर्म हाउस में मीटिंग में मौजूद शिक्षक (लाल घेरे में)।

सुधीर यादव। मनातू (पलामू)

पलामू जिले अंतर्गत मनातू प्रखंड चक पंचायत पुला पखा उत्क्रमित मध्य विद्यालय के सचिव-शिक्षक विनोद प्रजापति सोमवार को अपने सरकारी स्कूल में बच्चों को पढ़ने के बजाय राजनीतिक गलियारों में दिनभर छाए रहे. लगता है कि स्कूल में फिंगरप्रिंट लगाने के बाद स्कूल से निकलते हैं और अपने कई बड़े-बड़े काम भी निपटाते हैं. यहां सहायक टीचर के सहारे ही स्कूल चलता है. विनोद प्रजापति सोमवार को दिन के लगभग 12 बजे डॉ शशि भूषण मेहता के फार्म हाउस अंतर्गत जनता मीटिंग हॉल में उपस्थित पाए गए.

सोमवार को डॉ शशि भूषण मेहता का नॉमिनेशन का टाइमिंग निर्धारित की गई थी. इसी दौरान पांकी विधानसभा के सभी प्रखंडों से कार्यकर्ता ने अपनी उपस्थिति को दर्ज कराने के लिए उनके फार्म हाउस गए हुए थे.

प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी ने कहा- कोई जानकारी नहीं है

इस संबंध में टीचर विनोद प्रजापति ने इस पर बताया कि मैं अभी मीटिंग से विधायक जी के आवास में आया हूं. लेकिन प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी परमेश्वर साहू ने बताया कि मुझे अभी तक कोई जानकारी नहीं है, लेकिन आपके द्वारा जो बोला जा रहा है, अगर सत्य होगा तो निश्चित रूप से कार्रवाई होगी. विनोद प्रजापति के बारे में शिकायत कई बार मिली है, अब यह जांच का विषय है अगर सही पाए जाता है तो निश्चित रूप से कार्रवाई की जाएगी.

2019 के पहले क्षेत्र में जनप्रतिनिधि और ठेकेदार एक ही थे : डॉ मेहता

संवाददाता। मेदिनीनगर

पांकी विधानसभा क्षेत्र से बीजेपी प्रत्याशी कुशवाहा डॉ शशि भूषण मेहता ने सोमवार को नामांकन किया. इसके बाद एक सभा भी की. इसमें उन्होंने अपनी जीत का दावा करते हुए कहा कि पलामू की पांचों विधानसभा सीट पर बीजेपी की जीत होगी. डॉ शशि भूषण मेहता ने कहा कि आम जनता से लोकतंत्र की मजबूती और भारत का विकास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तेजी से जारी रखने के लिए बाकी समय जिले के सभी पांच और राज्य के सभी सीटों पर

भाजपा प्रत्याशियों को जीतने के लिए अधिक से अधिक मतदान करें. पांकी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व मिलने के बाद उन्होंने डर का माहौल खत्म कर दिया है. अब हर कोई अपना काम निर्भीकता के साथ कर रहा है. क्षेत्र में विकास कार्य भी अब गुणवत्ता के साथ हो रहा है, जिसका लाभ आम जनता को मिलने लगा है. 2019 के पहले क्षेत्र में जनप्रतिनिधि और ठेकेदार एक ही थे और उन्हीं के सारे पर जनता का शोषण भी हो रहा था परंतु अब स्थिति बदल गई है. भाजपा सबका साथ सबका विश्वास और सबका विकास को मंत्र मानकर काम कर रही है और अपने संकल्प अंत्योदय को पूरा करने में जुटी हुई है. समाजसेवी रामदास साहू ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता एक साथ कमर कसकर एक लाख मतों से डॉक्टर कुशवाहा शशि भूषण मेहता को जीतने के लिए संकल्पित हैं. भाजपा नेतृत्व ने टिकट देकर अपना काम पूरा कर दिया अब कार्यकर्ता अपना काम करने में जुट गए हैं.

प्रवासी मजदूरों पर हमला

जम्मू और कश्मीर में चुनावों के बाद सरकार बन गयी है. इसके साथ ही पूर्ण राज्य दर्जा का मामला भी सरगर्म हो गया है. कश्मीर में आतंकी घटनाओं पर पूरी तरह लगाम नहीं लग सकी है. सुरक्षा बलों के साथ केंद्र और राज्य दोनों ही सरकारों का कर्तव्य है कि वे हर हाल में अपने नागरिकों की रक्षा करें. घटनाओं के बीच कश्मीर में प्रवासी मजदूर फिर आतंकियों के निशाने पर हैं. पांच दिन के भीतर प्रवासी मजदूरों पर यह दूसरा आतंकी हमला है. इन हमलों ने एक बार फिर घाटी में काम करने वाले 50 हजार से अधिक प्रवासी मजदूरों की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं. इस वर्ष अब तक कश्मीर में गैर कश्मीरियों पर यह पांचवां आतंकी हमला है. आतंकियों ने 2021 में भी इसी तरह प्रवासी मजदूरों पर आतंकी हमले किए थे. 16 और 17 अक्तूबर, 2021 को बिहार एवं यूपी के चार मजदूरों की गोली मारकर हत्या कर दी थी. तब घाटी से बड़े स्तर पर प्रवासी मजदूरों ने पलायन किया था. अब फिर कश्मीर में वैसा ही माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है.

> घटनाओं के बीच कश्मीर में प्रवासी मजदूर फिर आतंकियों के निशाने पर हैं. पांच दिन के भीतर प्रवासी मजदूरों पर यह दूसरा आतंकी हमला है. इन हमलों ने एक बार फिर घाटी में काम करने वाले 50 हजार से अधिक प्रवासी मजदूरों की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं.

कश्मीर के अलग-अलग जिलों में चलने वाली तमाम बड़ी परियोजनाओं में प्रवासी मजदूर काम करते हैं. बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब के मजदूर कश्मीर में सेब के बगीचों और इसकी पैकिंग में काम करते हैं. निर्माण कंपनियों के विभिन्न प्रोजेक्ट में ये काम करते हैं. यहां तक कि कश्मीर में स्थानीय स्तर पर फल-सब्जी बेचने वालों में भी इनकी बड़ी संख्या है. रेलवे की योजनाओं में भी इन मजदूरों से काम लिया जाता है. गांदरबल में श्रीनगर-लेह हाईवे पर सोनमर्ग के पास गगनगीर इलाके में जेड मोड़ सुरंग निर्माण कर रही कंपनी में कार्यरत प्रवासी मजदूरों पर रविवार की रात आतंकियों ने हमला कर एक डॉक्टर और छह मजदूरों की हत्या कर दी. मारे गए मजदूरों में कश्मीरी व गैर कश्मीरी दोनों हैं. पांच घायलों का इलाज चल रहा है. प्रवासी मजदूरों पर हाल के वर्षों का सबसे बड़ा हमला बताया जा रहा है. पिछले तीन दिनों में आतंकी हमले में सात प्रवासी मजदूर मारे जा चुके हैं. हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन लश्कर-ए- ताइबा के सहयोगी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने ली है. मध्य कश्मीर के गांदरबल में गगनगीर गुंड में आतंकियों ने सुरंग बना रही कंपनी एप्को के कर्मियों के कैंप पर अंधाधुंध फायरिंग की. इसमें मौके पर ही दो मजदूरों की मौत हो गई, जबकि पांच अन्य घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया. घायलों में एक कश्मीरी डॉक्टर तथा चार अन्य मजदूरों की इलाज के दौरान मौत हो गई. सुरक्षा बलों ने इलाका घेरकर तलाशी अभियान शुरू कर दिया है. अफसरों ने मजदूरों से घटना की जानकारी हासिल की है. आईजी वीके विर्दी भी मौके पर हैं. मंडलायुक्त और डीसी श्रीनगर ने स्किम्स अस्पताल में घायलों का हाल जाना. घटना के बाद पूरे इलाके में सतर्कता बढ़ा दी गई है. प्रवासी मजदूरों के कैंप की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त फोर्स तैनात की गई है. वाहनों की तलाशी भी ली जा रही है.

सुभाषित

आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री महाकुले जन्म।
स्वाधीनता च पुंसां महदैश्वर्यं विनाप्यर्थेः॥

आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनों से मैत्री, श्रेष्ठ कुल में जन्म, दूसरों के ऊपर निर्भर न होना, यह सब धन नहीं होते हुए भी पुरुषों का ऐश्वर्य है. जिसके पास यह ऐश्वर्य नहीं है, वह अकूत धन प्राप्त कर भी सुखी नहीं रह सकता. उसके सामने कष्ट ही कष्ट होते हैं.

समग्र विकास के लिए अहम चुनाव

राज्य के एसजीडीपी में कृषि का योगदान यद्यपि 20% के आसपास रहता है, पर इस पर 65% आबादी की मौलिक निर्भरता होती है. भूमि की पठारी प्रकृति के कारण मात्र 29.74 % जमीन ही खेती के लायक है. आंकड़ों के अनुसार उनमें से भी बंजर, टांड़ अर्थात अनुपयुक्त भूमि को छोड़ दिया जाए तो कुल 22.7 % अर्थात लगभग 18.40 लाख हैक्टेयर भूमि पर ठीक से खेती होती है.

• देश-काल

अयोध्या नाथ मिश्र

यद्यपि चुनावी घोषणा अभी हुई है, झारखंड की राजनीतिक पर्टियां कई माह पूर्व से सब कुछ छोड़ चुनावी तैयारी में लगी हैं. छठे विधानसभा के लिए दो चरणों में 13 और 20 नवंबर को 2.60 करोड़ मतदाता लोकतंत्र के महापर्व में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे. ये चुनाव वास्तव में राज्य के समग्र विकास के लिए आधारशिला रखते हैं. लोकसभा की तर्ज पर विधानसभा के लिए भी मतदान एनडीए और एनडी एलाइंस के बीच प्रमुखता से केंद्रित रहने वाला है. दल और निर्दल प्रत्याशी अपनी पहचान बनाए रखने में कामयाब हों तो वह हाशिए की बात होगी. इस चुनाव में भी प्रायः हर चुनाव की तरह राष्ट्रीय राज्य और क्षेत्रीय मुद्दे मुखर होंगे और उनके प्रभावी होने से इनकार नहीं किया जा सकता. चुनाव में मुद्दे नई बात नहीं हैं. 1952 से अब तक हर चुनाव में दल, नीति, कार्यक्रमों से आगे बढ़कर ये मुद्दे प्रभावित करते हैं. लोकसभा चुनाव में भी मुद्दे छाए रहे. भले ही कुछ लोग उन्हें नैरेटिव्स की संज्ञा देते हों. जो प्रश्न इस माहौल में मतदाता मन को छू जाए, प्रभावित कर दे, वोट पर असर डाले वही मुद्दा है. चाहे वह गांव का टूटा पुल हो या ऋणों की माफी. झारखंड में भी कई समसामयिक एवं क्षेत्रीय मुद्दे उभर कर आएंगे ऐसी उम्मीद राजनीतिक समीक्षक करते हैं. प्राथमिकता का विषय यह होगा कि ये मुद्दे बड़े पैमाने पर आम जनकी मौलिक चिंता से जुड़े होंगे या राजनीतिक दलों (मोर्चों) की ओर से उछाल जाएंगे. वैसे राजनीतिक इस मामले में बहुत निपुण होते हैं. अपने पक्ष में हवा के रुख को मोड़ने के लिए अनेक तीर-तुक्के छोड़ते हैं, पता नहीं कौन कब काम कर जाए. कोई जनजातीय हित को केंद्र में रखेगा तो दूसरा उनके विकास की रफ्तार को लेकर आवाज बुलंद करेगा. वहीं अल्पसंख्यक हितों की बातें बढ़-कर कर होंगी तो कथित तुष्टीकरण के मामले भी जोर पकड़ेंगे. इस बार घुसपैठ, डेमोग्राफिक परिवर्तन और कथित सरकारी अनदेखी तथा समर्थन को भी मुद्दा बनाया जा सकता है. इश्यू कुंद करने के लिए भी प्रशासनिक राजनीतिक स्वर उभरेंगे . कहीं आदिवासी अस्मिता की बात आएगी तो दूसरी ओर जल जंगल जमीन की रक्षा का सवाल जोर मारेगा. आदिवासी हितों की रक्षा के साथ-साथ कहीं-कहीं जाति-पांति से जुड़ी बातें मुद्दा बने तो आश्चर्य की बात नहीं? संविधान की रक्षा और जातीय जनगणना आधारित सोशल अभियांत्रिकी की बात को भी राजनीतिक मुद्दा बनाने का प्रयत्न भी संभावना लिए है !

अब यहां अहम प्रश्न है, क्या राज्य में जीवन- जीविका और जनजीवन से जुड़े कृषि, शिक्षा तथा स्वास्थ्य को जनता चुनावी मुद्दे बना पायेगी या नहीं? राज्य में ये सबसे बढ़कर सामाजिक-आर्थिक जीवन को स्पर्श करने वाले बिंदु हैं, पर जैसा कि आमतौर पर देखा जाता है झारखंड में गन्नौर उद्योग ही सारी गतिविधियों के मूल में होते हैं. भला राजनीति इसे मुद्दा क्यों बनाएगी! कहीं न कहीं इनकी अधोगति का दायित्व इन्हीं पर तो आता है. जितना तवज्जो कृषि शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे जीवन के लिए आवश्यक विषयों को दिया जाना चाहिए, दिया गया होता तो राज्य के समक्ष पिछड़ेपन का यक्षप्रश्न खड़ा नहीं होता! यदि उद्यमिता एवं प्राकृतिक संसाधन को मानव संसाधन के उन्नयन के साथ समन्वित क्रिया गया होता तो बात कुछ और होती! राज्य के एसजीडीपी में कृषि का योगदान यद्यपि 20% के आसपास रहता है, पर इस पर 65% आबादी की मौलिक निर्भरता होती है. भूमि की पठारी प्रकृति के कारण मात्र 29.74 % जमीन ही खेती के लायक है. आंकड़ों के अनुसार उनमें से भी बंजर, टांड़ अर्थात अनुपयुक्त भूमि को छोड़ दिया जाए तो कुल 22.7 % अर्थात लगभग 18.40 लाख हैक्टेयर भूमि पर ठीक से खेती होती है. सिंचाई का अधिकतम आंकड़ा फाइलों में होगा पर जमीन प्यासी ही रहती है. जो उत्पादन होता है वह भगवान भरोसे अधिक, व्यवस्था समर्पित कम. अधिकांश खेती एक फसली है, जबकि खेतों के उत्पादकता अधिक है. पानी के अभाव में रब्बी की खेती 10% से कम भूमि पर होती है, वहीं खरीफ उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक है. राज्य में वर्षा के प्राचुर्य के चलते भदई और अगहनी फसल की स्थिति प्रायः बेहतर होती है. झारखंड में अगहनी फसल लगभग 70% कृषि योग्य भूमि में तथा भदई 20% के करीब उपजाई जाती है. सूखे की स्थिति में उत्पादन को भारी क्षति होती है.

बिना विशेष विवेचन के इतना कहना पर्याप्त होगा कि यदि राज्य में कृषि सिंचाई समर्थित हो, बागाती खेती, देशज उत्पाद आंदोलन बनें तो गरीबी और पलायन पर प्रभावी नियंत्रक सिद्ध होंगे. अपार संभावनाएं हैं यहां की उर्वरा भूमि और श्रम सिद्ध बाजुओं में. शिक्षा यहां प्रयोगवाद के दौर से गुजरती रही है. आज भी राष्ट्रीय औसत से कम से कम यहां की साक्षरता नौ प्रतिशत ये नीचे तो होगी ही. शिक्षा सभी समृद्धि का मूल है. एक शिक्षित व्यक्ति खेती-बाड़ी, उद्यम, व्यवसाय से लेकर वैश्विक पटल पर अपनी बेहतर पहचान स्थापित कर सकता है. आज भी राज्य के शत प्रतिशत 14-18 आयुवर्ग के बच्चे स्कूल कॉलेज से जुड़े नहीं है. प्राथमिक -माध्यमिक शिक्षा की उपलब्धियों का बुरा दौर है. मोटे तौर पर देखा गया है कि शिक्षा में गुणवत्ता, कौशल विकास और व्यक्तित्व संवर्धन की बेहद कमी है .शिक्षा में कमी का संबंध खेती-बारी के सम्यक विकास की कमी से भी है. वह पोषक है अधिकतर ग्रामीण बच्चों का. राज्य मे सरकारी और गैर सरकारी विश्वविद्यालयों की संख्या में वृद्धि तेजी से हुई है, परंतु उपलब्धियों पर अनेक प्रश्न चिन्ह हैं. कहने का आशय है कि यदि शिक्षा में सुधार हो जाए तो विकास के खुले

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

• बोधि-वृक्ष | डॉ. मयंक मुरारी

राष्ट्र को जोड़ने की धारणा

वेदों का उदघोष है- माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः यानी भूमि माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूं. वहीं यजुर्वेद का अमृत मंत्र हरेक संकट काल में गूंज उठा, जिसमें कहा गया कि- वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः हम जागते रहेंगे और राष्ट्र का जागृत रखेंगे. वाल्मिकि रामायण में कहा गया कि जननी जन्मभूमि च स्वर्गादपि गरीयसी यानी जननी और जन्मभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है. अंग्रेजों के खिलाफ जब स्वतंत्रता का संघर्ष 160 साल पहले शुरू हुआ, तो देश के विभिन्न भागों से विभिन्न क्षेत्रों से राष्ट्रीय भाव का उदघोष हुआ. इस भारतभूमि को महायोगी अरविंद एक जगनमाता! आदिशक्ति! महामाया के रूप में देखा. रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे देवि भुवन मनमोहनी..........नीलसिंधू जल द्यौत चरणतल के रूप में स्तुति गान किया. कवि वंकिमचंद्र ने अपनी अमर रचना वंदेमातरम् में इसे त्व हि दुर्गा दश प्रहरणधारिणी कहा. यही दुर्गा जो पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रीयता के जागरण की अधिष्ठात्री देवी बन गयी, आज जनमानस में शक्ति के जागरण की पहरूआ बनी है . दुर्गा यानी शक्ति की पूजा का अर्थ है खुद का प्रकटीकरण करना. प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर शिखर की ओर बढ़ना. अर्थववेद के पृथिवीसूक्त (12-1-45) में भूमि के बारे में कहा गया है- यह पृथिवी अनेक भाषाओं को बोलनेवाले, अनेक धर्मों के मानने वाले, विविध प्रकार के जन को धारण करती है. किंतु इन सबको एकता के अखंड सूत्र में बांधनेवाला सर्वोपरि प्रधान तत्व स्वयं मातृभूमि है. उसकी सŸाा ध्रुव धेनु के तुल्य अडिग है. भेदों के बीच में भी उसे प्रकंप नहीं होता. वह सब पुत्रों के लिए समानरूप से दूध रूपी वरदानों का सहस्त्र धार झरना बहाती रहती है. सब उसके साथ माता-पुत्र के बंधन में बंधे है. करे. मातृरूपी यह भारतभूमि वैदिक काल से ही महज नदियां, पहाड़ों, बंजर, हरियाली खेत मात्र नहीं थे, वरन् सप्राण-सचेतन माता थीं. इस सर्वहात्री मातृभूमि के लिए वैदिक आर्य सर्वस्व त्याग करने के लिए सदैव तैयार रहते थे. वह सदैव कहतेः-प्रतिबुध्यामाना वयं तुभ्यं बलिहतः स्याम. अर्थात् हे माता! हम तेरे संरक्षण के लिए सदैव जागरूक है और तुम पर सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार है. यही भाव मर्यादापुरुषोतम श्रीराम के नेपाल से श्रीलंका तक की कर्मयात्रा में मुखर रही. श्रीकृष्ण की पूर्व से पश्चिम की धर्मयात्रा में भारत को जोड़ने का कर्म ही था.

भारत-कनाडा के बीच बढ़ती कटुता

• सामयिकी

पुष्प रंजन

'कोई हाथ भी न मिलाएगा, जो गले मिलोगे तपाक से.' कनाडा-भारत के शिखर नेताओं के सम्बन्ध पर कोई एक लाइन की टिप्पणी मांगे, तो बशीर बद्र का यह शे'र काफी है. आप पूछियेगा, मोदी आख़िरी बार कनाडा के प्राइम मिनिस्टर जस्टिन ट्रूडो से कब गले मिले थे? 23 फ़रवरी, 2018 को पीएम मोदी ने आख़िरी बार जस्टिन ट्रूडो को 'हग' किया था. ट्रूडो आठ दिन की यात्रा पर भारत आये थे. राष्ट्रपति भवन में जस्टिन ट्रूडो, और उनके परिवार का भव्य स्वागत पीएम मोदी की उपस्थिति में किया गया. अब 'हग' करना तो दूर, दोनों नेता हाथ मिलाने से कतराते हैं. लेकिन, ट्रूडो को ख़लिश इस बात की थी कि बेंजामिन नेतन्याहू, बराक ओबामा, शेख हसीना और अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान का विमानस्थल पर स्वागत करने वाले मोदी ने उन्हें हवाई अड्डे पर रिसीव क्यों नहीं किया? जस्टिन ट्रूडो से दरअसल पीएम मोदी खुन्नस खाये हुए थे. जस्टिन ट्रूडो अपनी यात्रा में एक ऐसे शख्स को ले आये थे, जिसकी जानकारी मिलते ही पीएम मोदी की भृकुटियां चढ़ गईं. वह शख्स था, कनाडा का तथाकथित पत्रकार मनवीर सिंह सैनी, जिसने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 2015 की कनाडा यात्रा का विरोध किया था. सैनी ने वैसा बैनर पकड़ रखा था, जिस पर लिखा था, 'मोदीएक आतंकवादी है', 'मोदी आपका कनाडा में स्वागत नहीं हैं और 'भारत खालिस्तान से बाहर है'. तस्वीरें तब वायरल हुई थीं. 4 नवम्बर, 2015 से जस्टिन ट्रूडो सत्ता में हैं. उससे तीन माह पहले, 1 अगस्त, 2015 को पीएम मोदी जब कनाडा गए थे, तब यह बैनर कांड हुआ था, उस समय स्टीफन हार्पर सत्ता में थे. मोदी ने इसे इग्नोर किया और कनाडा से सम्बन्ध प्रगाढ़ करने की दिशा में कई समझौते किये. दोनों देशों के बीच सम्बन्ध सौहार्द्रपूर्ण बनें, इसे ध्यान में रखकर गुजराती मूल के नादिर पटेल को जस्टिन ट्रूडो के सत्ता में आने के कोई 10 महीने पहले दिल्ली, हाई कमिश्नर बनाकर भेजा गया था. लेकिन नादिर पटेल के संभाले बात संभल नहीं रही थी.

2018 में यात्रा समापन की पूर्व संध्या पर नई दिल्ली स्थित कनाडाई उच्चायोग में एक पार्टी का आयोजन था, जिसमें सिख अलगाववादी जसपाल अटवाल को, ट्रूडो के साथ आये एक सांसद ने पार्टी में आमंत्रित किया था. जसपाल अटवाल को 1986 में कनाडा की यात्रा के दौरान एक भारतीय कैबिनेट मंत्री की हत्या की कोशिश करने का दोषी ठहराया गया था. अटवाल को जेल में डाल दिया गया. रिहा होने के बाद अटवाल व्यवसायी बन गए. बाद में अटवाल जस्टिन ट्रूडो की लिबरल पार्टी के समर्थक बन गए, और वाशिंग मशीन में धुल गए. बहरहाल, कनाडा के उच्चायुक्त पद पर नादिर पटेल साढ़े तीन साल के लगभग रह पाए, उनकी जगह कैमरोन मैके को 16 मार्च, 2022 को तैनात किया गया. लेकिन कैमरोन मैके वही कर रहे हैं, जो उनका कमांड करने को बोल रहा है. ट्रूडो एक बार फिर 9 और 10 सितंबर, 2023 को दिल्ली आये. दिल्ली में आयोजित जी-20 सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने कई विश्व नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें कीं, लेकिन ट्रूडो को नज़रअंदाज़ कर दिया. इससे नाराज़ कनाडा ने अगले माह व्यापार मिशन के एक कार्यक्रम को कैंसिल कर दिया. इस नूराकुश्ती का एक दिलचस्प पहलू यह है, कि भारत ने कनाडा को निर्यात में लगातार वृद्धि की है. 2016-17 में 2.0 बिलियन डॉलर से यह बढ़कर 2023-24 में 3.8 बिलियन डॉलर हो गया है. कनाडा में इस बार आम चुनाव जस्टिन ट्रूडो जीत पाएंगे? इस सवाल के हवाले से कई सर्वे एजेंसियां शक ज़ाहिर कर रही हैं. कनाडा में प्रवासी सिख वोटर्स के बीच जस्टिन ट्रूडो अपनी लोकप्रियता बनाये रखना चाहते हैं. 'एंटी मोदी हाइप' के पीछे यह सबसे बड़ा कारण है. किसान आंदोलन के समर्थन में दिसंबर, 2020 को जो बयान जस्टिन ट्रूडो ने दिया, वह भी इसी रणनीति का हिस्सा था, जो मोदी से निजी अदावत को भी आगे बढ़ा रहा था. 2021 की जनगणना के अनुसार, कनाडा में 771,790 सिख रहते हैं. आप कह सकते हैं कि पंजाब के बाहर कनाडा में सबसे बड़ी सिख आबादी है. चुनाव अमेरिका में भी है, जिसके लिए 70,697 सिख वोटर मायने रखते हैं. कनाडा के बाद ब्रिटेन दूसरा देश है, जहां सिखों की आबादी पांच लाख, 35 हज़ार है. **(ये लेखक के निजी विचार हैं)**

> इस नूराकुश्ती का एक दिलचस्प पहलू यह है, कि भारत ने कनाडा को निर्यात में लगातार वृद्धि की है. 2016-17 में 2.0 बिलियन डॉलर से यह बढ़कर 2023-24 में 3.8 बिलियन डॉलर हो गया है. कनाडा में इस बार आम चुनाव जस्टिन ट्रूडो जीत पाएंगे? इस सवाल के हवाले से कई सर्वे एजेंसियां शक ज़ाहिर कर रही हैं.

भारत में कानूनी सहायता: हकीकत

• कानून

निशांत आनंद

अप्रैल 2022 में, भारत के पूर्व सर्वोच्च न्यायालय न्यायाधीश यू.यू. ललित ने कर्नाटक में एक व्याख्यान के दौरान कहा था, "गरीबों को कानूनी सहायता का अर्थ खराब कानूनी सहायता नहीं है. कानूनी सहायता का स्तर, गुणवत्ता और मानक बेहतर होना चाहिए."यहां तक कि कानूनी सहायता समाज के प्रभारी फैकल्टी सदस्य भी गरीबों के साथ तस्वीरें खिंचवाने पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं. वर्तमान में कानूनी सहायता का मुद्दा फिर से प्रमुख हो गया है, क्योंकि जस्टिस संजय किशन कौल भारत के मुख्य न्यायाधीश का पद संभालने वाले हैं, जो वर्तमान सीजेआई डी.वाई. चंद्रचूड़ का स्थान लेंगे और राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) के कार्यकारी प्रमुख के रूप. भारतीय संविधान की प्रस्तावना लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्रदान करने का प्रयास करती है. यह राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांतों का हिस्सा है, जो राज्य को नागरिकों के कल्याण के लिए काम करने का निर्देश देता है. अनुच्छेद 38(1) कहता है कि राज्य लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक व्यवस्था को सुनिश्चित और संरक्षित करेगा, जिसमें न्याय शामिल है. अनुच्छेद 39-ए विशेष रूप से कहता है कि राज्य उपयुक्त कानून या योजनाओं के माध्यम से मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करेगा, ताकि किसी भी नागरिक को न्याय प्राप्त करने के अवसरों से वंचित न किया जा सके. 1995 में जब विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम लागू हुआ तो इसने पूरे भारत में सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए मुफ्त कानूनी सेवाओं की व्यवस्था की. 1976 में, भारतीय संसद ने संविधान में अनुच्छेद 39-ए को जोड़ा, जिससे मुफ्त कानूनी सहायता एक मौलिक सिद्धांत बन गया. कानून का एक महत्वपूर्ण घटक, जो सभी के लिए न्याय तक समान पहुंच सुनिश्चित करता है, यह है कि प्रो बोनो वकील और अधिवक्ता उन लोगों को मुफ्त सेवाएं प्रदान करें, जो कानूनी प्रतिनिधित्व का खर्च नहीं उठा सकते. न्याय के समक्ष समानता बनाए रखने और कानून के शासन को सुनिश्चित करने के लिए न्याय तक समान पहुंच आवश्यक है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि हमारे देश के गरीब और असहाय लोग कानूनी प्रणाली का उपयोग कर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें. लेकिन कानूनी सहायता देने वाले वकीलों को बहुत कम वित्तीय सहायता मिलती है और यही कारण है कि युवा और नए वकील इसकी ओर आकर्षित नहीं हो रहे हैं. उनका वेतन उनके द्वारा किए गए कार्य या वकील बनने के लिए की गई मेहनत के अनुरूप नहीं है. कानूनी सहायता सेवाओं से भुगतान में अक्सर देरी होती है और कानूनी सहायता वकीलों को अदालत में निजी वकीलों जितना सम्मान नहीं मिलता. उन्हें कोई सामाजिक सुरक्षा लाभ भी नहीं मिलता, क्योंकि वे कर्मचारी नहीं माने जाते. निजी वकीलों की आय कानूनी सहायता प्रदान करने वाले वकीलों से पांच से दस गुना अधिक होती है.

2023 में आईडीआर ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें एक मुफ्त कानूनी सहायता वकील का साक्षात्कार लिया गया. उसने कहा, "वकीलों को मुकदमेबाजों के दस्तावेजों की छपाई या फोटोकॉपी और ड्राफ्टिंग खर्च अपनी जेब से उठाने पड़ते हैं." इस मुद्दे को लगभग सभी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) के पैनल वकीलों ने प्रतिध्वनित किया. रिपोर्ट में आगे कहा गया कि लगभग 20% कानूनी सहायता वकीलों ने ग्राहकों के साथ बातचीत करने के लिए नामित चैंबर जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी की पहचान की, 23% ने कम मानदेय को दोषी ठहराया, और 34% ने भुगतान की प्रक्रिया में देरी के बारे में शिकायत की. यह कानूनी सहायता प्रणाली की कुछ समस्याओं का कारण बनता है, जैसा कि एनएलयू दिल्ली के सिंह ने कहा, जिन्होंने 2020 में भारत में कानूनी सहायता सेवाओं की गुणवत्ता पर अध्ययन किया था. इस पूरे ढांचे में न्यूनतम भुगतान की कोई सुनिश्चितता नहीं है. अगर हम दिल्ली से दूर जाएं तो स्थिति और भी दयनीय है. एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बिहार में सरकार ने निर्देश दिया है कि यदि कोई वकील 10 दिनों तक अनुपस्थित रहता है तो उसे पूरे महीने का मानदेय नहीं मिलेगा. **(ये लेखक के निजी विचार हैं)**

> 2023 में आईडीआर ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें एक मुफ्त कानूनी सहायता वकील का साक्षात्कार लिया गया. उसने कहा, "वकीलों को मुकदमेबाजों के दस्तावेजों की छपाई या फोटोकॉपी और ड्राफ्टिंग खर्च अपनी जेब से उठाने पड़ते हैं." इस मुद्दे को लगभग सभी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) के पैनल वकीलों ने प्रतिध्वनित किया.

मीडिया में अन्यत्र

जीएसटी प्रणाली में सुधार की जरूरत

कोविड-19 महामारी की वजह से वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के क्रियान्वयन से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण निर्णय में देरी हुई. अप्रत्यक्ष कर सुधार 2017 में लागू किया गया था और उस समय यह वादा किया गया था कि राज्य सरकारों को पहले पांच साल के दौरान होने वाली राजस्व हानि के लिए क्षतिपूर्ति प्रदान की जाएगी. राज्यों को मुआवजा देने के वास्ते फंड जुटाने के लिए जीएसटी की उच्चतम दरों वाले स्तर पर एक मुआवजा उपकर लगाया गया. सामान्य परिस्थितियों में मुआवजा उपकर 2022 में समाप्त हो जाना था.बहरहाल महामारी के दौरान कर संग्रह पर बुरा असर हुआ और यह निर्णय लिया गया कि राज्यों के राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए उधारी ली जाएगी और उपकर संग्रह की अवधि बढ़ाई जाएगी ताकि इसके लिए जुटाए गए कर्ज तथा उसके ब्याज को चुकता किया जा सके.ऐसे में महामारी के दौरान लिए गए 2.7 लाख करोड़ रुपये की राशि को चुकता करने के लिए उपकर लिया जा रहा है. अनुमान के मुताबिक जनवरी 2026 तक इसे चुकाने का काम पूरा हो जाएगा. ऐसे में यह महत्त्वपूर्ण है कि भविष्य की दिशा तय की जाए और समय पर जरूरी कानूनी बदलाव पूरे कर लिए जाएं.मंत्रियों का एक समूह बनाया गया ताकि वह भविष्य की राह सुझा सके. जैसा कि इस समाचार पत्र ने गत सप्ताह लिखा, राज्य सरकारों ने मुआवजा उपकर को जीएसटी दर में समाहित करने का सुझाव रखा है. राजस्व वाले नजरिये से देखा जाए तो उपकर को उच्चतम जीएसटी दर में समाहित करने से राजस्व संग्रह और करदाताओं पर बोझ दोनों बरकरार रहेंगे. फिलहाल उपकर के रूप में संग्रहीत राजस्व का इस्तेमाल कर्ज को चुकाने के लिए किया जा रहा है. विलय के बाद इसे सामान्य जीएसटी संग्रह के रूप में केंद्र और राज्यों के बीच बांटा जा सकता है. उपकर से हासिल होने वाला संग्रह 2023-24 में 1,44,554 करोड़ रुपये था. हालांकि हालात इतने भी आसान नहीं रहने वाले हैं और मंत्री परिषद जिसे 31 दिसंबर तक अपनी रिपोर्ट पेश करनी है उसे कई संभावित परिणामों पर ध्यान देना होगा. उदाहरण के लिए उपकर सीमित समय के लिए लगाया गया था और फिर असाधारण परिस्थितियों में उसमें इजाफा किया गया. ऐसे में क्या उसे स्थायी रूप से कुछ चीजों पर लगने वाली उच्च कर दर में मिला देना उचित होगा? इतना ही नहीं विभिन्न वस्तुओं पर उपकर का स्तर भी अलग है.उपकर को आधार दर में शामिल करने से जीएसटी प्रणाली में स्लैब बढ़ सकते हैं. अब यह स्वीकार्य है कि दरों की बहुलता से कारोबार और कर अधिकारियों दोनों के लिए जटिलता उत्पन्न होती है और स्लैब की तादाद कम करने की आवश्यकता है. **(बिजनेस स्टैंडर्ड)**

शब्द चर्चा

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

नायब/नायाब

हरियाणा विधान सभा के चुनाव में ऐसी कामयाबी मिली कि नायब नायाब बन गये और मुख्यमंत्री कुर्सी पर काबिज हो गये. इस वाक्य में नायब और नायब एक जैसे दिखनेवाले शब्द हैं, लेकिन दोनों के मायने-मतलब अलग-अलग हैं. वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार नायब अरबी तथा नायाब फारसी मूल के शब्द हैं. हिंदी भाषा में ग्राह्य और प्रतिष्ठित दोनों शब्द विशेषण हैं. दोनों शब्द हिंदी भाषियों द्वारा खूब प्रयोग में आते रहते हैं. विभिन्न हिंदी शब्दकोशों के अनुसार नायब का मतलब है किसी की ओर से काम करनेवाला, किसी के काम की देखरेख करनेवाला, मुनीम, मुख्तार, काम में मदद देनेवाला छोटा अफसर, सहायक, सहकारी, जैसे नायब दीवान, नायब तहसीलदार. यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हरियाणा मुख्यमंत्री नायब सिंह सेनी वह नायब नहीं हैं, जिसकी चर्चा चल रही है, क्योंकि वे किसी के सहायक नहीं, बल्कि राजा बन चुके हैं. वैसे नायब शब्द को इस प्रकार समझा जा सकता है. जैसे जो किसी प्रधान अधिकारी का सहायक हो, किसी का प्रतिनिधित्व करनेवाला हो. अरबी में नायब को नाइब के रूप में पाया जाता है. किसी शायर ने कहा है-जिस्म पे खाल भी रहने नहीं देता है वो, देख कर हम तिरे नाइब के करम रोते हैं. अब नायाब शब्द को समझने का प्रयास करते हैं. नायाब का सामान्य अर्थ है अनोखा, अमूल्य. उदाहरण के लिए हर साल साइबेरिया के नायाब सारस भरतपुर की आब-ओ-हवा में सर्दियां गुजारने आते हैं. नायाब का मतलब जो सामान्य रूप प्राप्त न हो, लुप्त, जिसका मिलना संभव न हो, जो दुष्प्राप्य हो, जो अत्यधिक कम प्राप्त हो, अनुपलब्ध, अप्राप्य. इसका लाक्षणिक अर्थ है बहुत बढ़िया, उत्कृष्ट, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुमूल्य, सम्मान योग्य दुर्लभ, बेजोड़. नायाब का अर्थ सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि जो अमूल्य हो, दुर्लभ हो, जो चीज हमें आसानी से प्राप्त न हो वह हमारे लिए नायाब चीज़ होती है. यह भी कहा जाता सकता है कि हमारे लिए हमारे माता-पिता बहुत ही नायाब हैं.

खिचड़ी के चार यार, घी, पापड़, दही, अचार!

• तीर-तुक्का

डा.सुरेन्द्र वर्मा

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है, राष्ट्रीय पशु गाय होते-होते रह गई, राष्ट्रीय फूल गुलाब माना जा सकता है, राष्ट्रीय स्वर तो लता- मंगेशकर का सर्वमान्य है ही. पर भारत का राष्ट्रीय व्यंजन क्या होना चाहिए, इस पर अभी तक विचार-विमर्श नहीं हुआ है. भारत सरकार भी बहुत पसोपेश में है. कहीं से एक सुझाव आया कि "खिचड़ी" को राष्ट्रीय व्यंजन घोषित कर देना चाहिए. सो खिचड़ी को राष्ट्रीय व्यंजन घोषित करने के लिए खिचड़ी पकने लगी. फिर क्या था, खिचड़ी के पक्ष और विपक्ष में पूरी शिद्दत से दलीलें और तर्क दिए जाने लगे. मामला इतना गरमाया कि खिचड़ी खदबदाने लगी. केन्द्रीय प्रसंस्करण मंत्री को अंततः स्पष्ट घोषणा करने पड़ी कि कृपया शांत रहिए, खिचड़ी को राष्ट्रीय व्यंजन घोषित नहीं-ईं-ईं किया जा रहा है. पर इससे क्या होता है? खिचड़ी तो व्यंजनों में व्यंजन है. देश के हर कोने में किसी न किसी रूप में पकाई जाती है. इतना ही नहीं, हर किसी ने मिलजुल कर कभी न कभी खिचड़ी न पकाई हो, ऐसा हो नहीं सकता. मैं तो कहता हूं, बड़ा अच्छा हुआ खिचड़ी को राष्ट्रीय व्यंजन घोषित नहीं किया गया, अन्यथा बड़ी दुर्गति हो जाती बेचारी की. उसका सर्वमान्य राष्ट्रीय रुतबा ही ख़त्म हो जाता. प्रांत दर प्रांत, खिचड़ी और खिचड़ी के बीच दरारें पड़ जातीं. आप ही बताएं, सरकारी घोषणा अभी तक कभी असरकारी हुई है भला! कहते हैं खिचड़ी का सबसे पहला ज़िक्र आयुर्वेद में हुआ है. आयुर्वेद में खिचड़ी एक हल्का भोज्य पदार्थ है जिसे बीमार और कमज़ोर लोगों को दिया जा सकता है. किन्तु ऐसा उल्लेख कहीं नहीं है कि खिचड़ी स्वादिष्ट नहीं होती और उसे स्वस्थ लोगों को नहीं खाना चाहिए. गरीब हो या अमीर दोनों ही खिचड़ी खाते पाए गए हैं. खिचड़ी तो आम या ख़ास, सभी का एक ख़ास व्यंजन है. पिछली बार एक राजनेता संक्रांति के अवसर पर भाषण दे रहे थे. बोले, खिचडी प्रतीक है मेल मिलाप का, जब तक चावल के साथ कोई दाल-वाल मिलाई न जाए खिचडी बनती ही नहीं. इन दिनों केंद्र में हमारी मिली-जुली सरकार है. खिचडी सरकार है. हम सब मिल-जुल कर ही खिचडी पकाते हैं. मेलजोल का दिखावा करने के लिए राजनीति में भोज का सहारा लिया जाता है. राजनीति के इतिहास में, जैसा कि हम जानते ही हैं, खिचड़ी का ज़िक्र सबसे पहले बीरबल के समय में आया था, बीरबल की यह खिचड़ी खूब प्रसिद्ध हुई. आज भी लोग उसके चटखारे लेते हैं. मेरे एक मित्र हैं. यही पचास-पचपन की उम्र होगी. हमेशा बस अक्ल'मंदी' की बात करते हैं. मुझसे रहा नहीं गया. पूछ ही बैठा – आप शुरू से ही अक्लमंद रहे हैं या अब हो गए हैं ? बोले, अब हो गया हूँ. जबतक बाल खिचड़ी न हो जाएं, कोई अक्लमंद नहीं हो सकता, जनाब ! खिचड़ी के क्या कहने ! जो चिड़ी खाते हैं वे खिचड़ी का स्वाद क्या जाने! खिचड़ी के संग उसके चारों यार भी यदि साथ रहें तो कोई व्यंजन उसका मुकाबला नहीं कर सकता.

गैजेट्स और तकनीक आज हमारी जिंदगी का हिस्सा हैं. सच पूछिए तो इनकी अहमियत रोटी, कपड़ा व मकान से कम नहीं लगती हैं. कम या ज्यादा आज हर घर में गजेट्स नजर आते हैं. इनके बिना जिंदगी की हम कल्पना नहीं कर पाते. हमने कुछ लोगों से पूछा कि क्या हैं आपके फेवरिट या जरूरी गजेट्स. साथ ही यह भी कि इन गजेट्स के बिना गुजारे गए पलों का अनुभव कैसा रहा?

ओ गजेट्स रे.. तेरे बिना भी क्या जीना

गजेट्स के दीवाने ये सितारे

प्रियंका चोपड़ा
प्रियंका फोटोग्राफी की शौकीन हैं. उनके पास एक निकन डी 90 है जिसे उनका पसंदीदा गैजेट कहा जाता है.

अमिताभ बच्चन
78 साल की उम्र में भी, अमिताभ बच्चन कुछ युवाओं की तुलना में तकनीक और गैजेट के बारे में ज्यादा जानकारी रखते हैं. बिग बी के पास आईपैड, मैकबुक जैसे कई गैजेट्स हैं.

अभिषेक बच्चन
अभिषेक बच्चन के पास 47 लाख रुपए की स्पोर्ट्स वॉच के अलावा और भी कई महंगे गैजेट्स हैं. भारत में लॉन्च होने से पहले ही उनके पास एक आईपैड भी था.

शाहरुख खान
शाहरुख खान किंडल के शौकीन हैं. उनके पास एक महंगा गेमिंग स्टेशन भी है क्योंकि उन्हें वीडियो गेम पसंद हैं.

करीना कपूर खान
करीना कपूर खान भी तकनीक और गजेट्स की दीवानी हैं. उनके पास हमेशा अत्याधुनिक लैपटॉप रहते हैं.

आर माधवन
आर माधवन भी गैजेट्स के शौकीन हैं. एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने बताया था कि उनके पास ऐसा चश्मा है जो हियरिंग ऐड की तरह काम करता है. एक टोपी है जिसमें एयर कंडीशनर होता है. उनके घर पर लगभग सभी मैक के प्रोडक्ट्स हैं.

तीन गैजेट्स मेरे लिए ज़रूरी है

मोबाइल, टैब और पारंपरिक घड़ियां.

जब मोबाइल का स्क्रीन टूटा

संगीता कुजारा टाक

बात पुरानी है. हुआ यूं कि वीक एंड में अपनी सहेली के घर गई थी. वहां से लौटते वक्त मेरा मोबाइल गिर पड़ा और उसका स्क्रीन टूट गया. इसके लिए मुझे तुरंत ही उसे सर्विस स्टेशन में देना पड़ा. इस बीच, मेरी उसी सहेली का कॉल आने लगा. लेकिन मैं उठा ही नहीं पा रही थी, क्योंकि मोबाइल के क्षतिग्रस्त पार्ट में सुधार का काम चल रहा था. मैंने उसके चार-पांच कॉल नहीं उठाए, तो उसे चिंता होने लगी कि अभी तो यहां से निकली है और अभी फ़ोन नहीं उठा रही है ! कहीं ऐक्सिडेंट न हो गया हो, इसलिए मैं फ़ोन नहीं उठा रही हूं. वह इतनी परेशान हो गई और चिंता में आ गयी कि मुझसे पहले ही वो मेरे घर पहुंच गई थी और फिर घरवाले भी बार-बार मुझे फ़ोन करने लगे. लेकिन मैं फ़ोन कैसे उठाती? क़रीब एक घंटे बाद जब मैंने फ़ोन उठाया तो सबकी जान में जान आयी.

तीन गैजेट्स मेरे लिए ज़रूरी है

मोबाइल, लैपटॉप और स्मार्ट वॉच.

जब मोबाइल बदल गया

राजीव टाक

तब नया-नया सैमसंग का स्मार्ट फ़ोन आया था. पटना जाने के लिए ट्रेन के फ़र्स्ट क्लास की बोगी में मैंने अपना सामान रखा और बैठ गया. तभी मेरे पीछे-पीछे एक सज्जन आए जो मेरे हमउम्र ही थे. मैंने सोचा-चलो सफ़र अच्छा कटेगा और कटा भी.

हमने राजनीति, फाइनेंस सिक्योरिटीज़, सड़क और मौसम से लेकर नए स्मार्टफ़ोन की भी बात की. मैंने अपना फ़ोन दिखाया. उन्होंने भी अपना फ़ोन दिखाया. उनका भी स्मार्टफ़ोन ही था और एक ही कंपनी का, एक ही मॉडल. सुबह-सुबह ट्रेन पटना पहुंच गई. हम अपना-अपना सामान लेकर नीचे प्लेटफ़ॉर्म में आ गए. सामान ज़्यादा होने की वजह से उन्होंने कुली बुला लिया और वो उसके पीछे-पीछे चल दिए. मेरे पास कुछ ज़्यादा सामान नहीं था, सो मैंने अपना सामान संभाला और प्लेटफ़ॉर्म से बाहर निकलने के लिए आगे बढ़ा ही था, तभी फ़ोन की घंटी बजने लगी, उठाया तो कोई उधर से बंगला भाषा में डांट रहा था कि रात को फ़ोन क्यों नहीं किया? और न जाने क्या-क्या !

मुझे समझते देर नहीं लगी कि फ़ोन की अदला-बदली हो चुकी है. उस समय फ़ोन लॉक का सिस्टम नहीं था. जल्दी से मैंने अपने फ़ोन पर कॉल किया और उन्हें स्थिति से अवगत कराया और बाद में जो क़िस्सा-कहानी हुई, हंसते-हंसते हमारा बुरा हाल हो गया था. वैसे अब हम अच्छे दोस्त हैं.

84% यूजर्स जागते ही चेक करते हैं अपना फोन

बीसीजी के सेंटर फॉर कस्टमर इन साइट्स इंडिया के एक रिसर्च के मुताबिक लगभग 50% बार, उपभोक्ताओं को यह समझ नहीं आता कि वे अपना फोन क्यों उठाते हैं – यह बस एक आदत है. सेंटर फॉर कस्टमर इनसाइट्स इंडिया की लीड कनिका सांघी ने कहा कि हमारे रिसर्च में, हमने देखा है कि उपभोक्ता लगभग 55% समय अपने फोन उठाने के इरादे के बारे में अनिश्चित थे, जबकि 50% समय वे इसके बारे में स्पष्ट थे. इसके अतिरिक्त, 5 से 10% समय, उपभोक्ताओं को अपने उद्देश्य पर कुछ स्पष्टता थी. औसतन, स्मार्टफोन यूजर्स दिन में 70 से 80 बार अपना फोन चेक करते हैं. स्मार्टफोन जिस काम के लिए सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जाते हैं, उनमें शामिल है सामाजिक मेलजोल, खरीदारी, सर्च और गेमिंग. रिसर्च में देखा गया कि यूजर्स अपना लगभग आधा समय स्ट्रीमिंग ऐप्स पर बिताते हैं, जिसमें गेमिंग और शॉपिंग का प्रतिशत 5-8% है. इस रिसर्च के मुताबिक 84% यूजर्स जागने के 15 मिनट के भीतर अपने फोन को चेक करते हैं.

तीन गैजेट्स मेरे लिए ज़रूरी है

बॉडी वेइंग मशीन, ईअर बड्स और स्मार्ट स्पीकर्स

जब ईयर बड्स हुआ दूर

डॉ हरेन्द्र सिन्हा

वह पटना-दिल्ली की वायु यात्रा थी. जब मैंने वायुयान में विंडो सीट पर अपना निर्धारित स्थान ग्रहण कर लिया तो मेरे बगल की सीट पर 5-6 साल के एक साहबजादे और उनके बगल में उनकी माताजी बैठी हुई थीं. जब विमान का टेक ऑफ हो गया उसके बाद मैंने सोचा कि कुछ गाने सुने जाएं, जो कि यात्रा में समय गुज़ारने का मेरा फेवरिट शौक होता है. मैंने अपने स्लिंग बैग में अपना ईअर बड खोजा, जो नहीं मिला. शायद भूलवश मैंने उसे लगेज बैग में डाल दिया था. मरता क्या न करता, लगभग 2 घंटे का यह सफ़र बिल्कुल तन्हा काटना था, मैंने अपना फोन ऑन किया और जो डाउनलोडेड गाने थे, उन्हें सुनना शुरू किया. थोड़ी ऊंचाई पर जाने से मेरे कान में कुछ हल्की सी समस्या आती है. तो लगता है कि शायद मैंने वॉल्यूम थोड़ा ऊंचा ही रखा था. मेरे बगल वाले बच्चे ने एक बार मेरी शक्ल को निहारा पर कुछ बोला नहीं. इसी तरह से दो-तीन-चार गाने गुज़र गए और उसको लगा होगा कि मेरी ये गीत-माला दिल्ली तक चलेगी. मैंने ध्यान दिया कि उसने अपने मम्मी से कहा कि 'मम्मी, मेरा बैग ऊपर से उतार दो.' मम्मी को समझ नहीं आया, उसने पूछा कि 'क्या करोगे बैग का.' पर वो अपनी बात पर अड़ा रहा. अंत में मम्मी ने उसे बैग उतार कर दिया जो सुंदर सा स्पाइडर-मैन वाला बैग था. बैग को पूरी तरह से खोज-खाज कर उसने एक ईअर फोन निकाला और मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा कि 'अंकल, आप प्लीज इसे कान में लगा कर सुनिए.' अब मेरा तो काटो तो ख़ून नहीं. मुझसे वो लेते भी नहीं बन रहा था और इनकार करते भी नहीं बन रहा था. अंदर ही अंदर बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई. मैंने लगभग क्षमा याचना भरे स्वर में कहा - 'देखो बेटे, मेरा ईअर फोन था मेरे पास, लगता है कि गलती से वो लगेज में चला गया है. 'कोई बात नहीं, हो जाता है' उस छोटू ने मुझे समझाने की कोशिश की. न चाहते हुए भी, बहुत शर्मिंदगी के साथ, मैंने उससे ईयर फोन ले लिया. और शायद उसके चेहरे पर बहुत इत्मीनान के भाव आ गए, शायद मेरी गीत माला से जान छूटने के कारण. उसके बाद से कभी मैं इअर बड्स को छोड़कर नहीं जाता. पर कहानी इतने पर ही ख़त्म नहीं हुई. जब हम लोग दिल्ली पहुंचे तब तक वो सो गया था. सभी उठकर चल दिए और मैं भी ईअर फोन लौटाना भूलकर उसे कान में लगाए हुए आराम से उठकर अपना सामान लेकर निकल गया. आज भी वो ईअर फोन मेरे पास एक स्मृति चिन्ह के रूप में रखा हुआ है. जब उसे देखता हूं थोड़ी शर्मिंदगी होती है और उस प्यारे बच्चे की शक्ल याद आती है. न जाने क्या सोचा होगा उसने.

तीन गैजेट्स मेरे लिए ज़रूरी है

हैंड मिक्सर ग्राइंडर, इंडक्शन स्टोव और स्मार्ट वॉच.

जब मेहमान के आने पर खराब हो गई मिक्सी

बिंदु प्रसाद रिद्धिमा

बात बहुत पहले की है. मैं अपनी कॉलेज की सहेलियों को दोपहर के खाने पर बुलायी थी.सभी को मेरे कुकिंग हॉबी के बारे में पता था,, उन्होंने झारखंडी खाने की फरमाइश रखी. मैंने भी धुसका मटन की तैयारी कर रखी थी. सारी तैयारियाँ हो गई थी .बस धुसके के घोल के लिए चावल दाल पीसना बचा था. मैंने मिक्सर ग्राइंडर में के जार में चावल दाल डालकर स्विच ऑन किया तो मिक्सी चले ही नहीं , अब तो मैं बहुत परेशान हुई. मेरे पास दूसरी मिक्सी भी नहीं थी और कहीं से मिलने की उम्मीद भी नहीं थी .मैं चुपचाप किचन में थोड़ी देर खड़ी रही फिर निर्णय लिया कि जाकर ड्राइंग रूम में सहेलियों को बताती हूँ कि आज धुसका तो नहीं बन पाएगा पुलाव से ही काम चलाना पड़ेगा. मेरा प्रिय गैजेट्स मानो मुँह चिढ़ा रहा था,,,खुद पर ही बहुत गुस्सा आ रहा था कि मैंने क्यों नहीं घोल पहले बना कर रख लिए कुछ तो उपाय निकल ही जाता. ड्राइंग रूम में सहेलियों के पास जाकर मैंने अपनी समस्या और मेनू चेंज की बात बताई. सब ने इस समस्या को हल्के में लिया और बात आई-गई हो गई. अभी 10 मिनट भी नहीं बीते थे कि किचन से मिक्सी चलने की आवाज आई,,, जाकर देखा तो मेरी एक इंजीनियर सहेली उसके पार्ट्स पुर्जे खोलकर उसे सही कर मिक्सर ग्राइंडर के जार में चावल दाल डालकर पीस रही थी. अपने अनुभव से मैं कह सकती हूं कि इलेक्ट्रिकल इलेक्ट्रॉनिक्स गैजेट्स पर 100% भरोसा कभी नहीं किया जा सकता.

तीन गैजेट्स मेरे लिए ज़रूरी है

स्मार्टफोन, लैपटॉप/कंप्यूटर, कॉफी मेकर

जब खो गया स्मार्ट फोन

आशुतोष प्रसाद

एक बार ट्रैवलिंग के दौरान ट्रेन में अपना स्मार्टफोन भूल गया. तब मेरे पास परिवार और दोस्तों के नंबर तक नहीं थे, जिससे किसी को सूचित करना भी मुश्किल हो गया. फोन खोने के साथ ही सोशल मीडिया अकाउंट्स और बैंकिंग ऐप्स तक पहुंच भी चली गई. पासवर्ड्स और टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन के कारण तुरंत एक्सेस मिलना मुश्किल हो गया, जिससे बैंकिंग से जुड़ी जरूरी गतिविधियां भी रुक गईं. ट्रैवलिंग के दौरान गूगल मैप्स का इस्तेमाल हम सभी करते . फोन खोने से सही रास्ता ढूंढने और लोकेशन के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मुझे बहुत दिक्कतें आईं. फोन में कई यादगार तस्वीरें और वीडियो सेव थे जो मेरे लिए बहुत कीमती थे. हालांकि कुछ क्लाउड में सेव थे, लेकिन कई तस्वीरें केवल फोन की इंटरनल मेमोरी में ही थीं. ऑफिस का काम काफी हद तक फोन पर निर्भर था, जैसे ईमेल, क्लाइंट मीटिंग्स, और नोट्स. फोन खोने से ऑफिस का काम भी प्रभावित हुआ, जिससे प्रोजेक्ट्स में देरी हो गई. इस घटना के बाद, मैंने क्लाउड बैकअप को नियमित रूप से अपडेट रखना, फोन को लॉक करने के लिए पिन और फिंगरप्रिंट का उपयोग करना, और फोन-फाइंडर ऐप्स का इस्तेमाल करने जैसे उपाय अपनाए ताकि भविष्य में इस तरह की स्थिति से बचा जा सके.

कार की लंबी यात्रा में साथ हों ये गजेट्स

यदि आप कार से लंबे सफर की योजना बना रहे हैं तो यकीनन यह एक बेहतर ही अनुभव होगा. अपनी कार में अपनी सुविधा के अनुसार सफर संभव होता है. लेकिन कार का लंबा सफर कई चुनौतियों के साथ होता है, इसमें कोई दो राय नहीं. कार से लंबे सफर के लिए कुछ खास तैयारी जरूरी है. जब कार से लंबी यात्रा के लिए निकल रहे हैं तो अपने साथ कुछ गैजेट्स हमेशा साथ रखें. इससे सफर सुरक्षित और आरामदायक होगा.

- **पंचर किट**
दो पहिया हो या चार पहिया, कब टायर में पंचर हो जाएगा, कहना मुश्किल है. ऐसे में मंजिल तक पहुंचने में परेशानी लाजिमी है. असुविधा के साथ मसला सुरक्षा का भी हो जाता है. इसलिए अगर कार में पंचर किट की मौजूदगी कई समस्याओं से राहत दिलाती है. पंचर किट गर साथ रहेगा तो सफर के दौरान पंचर टायर को खुद ही दुरुस्त कर आगे की दूरी तय की जा सकती है.

- **डैश कैम**
मार्केट में कई तरह के डैश कैम के ऑप्शन उपलब्ध हैं. इसका उपयोग फ्रंट के साथ ही बैक में भी किया जा सकता है. एप के जरिए इनको उपयोग करना आसान हो जाता है. हादसा होने पर यह कार सवार को सुरक्षित रखने में मदद करता है.

- **टायर इनफ्लेटर**
अगर लंबे सफर में टायर में हवा कम हो जाए या फिर टायर पंचर हो जाए तो टायर इनफ्लेटर की मदद से खुद ही हवा भर कर सफर को जारी रखा जा सकता है. इन दिनों कई कंपनियां अपनी कारों के साथ टायर प्रैशर मॉनिटरिंग सिस्टम जैसे फीचर देती है. यह फीचर कार ड्राइव करते समय भी हमें हर टायर्स में हवा के सही प्रैशर की उपलब्ध कराता है.

- **नाइट विजन ग्लासेज**
रात के सफर को नाइट विजन ग्लासेज आसान बनाएगा. इससे विजिबिलिटी भी बेहतर हो जाएगी.

नासा को मिला एक और चंद्रमा!

नासा के वैज्ञानिकों ने एक ऐसे चंद्रमा की खोज की है जो बुझने से पहले के दीप की तरह अशांत है. उसकी सतह पर लावा फूट रहा है. इससे जहरीली गैस निकल रही है. साथ ही यह बिजलियां भी उगल रहा है. यकीनन यह चंद्रमा हमारे चंद्रमा जैसा शांत नहीं है.

ज्वालामुखी की तरह फट रहे इस चंद्रमा की मौत जल्द होने वाली है. यह जिस डब्ल्यूएएसपी – 49 बी ग्रह का चक्कर लगा रहा है, वह भी अलग एलियन दुनिया है. वह ग्रह और उसका तारा दोनों धधक रहे हैं. यह चंद्रमा अपने ग्रह और तारे के बीच में हैं. इसलिए दोनों तरफ से गर्मी मिल रही है. इसका जन्म एक धातु के बादल जैसा हुआ होगा.

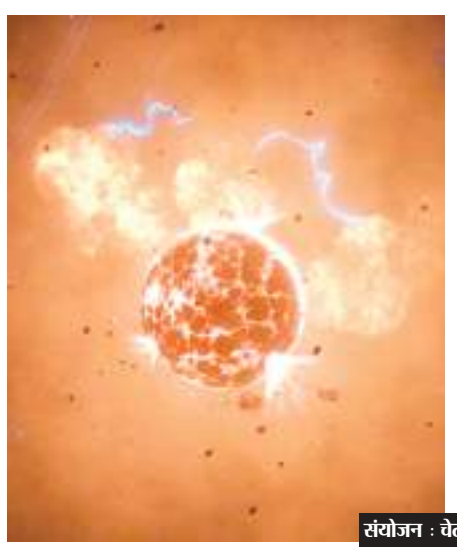

नासा वैज्ञानिक रोसाली लोप्स ने कहा कि यह चंद्रमा हर सेकेंड अंतरिक्ष में 1 लाख किलोग्राम सोडियम उगल रहा है. इतना सोडियम तो डब्ल्यूएएसपी – 49 बी ग्रह के अंदर भी नहीं होगा. यह चंद्रमा खुद से सोडियम का बादल बना रहा है. जबकि ये काम आमतौर पर कोई ग्रह या तारा ही करता है. अगर वैज्ञानिकों की टीम कन्फर्म करती है तो डब्ल्यूएएसपी – 49 बी का यह लावा उगलता हुआ चंद्रमा सौर मंडल से बाहर पहला एक्सोमून घोषित होगा.

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

विराट कोहली और अनुष्का शर्मा ने करवा चौथ को खास अंदाज में सेलिब्रेट किया

करवा चौथ पर कीर्तन में शामिल हुए 'विरुष्का', साथ में गाए भजन, बजाई तालियां

एजेंसी। मुंबई

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा और उनके क्रिकेटर पति विराट कोहली ने करवा चौथ को खास अंदाज में सेलिब्रेट किया. इसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. अनुष्का और विराट करवा चौथ के मौके पर कीर्तन कार्यक्रम में शामिल हुए. कृष्णा दास द्वारा मुंबई में आयोजित कीर्तन में कपल शामिल हुए. अनुष्का जहां प्रिंटेड आउटफिट में नजर आईं. वहीं, कोहली डेनिम के साथ टी-शर्ट और बेसबॉल कैप पहने दिखे. वीडियो में अनुष्का खिलखिलाकर हंसती और कीर्तन का आनंद लेती नजर आ रही हैं.

साथ नहीं दिखे वामिका और अकाय

अनुष्का शर्मा को यहां देख लोगों की हैरानी बड़ी लेकिन फैंस काफी खुश हैं. वह सीक्रेट तौर पर विराट का सपोर्ट करने के लिए इंडिया आई हैं. हालांकि कपल के साथ उनके दोनों बच्चें नहीं दिखे. ऐसा माना जा रहा है कि अनुष्का अपने बच्चों- बेटी वामिका और बेटे अकाय के साथ लंदन शिफ्ट हो गई हैं. हालांकि, कपल ने इसे लेकर कोई कफर्मेशन और कमेंट्स नहीं किया. बता दें, अनुष्का और विराट को प्रशंसक प्यार से 'विरुष्का' कहते हैं. कपल ने दिसंबर 2017 में इटली में शादी की थी.

वीडियो में देखा जा सकता है कि अनुष्का शर्मा और विराट कोहली गुरु और बाकी लोगों के साथ मिलकर भजन गुनगुनाते हुए नजर आए. विराट भी ताली बजाते और मुस्कुराते दिख रहे हैं. विराट और अनुष्का के साथ देख हर कोई हैरान है. दरअसल, दोनों लंबे समय से इंग्लैंड में रह रहे हैं. विराट तो न्यूजीलैंड खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलने के लिए इंडिया आए हैं.

न्यूजीलैंड की टीम ने रचा इतिहास : टी20 विमेंस विश्व कप का खिताब जीता

विश्व कप जीतकर मनाया अनोखा जश्न

एजेंसी। दुबई

न्यूजीलैंड ने साउथ अफ्रीका को हराकर टी20 विश्व कप का खिताब जीत लिया है. न्यूजीलैंड के खिलाड़ियों ने अपनी पहली टी20 विश्व कप जीत का जश्न मनाने के लिए एक शानदार गाना गाया. पुरस्कार समारोह के बाद न्यूजीलैंड की प्लेयर्स एक साथ गाना गाते हुए नजर आई. ऑलराउंडर अमेलिया केर गिटार बजा रही थी. उनके साथ पूरी टीम गाना गा रही थी. इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया. जिसमें न्यूजीलैंड की प्लेयर्स गाना गाते हुए नजर आ रही है. वीडियो को कुछ देर में ही 2 लाख से ज्यादा लाइक्स मिले. वो ट्रॉफी को सामने रखकर गाना गाते हुए नजर आ रहे हैं. वीडियो के कमेंट सेक्शन में फैंस ने न्यूजीलैंड की टीम की जमकर तारीफ की. इसका वीडियो सोशल मीडिया पर काफी तेजी से वायरल हुआ. जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं.

न्यूजीलैंड ने साउथ अफ्रीका को फाइनल मुकाबले में 32 रन से हराया. न्यूजीलैंड के हर प्लेयर ने जीत में अहम योगदान दिया. अमेलिया केर ने टीम की जीत में सबसे ज्यादा योगदान दिया. उन्होंने बल्ले से रन बनाने के बाद गेंदबाजी से भी 3 विकेट अपने नाम किए. हालांकि, साउथ अफ्रीका की टीम इस हार के बाद निराश दिखी. उनकी टीम रोती हुई नजर आई थी.

सोफी डिवाइन ने ऐसा क्यों कहा?

न्यूजीलैंड के टी20 विश्व कप जीतने में है 'भारत का हाथ'

दुबई। न्यूजीलैंड की टीम ने महिला टी20 विश्व कप 2024 का खिताब जीत लिया है. दुबई में हुए फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर यह टीम पहली बार विश्व चैंपियन बनी है. इस ऐतिहासिक जीत के बाद अब कीवी कप्तान सोफी डिवाइन ने अपनी सफलता के पीछे का रहस्य उजागर किया है. न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका पर 32 रनों की जीत के साथ अपना पहला महिला टी20 विश्व कप खिताब जीतने के बाद कप्तान सोफी डिवाइन ने कहा कि भारत पर उनकी 58 रनों की शानदार जीत वह मैच था, जिसने दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में ट्रॉफी तक उनके जाने की नींव रखी. न्यूजीलैंड लगातार 10 टी20 मैच हारने के बाद टूर्नामेंट में उतरा था, लेकिन महिला टी20 विश्व कप 2024 जीतने के लिए उसने अपनी क्षमता से अधिक प्रदर्शन किया.

फाइनल में जीत के बाद न्यूजीलैंड की कप्तान सोफी डिवाइन ने बताया, किसी एक मैच या एक लम्हे को अपनी जीत का श्रेय देना मुश्किल है. शायद इसी टूर्नामेंट में भारत के खिलाफ जीत ने हमारे लिए एक शानदार मंच तैयार किया. मेरा मानना है कि पिछले साल दक्षिण अफ्रीका में हुए विश्व कप के बाद हमारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भारत के खिलाफ ही आया था और टीम इंडिया को हराने के बाद सब कुछ सही होता चला गया. जैसा कि मैंने बताया कि इस टीम में प्रतिबद्धता और आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ था. हमें बस दिखाना था कि हम इतिहास रच सकते हैं. सोफी के लिए यह तीसरी बार मौका था, इससे पहले वो 2009 और 2010 में उस न्यूजीलैंड टीम का भी हिस्सा थीं, जो टूर्नामेंट में उपविजेता रही थी. दुबई में 2000 महिला वनडे विश्व कप के बाद अपने दूसरे विश्व कप में जीत के साथ, सोफी को उम्मीद है कि 20 अक्टूबर की जीत भविष्य की पीढ़ियों को और अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगी.

दीपिका कुमारी ने तीरंदाजी विश्व कप फाइनल में सिल्वर मेडल जीता

एजेंसी। टूलाक्सकाला (मैक्सिको)

भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी ने तीरंदाजी वर्ल्ड कप फाइनल में सिल्वर मेडल जीतकर अपना छठा वर्ल्ड कप फाइनल मेडल हासिल किया. फाइनल मुकाबले में उन्हें चीन की ली जियामन से 0-6 से हार का सामना करना पड़ा. 2010 के कॉमनवेल्थ गेम्स की चैंपियन दीपिका ने क्वार्टर और सेमीफाइनल में शानदार प्रदर्शन किया था. उन्होंने ली की चीनी साथी यांग जियाओली को 6-0 से हराया और फिर ब्रॉन्ज मेडल जीतने वाली एलेजांद्रा वैलेंसिया को 6-4 से उनके ही घर में मात दी. दीपिका ने कहा, इस वर्ल्ड कप का हिस्सा बनना और जीतना मेरे लिए सम्मान की बात है. अब मैं इससे भी ज्यादा मेहनत करूंगी. वहीं, ली ने अपने पहले ही प्रयास में इस प्रीमियर अंतरराष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिता का खिताब जीत लिया. इस टूर्नामेंट में दुनिया के शीर्ष 8 तीरंदाज हिस्सा लेते हैं, जो या तो तीन वर्ल्ड कप स्टेज में से एक जीतकर या अपनी वर्ल्ड रैंकिंग के आधार पर क्वालीफाई करते हैं. ली ने कहा, पहला मुकाबला थोड़ा तनावपूर्ण था, लेकिन आखिरी दो मुकाबले कुछ ज्यादा चुनौतीपूर्ण लगे. मैंने अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन पहले मैच की तुलना में बाद के मैचों में मैं कम नर्वस थी. मैं बस अच्छे तीर मारने की कोशिश कर रही थी, जीत या हार के बारे में ज्यादा नहीं सोचा. पांच सदस्यीय भारतीय टीम, जिसमें तीन कंपाउंड और दो रिकर्व तीरंदाज थे, ने इस सीजन के आखिरी टूर्नामेंट में एक मेडल के साथ अपना अभियान समाप्त किया.

फील्ड हॉकी ग्लासगो में राष्ट्रमंडल 2026 खेलों का हिस्सा नहीं होगी

एजेंसी। नयी दिल्ली

फील्ड हॉकी गेम 2026 के राष्ट्रमंडल खेलों से बाहर होगा, सूत्रों के अनुसार यह जानकारी मिली है. सूत्रों के अनुसार, 2026 के राष्ट्रमंडल खेलों में फील्ड हॉकी नहीं खेली जाएगी. इसकी आधिकारिक घोषणा कभी भी हो सकती है. 2022 के बर्मिंघम गेम्स में 19 खेल शामिल थे, लेकिन 2026 के ग्लासगो गेम्स में सिर्फ 10 खेल होंगे, ऐसा आयोजन समिति ने पहले ही बताया था. 2022 के राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने कुल 61 पदक जीते थे, जिनमें से 22 स्वर्ण पदक थे. कुश्ती (12), भारोत्तोलन (10), एथलेटिक्स (8), बॉक्सिंग और टेबल टेनिस (7-7) ने सबसे ज्यादा पदक दिए थे. फील्ड हॉकी 1998 से राष्ट्रमंडल खेलों का हिस्सा रही है, और इसमें ऑस्ट्रेलिया की पुरुष और महिला टीमों का दबदबा हमेशा बना रहा है. ऑस्ट्रेलियाई पुरुष टीम ने सभी सात बार (1998, 2002, 2006, 2010, 2014, 2018 और 2022) में स्वर्ण पदक जीते हैं.

मुंबई ने महाराष्ट्र को 9 विकेट से हराया

नयी दिल्ली। टीम इंडिया से बाहर चल रहे श्रेयस अय्यर ने रणजी ट्राफी में शानदार शतक जड़कर अपनी फॉर्म का सबूत दिया. साथ ही अपनी टीम मुंबई को शानदार जीत दिलाई. मुंबई ने रणजी ट्रॉफी के अपने दूसरे मुकाबले में महाराष्ट्र को 9 विकेट से करारी शिकस्त दी. मुंबई की यह रणजी ट्रॉफी 2024 में पहली जीत है. उसे अपने पहले मैच में हार का सामना करन पड़ा था. महाराष्ट्र और मुंबई के बीच रणजी ट्रॉफी का मुकाबला मुंबई में खेला गया. मुंबई ने मैच की पहली पारी में महाराष्ट्र को 126 रन पर ढेर किया. इसके बाद 441 रन का विशाल स्कोर बनाया. इस तरह मुंबई को पहली पारी में 315 रन की बढ़त मिली. मुंबई के यह बढ़त दिलाने में आयुष म्हात्रे (176) श्रेयस अय्यर (142) का अहम योगदान उतरा. 300 से ज्यादा रन से पिछड़ी महाराष्ट्र के लिए कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ ने 145 रन की पारी खेली.

लंदन पावर चैलेंज यूके आईपीएल क्वालीफायर चैंपियनशिप

गौरव के पल : गुरदित सिंह ने 4 स्वर्ण जीते

एजेंसी। नयी दिल्ली

21 साल के गुरदित सिंह ने लंदन पावर चैलेंज यूके आईपीएल क्वालीफायर चैंपियनशिप में 4 स्वर्ण जीते हैं. यह द्रोणाचार्य भूपेन्द्र धवन और टीम द्रोणाचार्य द जिम के लिए गर्व का क्षण है. एनसीपीई में बीपीएड कर रहे 21 वर्षीय प्रथम वर्ष के छात्र गुरदित सिंह ने कुल 4 स्वर्ण पदक जीत कर एक इतिहास रचा है. लंदन में 19-20 अक्टूबर, 2024 को आयोजित लंदन पावर चैलेंज यूके आईपीएल क्वालीफायर में जूनियर और ओपन श्रेणी में 120 किलोग्राम वजन वाले गुरदित सिंह ने 125 किलो भार वर्ग में कुल 665 किलो वजन उठाया व दोनों में सर्वश्रेष्ठ पॉवरलिफ्टर का पुरस्कार जीता. यूके आईपीएल के अध्यक्ष डेल लॉन्गफ़ोर्ड ने इस युवा खिलाड़ी की बहुत प्रशंसा की. वास्तव में, यह भारत में खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम का परिणाम है, जो एथलीटों के लिए खेल सुविधाओं को विकसित करने पर केंद्रित है ताकि उन्हें अपनी पूरी क्षमता हासिल करने में मदद मिल सके. गुरदित सिंह का स्वर्णिम प्रदर्शन निश्चित रूप से युवाओं को आगे आने के लिए प्रेरित करेगा और उनमें खेल में अपना भविष्य का करियर बनाने के लिए आत्मविश्वास की भावना पैदा करेगा. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बॉडी बिल्डिंग और पावरलिफ्टिंग कोच द्रोणाचार्य भूपेंद्र धवन ने गुरदित सिंह के प्रदर्शन की सराहना की और उन्हें भविष्य की प्रतियोगिताओं में सफलता हासिल करने का आशीर्वाद दिया.

ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारतीय ए टीम घोषित

ईशान की हुई वापसी, ऋतुराज को मिली कमान

नयी दिल्ली. ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारतीय ए टीम घोषित कर दी है. इस 15 सदस्यीय टीम में विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन को भी शामिल किया गया है जिनकी लंबे समय बाद भारतीय टीम में वापसी हुई है. भारत इस दौरे पर ऋतुराज गायकवाड़ की अगुआई में जाएगा. भारत और ऑस्ट्रेलिया की सीनियर टीमों के बीच 22 नवंबर से पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जानी है और इससे पहले दोनों टीमों की ए टीमें दो मैच खेलेंगी.

बीसीसीआई ने बयान में कहा, पुरुष चयन समिति ने आगामी ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए 15 सदस्यीय टीम का चयन किया है. इंडिया ए ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैकॉय और मेलबर्न में दो प्रथम श्रेणी मैच खेलेगी और फिर पर्थ में भारत की सीनियर टीम के खिलाफ इंट्रा स्क्वायड मुकाबला खेलेगी.

बीसीसीआई ने केंद्रीय अनुबंध से किया था बाहर : ईशान को घरेलू क्रिकेट को प्राथमिकता नहीं देने के कारण बीसीसीआई ने केंद्रीय अनुबंध से बाहर कर दिया था, लेकिन अब वह टीम में वापसी करने में सफल रहे हैं. ईशान पिछले साल वनडे विश्व कप के बाद दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए भारतीय टीम का हिस्सा थे, लेकिन उन्होंने सीरीज के बीच में ही ब्रेक ले लिया था. बीसीसीआई हालांकि उनके इस फैसले से खुश नहीं था. आईपीएल 2024 से पहले ईशान ने घरेलू टूर्नामेंट में भी हिस्सा लिया था जिस कारण बीसीसीआई ने उन्हें केंद्रीय अनुबंध से बाहर कर दिया था. ईशान तभी से भारतीय टीम में वापसी नहीं कर सके थे. तत्कालीन मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने कहा था कि ईशान जब भी भारतीय टीम में वापसी करेंगे तो उन्हें इसके लिए घरेलू टूर्नामेंट में खेलना होगा. रणजी ट्रॉफी के मौजूदा सत्र में झारखंड की अगुआई करने वाले ईशान ने हाल ही में घरेलू क्रिकेट में अपना दम दिखाया था. ईशान ने दलीप ट्रॉफी में हिस्सा लिया था और वह ईरानी कप में मुंबई के खिलाफ शेष भारत टीम का भी हिस्सा थे. भारत और ऑस्ट्रेलिया की ए टीमों के बीच पहला टेस्ट 31 अक्तूबर से तीन नवंबर तक खेला जाएगा, जबकि दूसरा टेस्ट सात से 10 नवंबर तक होगा. इसके बाद पर्थ में 15 से 17 नवंबर के बीच इंट्रा स्क्वायड मुकाबला खेला जाएगा.

रणजी ट्रॉफी सबसे ज्यादा दोहरे शतक लगाने वाले भारतीय

पुजारा ने छत्तीसगढ़ के खिलाफ शानदार दोहरा शतक जड़ा

एजेंसी। नयी दिल्ली

चेतेश्वर पुजारा को भले ही टीम इंडिया से बाहर रखा गया है, लेकिन ये खिलाड़ी अब भी ताबड़तोड़ रनों की बरसात कर रहा है. पुजारा इस वक्त रणजी ट्रॉफी में सौराष्ट्र के लिए खेल रहे हैं और इस दिग्गज खिलाड़ी ने छत्तीसगढ़ के खिलाफ बड़ा कमाल कर दिखाया है. पुजारा ने छत्तीसगढ़ के खिलाफ शानदार दोहरा शतक जड़ा. पुजारा ने 350 से ज्यादा गेंदों का सामना करते हुए दोहरा शतक जमाया. पुजारा ने खबर लिखे जाने तक अपनी पारी में 22 चौके लगा दिए थे. बड़ी बात ये है कि पुजारा ने अपने फर्स्ट क्लास करियर में 18वीं बार डबल सेंचुरी लगाई. चेतेश्वर पुजारा फर्स्ट क्लास क्रिकेट में सबसे ज्यादा दोहरे शतक लगाने वाले खिलाड़ी हैं. दाएं हाथ का ये बल्लेबाज 18 दोहरे शतक लगा चुका है. इसके बाद विजय मर्चेंट ने 11 और विजय हजारे ने 10 दोहरे शतक लगाए थे. गावस्कर, राहुल द्रविड़ के नाम भी 10-10 दोहरे शतक हैं. वैसे सबसे ज्यादा दोहरे शतक लगाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड डॉन ब्रैडमैन के नाम है, जिन्होंने 37 बार ये कारनामा किया था. हैमंड ने 36 दोहरे शतक लगाए थे. क्या होगी टीम इंडिया में वापसी?

चेतेश्वर पुजारा 2023 वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल के बाद से ही टीम इंडिया से बाहर हैं. ये खिलाड़ी लगातार रन पर रन बनाकर टीम इंडिया में वापसी के दरवाजे खटखटा रहा है. पुजारा ने इसी साल 16 मैचों में 6 शतक लगा दिए हैं. साथ ही इस दोहरे शतक के दौरान उनके फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 21 हजार रन भी पूरे हो गए. पुजारा के नाम 66 फर्स्ट क्लास शतक हैं और वो ब्रायन लारा से आगे निकल गए हैं.

ऑस्ट्रेलिया दौरा है नजदीक

टीम इंडिया को अगले महीने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाना है जहां वो पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलेगी. उस दौरे पर पुजारा टीम इंडिया के काम आ सकते हैं. पुजारा का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ लगभग 50 का औसत है और ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर वो 3 शतकों के दम पर 993 रन बना चुके हैं और उनकी बैटिंग एवरेज 47 से ज्यादा की है. अगर टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया दौरे पर अनुभव के साथ जाती है तो पुजारा सही दावेदार हो सकते हैं.

इथियोपियाई एथलीटों ने जीता एम्स्टर्डम मैराथन

द हेग। इथियोपिया के एथलीट त्सेगाये गेटाचेव ने रविवार को एम्स्टर्डम मैराथन जीत लिया है, जबकि यालेमजेरफ येहुआलॉ महिला वर्ग में जीत हासिल की. गेटाचेव ने 2:05:38 के समय के साथ एम्स्टर्डम मैराथन में अपनी दूसरी जीत हासिल की. उनके ठीक पीछे इथियोपिया के बोकी असेफा थे, जो 2:05:40 के समय के साथ दूसरे स्थान पर रहे, और इज़राइल के मारू टेफरी, जो 2:05:42 के समय के साथ तीसरे स्थान पर आए. महिलाओं की दौड़ में, पसंदीदा यालेमज़र्फ येहुआलॉ ने 2:16:52 में जीत हासिल करते हुए एक नया कोर्स रिकॉर्ड बनाया. इथियोपिया की ही हेवन हैलू 2:19:29 के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ दूसरे स्थान पर रहीं, जबकि केन्या की विनफ्रिदा मोसेटी तीसरे स्थान पर रहीं.

राउंडग्लास पंजाब एफसी ने खोले छह नए विकास केंद्र

- स्थानीय फुटबॉल प्रतिभाओं को बढ़ावा देना है उद्देश्य

एजेंसी। मोहाली

राउंडग्लास पंजाब एफसी ने पंजाब भर में छह नए विकास केंद्रों की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य अगली पीढ़ी के फुटबॉल खिलाड़ियों को पोषित करना है. इस विस्तार के साथ, राउंडग्लास पंजाब एफसी अब 15 विकास केंद्र संचालित कर रहा है, जो जमीनी स्तर पर फुटबॉल को बढ़ावा देने और क्षेत्र के युवा खिलाड़ियों को सशक्त बनाने के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है. नए केंद्र पंडोरी रण सिंह और बिबीपुरा (तारन तारन), धिलवां (कपूरथला), जैतो सरजा (गुरदासपुर), संत बाबा हरि सिंह मॉडल स्कूल (महलपुर), और मुस्ताबाद (फतेहगढ़ साहिब) में कार्यरत होंगे. इन नए विकास केंद्रों में कुल 560 बच्चों - 470 लड़कों और 90 लड़कियों - को प्रशिक्षण दिया जाएगा. इन केंद्रों में फुटबॉल खिलाड़ियों को व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम, विशेषज्ञ कोचिंग और महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान किए जाएंगे, ताकि वे अपने कौशल को निखार सकें और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सकें. यह पहल राउंडग्लास स्पोर्ट्स के मिशन का हिस्सा है, जिसमें खेल सहभागिता को युवाओं के समग्र कल्याण (शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक आयामों) का एक आवश्यक घटक माना गया है.

ब्रीफ खबरें

मुख्यमंत्री ने मौत पर जताई शोक संवेदना

पटना । सीएम नीतीश कुमार ने जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में हुए आतंकी हमले में बिहार के तीन श्रमिकों की मौत पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है. सीएम ने कहा है कि यह घटना अत्यंत दुखद है और मैं इस घटना से मर्माहत हूं. सीएम ने इस आतंकी हमले में तीनों मृतकों के निकटतम आश्रितों को सीएम राहत कोष से 02-02 लाख रुपये देने की घोषणा की है. साथ ही अन्य लाभ दिलाने का निर्देश दिया है. साथ ही सीएम ने मृतकों के परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है.

10 माह को मासूम ने चबाया सांप, हड़कंप

नवादा । नवादा में सोमवार को एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है, जहां एक 10 माह के बच्चे ने सांप को मुंह में दबा लिया. इस घटना के बाद पूरे गांव में सनसनी फैल गयी. ये पूरा मामला नवादा नगर थाना क्षेत्र के शिवनगर मोहल्ले का है. बताया जा रहा है कि शिवनगर मोहल्ले के निवासी चंद्रमणिकांत का 10 माह का बच्चा हर्ष राज घर में खेल रहा था. तभी सांप उसके पास आया, जिसे हर्ष ने नादानी में उसे पकड़ लिया और खेलते-खेलते उसे अपने मुंह में दबा लिया. हालांकि, जब बच्चे पर उसके पिता की नजर गई तो वह हैरान रह गए. बच्चे के मुंह से उस सांप को निकाला और फिर सांप को मार डाला.

छपरा में पैर फिसलने से नदी में डूबा युवक

छपरा । छपरा जिले के मशरक थानाक्षेत्र में अहले सुबह शौच के लिए गए 20 वर्षीय युवक गोलू कुमार की नदी में डूबने से मौत हो गई. घटना चांद कुदरिया पंचायत के सुंदर गांव के घोघारी नदी में हुई. मृतक गोलू कुमार, मोगल राय का इकलौता बेटा था और सेना में भर्ती की तैयारी कर रहा था. जानकारी के मुताबिक, गोलू रोज सुबह दौड़ने से पहले नदी किनारे शौच करने जाया करता था. सोमवार को उसका पैर फिसल गया, जिससे वह गहरे पानी में चला गया और डूब गया. घटना के बाद लगभग तीन घंटे की मशक्कत के बाद उसका शव निकाला जा सका.

पीपी ज्वेलर्स में 20 मिनट में 40 लाख की डकैती

दो लुटेरों को मालिक ने मारी गोली, दो हुए फरार, भीड़ ने भी जमकर की पिटाई

संवाददाता । बेगूसराय

घटना के बाद उमड़ी भीड़ .

बेगूसराय में अपराधियों ने सोमवार को दिनदहाड़े पीपी ज्वेलर्स में बड़ी लूट को अंजाम दिया है. इस दौरान लुटेरों ने ज्वेलरी शोरूम से 40 लाख के आभूषण की लूट को अंजाम दिया. वहीं भागने के दौरान शोरूम के मालिक ने फायरिंग की, जिसमें दो लुटेरों को गोली लग गई. बाद में वहीं जुटी भीड़ ने दोनों को पकड़ लिया और उसकी जमकर पिटाई की. वहीं सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों लुटेरों को भीड़ से बचाते हुए अपने कब्जे में ले लिया और अस्पताल लेकर गई. घटना पटेल चौक के पास पीपी ज्वेलर्स की है.' घटना को लेकर शॉप के मालिक प्रमोद पोद्दार ने बाद धनतेरस का मौका होने के कारण हम लोग उसकी तैयारी में लगे थे. दुकान पर मेरा बेटा राजीव मौजूद था. इसी दौरान 'करीब 1 बजे मेरा दो बदमाश अंदर आए और फर्स्ट फ्लोर पर ज्वेलरी देखने लगे. इसके बाद दो और बदमाश अंदर घुसे.

सभी के पास पिस्टल थी. अंदर घुसते ही उन्होंने लूटपाट शुरू कर दी. विरोध करने पर फायरिंग भी की. गोली मेरे बेटे राजीव और स्टाफ अजय को लगी. वे दोनों घायल हैं. वहीं इस दौरान 'बदमाश 35 से 40 लाख रुपए के आभूषण ले गए. धनतेरस को लेकर हम लोग तैयारी कर रहे थे. प्रमोद पोद्दार ने बताया कि पहले ही प्रशासन को सूचना दे दी थी, लेकिन प्रशासन ने सुरक्षा के उपाय नहीं किए. एक पिस्टल का लाइसेंस दिया गया, राइफल का लाइसेंस मांग रहे हैं.' एसपी मनीष सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंची गई है. सीसीटीवी की जांच की जा रही है. फिलहाल, गिरफ्त में आए दो लुटेरे पुलिस के लिए अहम कड़ी साबित होंगे. पुलिस का कहना है कि इस कांड के जुड़े सभी लोगों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा.

गोपालगंज में दुकानदार को मारी गोली

घटना के बाद भीड़ ने अपराधी को पीट-पीटकर मार डाला

संवाददाता । गोपालगंज

गोपालगंज जिले के थावे थानाक्षेत्र के जगदीशपुर मोड़ पर सोमवार सुबह बाइक सवार अपराधियों ने एक खाद-बीज भंडार के मालिक पवन सिंह को गोली मारकर घायल कर दिया. वारदात को अंजाम देने के बाद भाग रहे चार में से एक अपराधी भीड़ के हत्थे चढ़ गया, जिसे गुस्साई भीड़ ने पीट-पीटकर मौत के घाट उतार दिया. इस घटना ने पूरे इलाके में दहशत और आक्रोश फैला दिया है. जानकारी के मुताबिक, घायल पवन सिंह जगदीशपुर मोड़ पर खाद-बीज भंडार चलाते हैं. पवन पर उस समय हमला हुआ जब वह अपनी दुकान पर बैठे थे. दो बाइक पर सवार चार अपराधियों ने दुकान पर धावा बोला और पवन सिंह पर गोली चला दी. गोली लगने के बाद पवन गंभीर रूप से घायल हो गए. स्थानीय लोग तुरंत हरकत में आए और भाग रहे अपराधियों में से एक को पकड़ लिया. पकड़े गए अपराधी की पहचान अभिषेक ठाकुर के रूप में हुई, जो कि गोपालगंज जिले के थावे थानाक्षेत्र के रामचंद्रपुर पंडित टोला गांव का निवासी था. गुस्साई भीड़ ने उसे पीट-पीट कर मार डाला. वहीं, घायल दुकानदार पवन सिंह को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है. वहीं, पुलिस ने अपराधी अभिषेक ठाकुर के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है.

सम्राट अशोक कन्वेंशन केंद्र स्थित बापू सभागार में हुआ समारोह

सीएम ने 1,239 नवनियुक्त पुलिस अवर निरीक्षकों को मिला नियुक्ति पत्र

संवाददाता । पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को सम्राट अशोक कन्वेंशन केंद्र स्थित बापू सभागार में आयोजित कार्यक्रम में 1,239 नवनियुक्त पुलिस अवर निरीक्षकों को नियुक्ति प्रमाण पत्र प्रदान किया. उन्होंने नवनियुक्त पुलिस अवर निरीक्षकों मधु कश्यप, गौतम कुमार, शोभा रानी, लाडली कुमारी, शिवेश कुमार झा, कोमल कुमारी, रीना कुमारी तथा रौशनी कुमारी को सांकेतिक रूप से नियुक्ति प्रमाण पत्र प्रदान किया. इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ करने के पश्चात् मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि आज के नियुक्ति प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम में 1,239 नवनियुक्त पुलिस अवर निरीक्षकों को नियुक्ति प्रमाण पत्र दिया जा रहा है. इनमें 442 महिलाएं चयनित हुई हैं. मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2005 के पहले कानून-व्यवस्था की क्या स्थिति थी? नवम्बर 2005 में जब हमलोग सरकार में आए तो कानून-व्यवस्था बेहतर बनाने के लिए कई कदम उठाए गये. वर्ष 2005 में पुलिस बल की संख्या लगभग 42 हजार थी. हमने पुलिस की बहाली की प्रक्रिया को तेज किया और अब पुलिसबल की संख्या 1 लाख 10 हजार हो गई है.

नीतीश ने कहा कि वर्ष 2013 में पुलिसबल में महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण लागू किया गया, जिससे पुलिसबल में महिलाओं की संख्या बढ़ी. आज पुलिसबल में महिलाओं की संख्या लगभग 30 हजार हो गई है. देश के दूसरे राज्यों में पुलिसबल में महिलाओं की संख्या इतनी कहीं नहीं है. यह हम सभी के लिए प्रसन्नता की बात है. महिला थानों में महिला पुलिस पदाधिकारी की नियुक्ति से महिलाओं को शिकायत दर्ज कराने में सहूलियत हो रही है. मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार में पुलिसबल की संख्या 02 लाख 29 हजार होनी चाहिए. सीएम ने कहा कि अभी पुलिसबल की संख्या 01 लाख 10 हजार है. इसके तहत 21 हजार पुलिसबल की बहाली प्रक्रिया जारी है और 20 हजार पुलिसबल की बहाली के लिए कार्य किया जा रहा है. उन्होंने पुलिस महानिदेशक को निर्देश देते हुए कहा कि शेष 78 हजार पुलिसबल की बहाली जल्द कराएं. अगले 6 महीने में बचे हुए पदों की बहाली प्रक्रिया पूरी करें.

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले आपस में लोग झगड़ा करते थे. हिंदू-मुस्लिम का झगड़ा होता था, अब सब ठीक हो गया है. राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति बहाल की गई. कानून-व्यवस्था को बेहतर बनाने में पुलिस की बड़ी भूमिका होती है. बिहार पुलिस सभी कार्यों को बेहतर ढंग से और पूरी मेहनत के साथ कर रही है. मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2020 में सात निश्चय-2 के अंतर्गत हमलोगों ने 10 लाख नौकरी और 10 लाख रोजगार देने की बात कही थी. अबतक 24 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है. दस लाख लोगों को और रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है. दस लाख नौकरी देने की जो बात कही गई थी उसमें 7 लाख 16 हजार लोगों को नौकरी दी जा चुकी है. हमने लक्ष्य निर्धारित किया है कि अब 10 लाख की जगह 12 लाख नौकरी दी जाएगी.

सीएम को कार्यक्रम की शुरूआत से पूर्व पुलिस बल द्वारा सलामी दी गयी. पुलिस महानिदेशक आलोक राज ने मुख्यमंत्री को प्रतीक चिह्न एवं पौधा भेंटकर स्वागत किया. कार्यक्रम के दौरान पुलिस महानिदेशक आलोक राज ने नवनियुक्त पुलिस अवर निरीक्षकों को मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा ने मद्यनिषेध की शपथ दिलाई.

अररिया पहुंची केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की 'हिंदू स्वाभिमान यात्रा'

मां खड्गेश्वरी महाकाली मंदिर में की पूजा

संवाददाता । फारबिसगंज

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की 'हिंदू स्वाभिमान यात्रा' सीमांचल के अररिया पहुंची. वही, वे सोमवार को मां खड्गेश्वरी महाकाली मंदिर में की पूजा-अर्चना की उनके साथ स्वामी दीपांकर भी थे. वही, नगर में विशाल जुलूस भी निकाली गई जिसमें गिरिराज सिंह, स्वामी दीपांकर, अररिया सांसद, फारबिसगंज विधायक एवं सैकड़ों की संख्या में महिला पुरुष शामिल थे. इस दौरान वे अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ये यात्रा किसी के खिलाफ नहीं निकाली जा रही है, बल्कि इसके जरिए हिंदुओं को जगाने की कोशिश की जा रही है. इस यात्रा के जरिए वो किसी का विरोध नहीं करना चाहते, बल्कि हिंदुओं को जगाना चाहते हैं अपने भाषण में उन्होंने हिंदुओं के एकजुट रहने की भी बात कही, वही, सिंह ने इशारों ही इशारों में पप्पू यादव पर जमकर हमला बोला है. दरअसल पप्पू यादव कुछ दिनों से गिरिराज सिंह की यात्रा पर लगातार सवाल उठा रहे थे. ऐसे में अररिया में सिंह ने सांसद पप्पू यादव का बिना नाम लिए हुए तंज कसते हुए कहा कि लोग कह रहे हैं कि मेरे लाश से गुजरना होगा. सिंह ने कहा कि मैं लाश पर नहीं बल्कि जिंदा लोगों की छाती होकर हिन्दू स्वाभिमान यात्रा पर निकला हूं.

मौर्य एक्सप्रेस में आग की अफवाह से मची भगदड़, कई घायल

सीवान । सीवान में सोमवार को गोरखपुर से हटिया जा रही मौर्य एक्सप्रेस ट्रेन में आग लगने की अफवाह के बाद भगदड़ मच गई, जिससे कई यात्री घायल हो गए. यह घटना तब हुई जब ट्रेन भाटपार रानी स्टेशन से चलकर जजिरादेई और सीवान के बीच पकवालिया के पास पहुंची थी. घटना के अनुसार, ट्रेन में लगे अग्निशमन यंत्र से धुआं निकलने लगा, जिससे अफवाह फैल गई कि ट्रेन में आग लग गई है. किसी शरारती तत्व ने ट्रेन में आग लगने की खबर फैला दी, जिसके बाद ट्रेन में मौजूद यात्रियों के बीच अफरा-तफरी मच गई.

शराब के नशे में धुत्त युवक की संदिग्ध मौत, मचा हड़कंप

सुपौल । सुपौल में एक युवक की संदिग्ध स्थिति में मौत हो गई. हालांकि पुलिस पुलिस इसे विषपान बता रही है, जबकि मृतक के परिजन गांव के ही एक युवक पर जहरीली शराब पिलाकर हत्या करने का आरोप लगा रहे हैं. मृतक की पहचान सोहटा पंचायत के वार्ड 2 निवासी अरुण शर्मा के पुत्र छोटी शर्मा (40) के रूप में हुई है. मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए एक युवक को हिरासत लेकर पूछताछ शुरू कर दी है. वही सोमवार को शव का पोस्टमार्टम करा कर परिजनों को सौंप दिया गया है. घटना छातापुर थाना क्षेत्र अंतर्गत कटहरा पंचायत की है. परिजनों का कहना है कि रविवार की दोपहर छोटी शर्मा सोहटा पंचायत के वार्ड दो निवासी अरुण शर्मा नामक युवक के साथ घर से बाइक पर कहीं गया था. शाम के समय अरुण ने उसी बाइक से छोटी को उसके घर छोड़ दिया. घर पहुंचने पर छोटी शर्मा की स्थिति ठीक नहीं थी और वह शराब के नशे में धुत्त था. कुछ देर बाद उसके मुंह से झाग और खून निकलने लगा. उसके मुंह से शराब की बू आ रही थी. लोगों का आरोप था कि अरुण ने ही कहीं ले जाकर छोटी को जहरीली शराब पिलाई है.

कारोबार

436 मिलियन डॉलर का किया निवेश

नयी दिल्ली । रियल एस्टेट सेक्टर में संस्थागत निवेश में 2024 की तीसरी तिमाही में सालाना आधार पर 41 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जो 0.96 अरब डॉलर तक पहुंच गया. एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछली तिमाही में रियल एस्टेट सेक्टर में संस्थागत निवेश 3.1 अरब डॉलर था, जो 2024 की सितंबर तिमाही में घटा है. वेस्टियन रिसर्च ने एक रिपोर्ट में कहा कि तिमाही आधार पर 69 प्रतिशत की इस गिरावट के बावजूद दृष्टिकोण सकारात्मक बना हुआ है, क्योंकि निवेश लगभग एक अरब के आंकड़े को छू रहा है.

भारत ने नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारा

नयी दिल्ली । नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रोफेसर पॉल माइकल रोमर ने सोमवार को कहा कि जब अमेरिका में सिलिकॉन वैली तेजी से उभर रही थी, तब वह अपने नागरिकों का जीवन स्तर सुधारने में असफल रहा. वहीं, भारत ने करके दिखाया है कि कैसे डिजिटल टेक्नोलॉजी के जरिए 140 करोड़ लोगों की जिंदगी को बदला जा सकता है. डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे आधार, यूपीआई का उदाहरण देते हुए रोमर ने कहा कि अमेरिका के सामने भी कई अवसर आए, लेकिन उनको बर्बाद कर दिया.

हुंडई मोटर शेयर बाजार में एंट्री को तैयार

नयी दिल्ली । दक्षिण कोरियाई ऑटोमोटिव कंपनी हुंडई मोटर की भारतीय सहायक कंपनी रिकॉर्ड आईपीओ के बाद इस सप्ताह शेयर बाजार में एंट्री के लिए पूरी तरह से तैयार है. अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी. पिछले सप्ताह 3.3 अरब डॉलर के आईपीओ सब्सक्रिप्शन प्रोसेस के बाद, हुंडई मोटर इंडिया के शेयरों का मंगलवार को भारतीय शेयर बाजार में कारोबार शुरू होने वाला है. यह दक्षिण कोरिया के बाहर हुंडई मोटर की पहली लिस्टिंग और भारतीय शेयर बाजार के इतिहास में सबसे बड़ा आईपीओ है. इस आईपीओ ने वर्ष 2022 में भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) द्वारा बनाए गए पिछले रिकॉर्ड को तोड़ा है.

सोमवार को मुंबई हवाई अड्डे पर पहुंचकर तस्वीरों के लिए पोज देती हुईं अभिनेत्री उर्वशी रौतेला.

भारत समेत एशियाई शेयर बाजारों में इस सप्ताह तेज रहेगी हलचल

ढाई साल बाद सबसे बड़े वॉल्यूम में शेयरों की लिस्टिंग होगी

एजेंसी । नयी दिल्ली

20 कंपनियों के 8.32 अरब डॉलर से अधिक के शेयरों की इस सप्ताह होगी लिस्टिंग

भारतीय स्टॉक मार्केट समेत पूरे एशियाई शेयर बाजारों के लिए ये सप्ताह काफी व्यस्त सप्ताह होने वाला है. इस सप्ताह एशिया के शेयर बाजारों में 20 से ज्यादा कंपनियों के शेयर लिस्ट होने वाले हैं. इन सभी कंपनियों के आईपीओ के जरिए शेयर बाजार में 8.32 अरब डॉलर से अधिक का निवेश किया गया है. एशिया के शेयर बाजार में लगभग ढाई साल बाद इतने बड़े वीकली वॉल्यूम में शेयरों की लिस्टिंग होने वाली है. इसके पहले अप्रैल 2022 के तीसरे सप्ताह में एशियाई बाजारों में इतने अधिक वॉल्यूम में लिस्टिंग हुई थी. एशियाई बाजारों में भारतीय शेयर बाजार का प्रमुख स्थान है. इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड समेत 3 कंपनियों के शेयर स्टॉक मार्केट में लिस्ट होने वाले हैं. इन तीनों में हुंडई मोटर इंडिया का आईपीओ भारतीय शेयर बाजार के इतिहास का अभी तक का सबसे बड़ा आईपीओ है. 27,870.16 करोड़ रुपये का ये आईपीओ 22 अक्टूबर को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होगा. देश का सबसे बड़ा आईपीओ होने के बावजूद इसे रिटेल इन्वेस्टर्स और नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) की ओर से काफी ठंडा रिस्पॉन्स मिला था. हालांकि सब्सक्रिप्शन के आखिरी दिन क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) द्वारा जम कर बोली लगाने के कारण ये आईपीओ दोगुना से अधिक सब्सक्राइब हुआ था. भारतीय बाजार के अलावा जापान की टोक्यो मेट्रो कंपनी के आईपीओ की 23 अक्टूबर को लिस्टिंग होने वाली है. इस आईपीओ के तहत जारी टोक्यो मेट्रो कंपनी ने 2.3 अरब डॉलर जुटाए हैं. जापान में 2018 के बाद ये अभी तक का सबसे बड़ा आईपीओ है. इसी तरह जापान की कंपनी रिंगाकू होल्डिंग कॉर्प के शेयर 25 अक्टूबर को लिस्ट होंगे.

जापान की इस एक्स-रे टेक्नोलॉजी कंपनी के आईपीओ का साइज 75 करोड़ डॉलर का है. जापानी बाजार में उथल-पुथल होने के बावजूद इन दोनों कंपनियों को निवेशकों की ओर से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला है. भारत और जापान के अलावा चीन में भी इस सप्ताह लिस्टिंग से हलचल बनी रहने वाली है. चीन में बोतल बंद पानी का कारोबार करने वाली चाइना रिसोर्सेस बेवरेज होल्डिंग कंपनी के शेयर 23 अक्टूबर को लिस्ट होने वाले हैं. इसी तरह ऑटोनॉमस ड्राइविंग टेक्नोलॉजी फर्म होराइजन रोबोटिक्स इंक के शेयर 24 अक्टूबर को लिस्ट होंगे. इन दोनों कंपनियों के आईपीओ का कुल साइज 1.34 अरब डॉलर से अधिक है. जानकारों का कहना है कि इस सप्ताह एशियाई बाजारों में विशेष रूप से भारत, जापान और चीन की कंपनियां हलचल मचाने वाली है.

सीतारमण मैक्सिको की यात्रा समाप्त करने के बाद अमेरिका पहुंचीं

नयी दिल्ली । केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण मैक्सिको की यात्रा समाप्त करने के बाद अमेरिका पहुंचीं. वित्त मंत्रालय ने 'एक्स' पोस्ट पर सोमवार को जारी बयान में कहा कि केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का मेक्सिको सिटी से अमेरिका पहुंचने पर संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा और न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूत बिनया श्रीकांत प्रधान ने का स्वागत किया. इससे पहले निर्मला सीतारमण 17 से 20 अक्टूबर तक मैक्सिको में थीं, जहां उन्होंने ग्वाडलजारा और मैक्सिको सिटी दोनों में विभिन्न क्षेत्रों के राजनीतिक और व्यापारिक नेताओं के साथ बातचीत की. उल्लेखनीय है कि केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण 26 अक्टूबर तक अमेरिका की आधिकारिक दौरे पर हैं.

विक्रम देव दत्त ने कोयला सचिव का पदभार संभाला

नयी दिल्ली । विक्रम देव दत्त ने सोमवार को कोयला मंत्रालय के सचिव का पदभार ग्रहण संभाल लिया. उन्होंने वीएल कांता राव की जगह ली है, जो फिलहाल कोयला मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे थे. वीएल कांता राव मुलतः खान मंत्रालय के सचिव हैं. कोयला मंत्रालय ने सोमवार को एक बयान में विक्रम देव दत्त के कोयला मंत्रालय के सचिव का पदभार ग्रहण करने की जानकारी दी. वह 1993 बैच के अरुणाचल प्रदेश-गोवा-मिजोरम और केंद्र शासित प्रदेश (एजीएमयूटी) कैडर के आईएएस अधिकारी है. दत्त इससे पहले नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) के महानिदेशक के पद पर कार्यरत थे. कोयला मंत्रालय के सचिव रह चुके अमृत लाल मीणा को उनके गृह कैडर बिहार वापस भेजकर मुख्य सचिव नियुक्त किया गया है. भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1989 बैच के अधिकारी मीणा को कार्मिक मंत्रालय के 30 अगस्त के आदेश के अनुसार मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने बिहार सरकार के अनुरोध पर मीणा को उनके मूल कैडर में वापस भेजने को मंजूरी दी थी.

आठ साल की कामयाबी के बाद

'उड़ान' योजना को 10 साल के लिए और बढ़ाएगी केंद्र सरकार

एजेंसी । नयी दिल्ली

नागरिक उड्डयन मंत्री के. राम मोहन नायडू ने सोमवार को कहा कि सरकार क्षेत्रीय हवाई संपर्क योजना 'उड़ान' को अगले 10 साल के लिए और बढ़ाएगी. अब तक आठ साल की योजना के दौरान विमानन कंपनियों को अस्तित्व में आने और विकास करने का मौका मिला. इसके साथ ही रोजगार सृजन हुआ तथा पर्यटन को बढ़ावा मिला है. अगले पांच साल में 50 और एयरपोर्ट शुरू करने और मौजूदा हवाई अड्डों की क्षमता बढ़ाने की योजना है.

नायडू सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में 'उड़ान' योजना के आठ साल पूरा होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे. नागरिक उड्डयन मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि हम उड़ान योजना को अगले 10 वर्षों के लिए देख रहे हैं, क्योंकि अगले 5 वर्षों में हम 50 और एयरपोर्ट शुरू करने और मौजूदा हवाई अड्डों की क्षमता बढ़ाने की योजना बना रहे हैं. उन्होंने कहा कि हमें लगता है कि 2047 तक हमारे पास हवाई अड्डों की संख्या 200 से अधिक करने की क्षमता है. नायडू ने कहा कि आज हमारे पास 157 हैं और हम इसे 350 तक ले जा सकते हैं.

नागर विमानन मंत्री ने कहा कि उड़ान योजना नागरिक उड्डयन में एक क्रांतिकारी योजना रही है. यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच से निकली है जो हवाई यात्रा को लोकतांत्रिक बनाना चाहते थे. जब हमने पिछले 8 वर्षों में इस उड़ान योजना का उपयोग किया है, तो इसका सबसे बड़ा लाभ देश के दूरदराज के क्षेत्रों, खासकर पूर्वोत्तर क्षेत्रों या भीतरी इलाकों को हुआ है, जहां कोई कनेक्टिविटी नहीं थी. अब वे हवाई यात्रा के माध्यम से न केवल देश के अन्य महानगरों से बल्कि कई देशों से भी ठीक से जुड़े हुए हैं.

शेयर बाजार मिडकैप-स्मॉलकैप स्टॉक्स में बिकवाली से शेयर बाजार में हाहाकार

निवेशकों को हुआ 5 लाख करोड़ रुपये का नुकसान

- मिडकैप इंडेक्स 1000 और स्मॉलकैप इंडेक्स 300 अंक गिरकर बंद हुआ है

एजेंसी । मुंबई

मिडकैप और स्मॉलकैप स्टॉक्स में गिरावट की सुनामी से सोमवार के कारोबारी सेशन में इन स्टॉक्स में मातम छा गया. निफ्टी का मिडकैप इंडेक्स दिन के हाई से 1350 अंकों तक नीचे जा गिरा तो निफ्टी के स्मॉल कैप इंडेक्स में 415 अंकों की गिरावट देखी गई. बाजार के बंद होने पर मिडकैप इंडेक्स 1000 और स्मॉलकैप इंडेक्स 300 अंक गिरकर बंद हुआ है. हालांकि सेंसेक्स-निफ्टी में उतनी बड़ी गिरावट नहीं रही. सेंसेक्स 73 अंक गिरकर 81,151 और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 73 अंक गिरकर 24,781 अंकों पर बंद हुआ है. वहीं सोमवार को बाजार में एफएमसीजी और आईटी शेयरों में बिकवाली के चलते बाजार में ये बड़ी गिरावट आई है. गिरने वाले शेयरों में कोफोर्ज 5.55 फीसदी, वोडाफोन आइडिया 5.54 फीसदी, एमआरपीएल 4.79 फीसदी, पर्सिसटेंट सिस्टम्स 4.54 फीसदी, आईओबी 4.23 फीसदी हिंदुस्तान पेट्रोलियम 4.11 फीसदी, पॉलीकैब 3.97 फीसदी, बंधन बैंक 3.95 फीसदी, बैंक ऑफ महाराष्ट्र 3.89 फीसदी, एसबीआई कार्ड्स 3.44 फीसदी की गिरावट के बंद हुआ है. तेजी वाले शेयरों में टाटा केमिकल्स 8.77 फीसदी, ओबेरॉय रिएल्टी 2.99 फीसदी, मझगांव डॉक्स 2.84 फीसदी, बीएसई 1.76 फीसदी, मैक्स हेल्थ 1.34 फीसदी, पतंजलि 0.79 फीसदी के उछाल के साथ बंद हुआ है.

निवेशकों को 5 लाख करोड़ का नुकसान : शेयर बाजार में गिरावट के चलते निवेशकों को भारी नुकसान हुआ है. बीएसई पर लिस्टेड स्टॉक्स का मार्केट कैप घटकर 453.27 लाख करोड़ रुपये पर आ गया है जो पिछले कारोबारी सत्र में 458.21 लाख करोड़ रुपये रहा था. यानि सोमवार के सत्र में निवेशकों की संपत्ति में 5 लाख करोड़ रुपये का सेंध लगा है.

सोमवार के ट्रेड में केवल ऑटो इकलौता ऐसा सेक्टर रहा है जिसके शेयरों में तेजी रही और निफ्टी का ऑटो इंडेक्स 105 अंकों के उछाल के साथ बंद हुआ है. जबकि आईटी, एफएमसीजी, बैंकिंग, फार्मा, एफएमसीजी, मेटल्स, रियल एस्टेट मीडिया, एनर्जी, इंफ्रा, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थकेयर और ऑयल एंड गैस स्टॉक्स गिरावट के साथ बंद हुए. इंडिया वीआईएक्स 5.52 फीसदी के उछाल के साथ 13.76 के लेवल पर बंद हुआ है.

न्यूज अपडेट

मालदीव में भारत की यूपीआई सर्विस

माले। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने मालदीव में भारत की यूपीआई सर्विस शुरू करने को लेकर आवश्यक कदम उठाने का फैसला किया है. जारी एक बयान में कहा गया कि इस कदम से मालदीव की अर्थव्यवस्था को लाभ मिलने की उम्मीद है. मालदीव को भारत की यूपीआई सुविधा के साथ बेहतर फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर मदद मिलेगी. यह निर्णय आर्थिक विकास एवं व्यापार मंत्री द्वारा कैबिनेट बैठक में प्रस्तुत किए गए पत्र पर गहन चर्चा के बाद लिया गया.

न्यू मैक्सिको में बाढ़ से दो की हुई मौत

ह्यूस्टन। अमेरिका के न्यू मैक्सिको में अचानक आई बाढ़ के कारण दो लोगों की मौत हो गई है, जबकि 38 लोग घायल हुए हैं. अधिकारियों ने बताया कि अमेरिका के दक्षिण-पूर्वी राज्य न्यू मैक्सिको के शहर रोसवेल में भारी बारिश हुई, जिसके चलते अचानक शहर में बाढ़ आ गई. बाढ़ की चपेट में आने से दो की जान गई है, जबकि 38 घायल हुए हैं और करीब 300 लोगों को बचाया गया है. बारिश से 91,700 से अधिक आबादी वाली सिटी में कई घरों और लोगों के बिजनेस को भारी नुकसान पहुंचा है.

रेडियो टावर से टकराया हेलीकॉप्टर

ह्यूस्टन। अमेरिका के ह्यूस्टन में रविवार को एक भीषण हादसा हुआ. टेक्सास राज्य के सबसे बड़े शहर में एक रेडियो टावर से टकरा कर हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया. हादसे में चार लोगों की मौत हो गई. ह्यूस्टन के मेयर जॉन व्हिटमायर ने हादसे की पुष्टि की. जॉन व्हिटमायर ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि हेलीकॉप्टर रविवार रात को दुर्घटनाग्रस्त हुआ. इस हादसे के दौरान बिल्डिंग में बड़ा विस्फोट हुआ और इमारत ढह गई. हादसे के बाद सभी स्थानीय निवासी सुरक्षित हैं.

राष्ट्रपति डा सिल्वा के सिर में लगी चोट

साओ पाउलो। ब्राजील के राष्ट्रपति लुईस ईनास्यू लूला डा सिल्वा का आगामी रूस दौरा रद्द हो गया है. वह ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए यह यात्रा करने वाले थे. 19 अक्टूबर को घर में हुई एक दुर्घटना में उनके सिर में चोट लग लगी थी जिसके बाद उन्हें ब्रासीलिया के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया. यह जानकारी ब्राजील के राष्ट्रपति कार्यालय ने रविवार को दी. बता दें कि 16वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 22 से 24 अक्टूबर तक रूस के कजान शहर में आयोजित किया जाएगा.

दिल्ली की हवा 'बहुत ख़राब' दर्ज हुई

डकार। सेनेगल के कृषि, खाद्य संप्रभुता और पशुधन मंत्री मबूबा डायग्ने ने आधिकारिक तौर पर 2024-2025 सीजन के लिए देश के राष्ट्रीय पशुधन टीकाकरण (लाइवस्टॉक वैक्सीनेशन) अभियान का शुभारंभ किया. राष्ट्रीय पशुधन टीकाकरण (लाइवस्टॉक वैक्सीनेशन) अभियान की यह घोषणा सेनेगल के उत्तर-मध्य भाग में स्थित एक प्रमुख पशुधन शहर डाहरा जोलोफ में आयोजित एक समारोह के दौरान की गई. उन्होंने अभियान से जुड़े सभी लोगों से मिलकर काम करने का आह्वान किया है.

रूस ने भारत को समर्थन दोहराया

मास्को। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि वैश्विक बहुमत का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए भारत, ब्राजील और अफ्रीकी देशों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में स्थायी आधार पर प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए. लावरोव ने एक इंटरव्यू के दौरान यह बात कही. लावरोव के हवाले से कहा गया कि भारत, ब्राजील जैसे देशों के साथ-साथ अफ्रीका के प्रतिनिधियों को सुरक्षा परिषद में लंबे समय तक स्थायी आधार पर बना रहना चाहिए. वैश्विक बहुमत का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए यह जरूरी है.

म्यांमार में नौका पलटने से आठ मरे

यांगून। दक्षिणी म्यांमार में एक यात्री नौका पलट गई. इस हादसे में कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई और 18 लोग लापता बताए जा रहे हैं. मायिक अग्निशमन सेवा विभाग के एक अधिकारी ने सोमवार को बताया कि 11 घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है. दुर्घटना रविवार को स्थानीय समयानुसार रात करीब 9:15 बजे तनिन्थयी क्षेत्र में मायिक जिले के पलाव कस्बे में हुई. अधिकारी ने बताया कि बताया कि यह दुर्घटना स्ट्रॉन्ग भंवर की वजह से हुई. इसने नौका को पलट दिया.

अमेरिकी रक्षा मंत्री ऑस्टिन पहुंचे कीव

कीव। अमेरिकी रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन सोमवार को कीव पहुंचे. उन्होंने कहा कि उनकी यह यात्रा यूक्रेन को रूस से बचाव के लिए जरूरी सुरक्षा मदद प्रदान करने की वाशिंगटन की प्रतिबद्धता को दर्शाती है. सोमवार की सुबह कीव पहुंचने के बाद लॉयड ने एक्स पर लिखा कि मैं रक्षा सचिव के रूप में चौथी बार यूक्रेन आया हूं, जिससे यह पता चलता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका, यूक्रेन के साथ खड़ा है. उप प्रेस सचिव सबरीना सिंह ने एक बयान में कहा कि अपनी यात्रा के समापन पर, मंत्री एक भाषण देंगे.

गुजरात में 250 करोड़ की ड्रग्स जब्त

गांधीनगर। गुजरात में भरूच जिले के अंकलेश्वर जीआईडीसी क्षेत्र में स्थित अवसर एंटरप्राइज से 250 करोड़ रुपये की ड्रग्स जब्त की गई है. सूरत और भरूच पुलिस ने ज्वाइंट छापेमारी में 141 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की, जिसकी कीमत 14.10 लाख रुपये बताई जा रही है, जबकि 427 किलोग्राम संदिग्ध ड्रग्स को फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी में जांच के लिए भेजा गया है. अधिकारियों ने अवसर एंटरप्राइज के निदेशक विशाल पटेल और दो अन्य लोगों को गिरफ्तार किया है.

इजराइली वायु सेना ने दर्जनों ठिकानों पर बम गिराकर तबाह किए अरबों डॉलर, पूर्वी लेबनान में घर पर हमले में छह की मौत

अब हिजबुल्लाह के 'खजाने' पर इजराइली वायुसेना ने किए हमले

लगातार न्यूज नेटवर्क

इजराइली वायु सेना (आईएएफ) ने सोमवार को कहा कि उसने हिजबुल्लाह की दर्जनों ठिकानों पर टारगेटेड, इंटेलिजेंस बेस्ड हमले किए. ये हमले बेरूत, दक्षिणी लेबनान और लेबनानी क्षेत्र के भीतरी इलाकों में किए गए. इजराइल रक्षा बलों (आईडीएफ) के मुताबिक जिन ठिकानों को निशाना बनाया गया उनका इस्तेमाल लेबनानी ग्रुप, अपनी आर्थिक गतिविधियों के लिए करता था. वहीं पूर्वी लेबनान के शहर बालबेक में एक घर पर सोमवार को इजरायली ड्रोन हमले में छह लोगों की मौत हो गई और आठ अन्य घायल हो गए. रिपोर्ट के अनुसार, एक इजरायली ड्रोन ने मध्य बालबेक के नबी इनाम पड़ोस में स्थित घर पर हमला किया. मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं. इससे पहले लेबनानी स्वास्थ्य मंत्रालय ने रविवार को जानकारी दी थी कि इजराइली हवाई हमलों में मरने वालों की संख्या 2,464 तक पहुंच गई. वहीं 11,530 लोग घायल हुए हैं. मंत्रालय ने रविवार को बताया कि अकेले शनिवार को इजराइली हमलों में 16 लोग मारे गए और 59 अन्य घायल हो गए.

आईडीएफ ने एक बयान में कहा कि पैसा, अल-कर्द अल-हसन एसोसिएशन द्वारा जमा किया गया था, जो हिजबुल्लाह की आतंकी गतिविधियों को सीधे तौर पर फंड करता है, जिसमें हथियारों की खरीद और हिजबुल्लाह की सैन्य शाखा के कार्यकर्ताओं को भुगतान शामिल है. इसमें कहा गया है कि हिजबुल्लाह ने अपनी शाखाओं में अरबों डॉलर जमा कर रखे हैं, जिसमें आतंकवादी संगठन के नाम पर सीधे जमा किया गया पैसा भी शामिल है. आईडीएफ ने बताया कि हमले शुरू करने से पहले, नागरिकों को नुकसान पहुंचने के जोखिम को कम करने के लिए कई कदम उठाए गए, जिसमें क्षेत्र में नागरिक आबादी को विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से अग्रिम चेतावनी जारी करना भी शामिल था. इजराइली सेना कहा कि ये हमले हिजबुल्लाह के आतंकी ढांचे, उसकी सैन्य क्षमताओं को कमजोर करने के लिए आईडीएफ के चल रही कोशिशों का हिस्सा है. इजराइली सेना 23 सितंबर से लेबनान पर एयर स्ट्राइक कर रही है. उसने सीमा पार एक 'सीमित' जमीनी अभियान भी चलाया है, जिसका उद्देश्य कथित तौर पर हिजबुल्लाह को कमजोर करना है. इजराइली हमलों में हिजबुल्लाह के चीफ हसन नसरल्लाह समेत कई कमांडरों की मौत हो गई और उसके कई ठिकानों को भारी नुकसान पहुंचा है. हालांकि लेबनानी ग्रुप भी इजराइल पर मिसाइलें दाग कर पलटवार कर रहा है.

2,464 तक पहुंची लेबनान में इजराइली हवाई हमलों में मरने वालों की संख्या, 11,530 लोग घायल

इजरायली सेना ने जानबूझकर यूएन निगरानी टावर को बुलडोजर से किया ध्वस्तः संयुक्त राष्ट्र

इस बीच लेबनान में संयुक्त राष्ट्र के अंतरिम बल मिशन (यूएनआईएफआईएल) ने रविवार को कहा कि इसराइली सेना ने जानबूझकर मरवाहीन में एक यूएन निगरानी टॉवर को बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया. यूएनआईएफआईएल ने रविवार को संयुक्त राष्ट्र की चौकी की गरिमा का हनन करना और यूएन संपत्तियों को नुकसान पहुंचाना, अंतरराष्ट्रीय कानून और सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1701 का खुला उल्लंघन है. यूएनआईएफआईएल ने इसराइली फोर्सेज और तमाम अन्य पक्षों को, संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारियों और सम्पत्ति की रक्षा सुनिश्चित करने की उनकी जिम्मेदारियों की याद दिलाई. मिशन ने कहा कि आईडीएफ ने बार-बार मांग की है कि यूएनआईएफआईएल ब्लू लाइन पर अपने ठिकानों को खाली कर दे. उसने जानबूझकर संयुक्त राष्ट्र के चौकियों को नुकसान पहुंचाया है. यूएनआईएफआईएल ने कहा कि चुनौतियों के बावजूद शांति सैनिक अपनी लोकेशन पर बने हुए हैं और निर्धारित कार्य जारी रखेंगे.

हिजबुल्लाह ने इजराइली ड्रोन को मार गिराया, गोला बारूद भंडार को भी निशाना बनाया

इस बीच, हिजबुल्लाह ने सोमवार को एक बयान में कहा कि उसने रविवार शाम को दक्षिणी लेबनान में इजराइली सेना के साथ गोलीबारी के दौरान एक इजराइली हर्मीस-900 ड्रोन को मार गिराया था. समूह ने कहा कि यह 8 अक्टूबर 2023 के बाद से दक्षिणी और पूर्वी लेबनान में मार गिराया गया नौवां ड्रोन था. हिजबुल्लाह ने बताया कि उसने सोमवार को खल्लेत वर्देह क्षेत्र और मारून अल-रास गांव में इजरायली सेना को निशाना बनाकर रॉकेट दागे. इसके अलावा उसने इजराइल के मोशाव बेत हिलेल में एक इजराइली गोला बारूद के भंडार को निशाना बनाया.

गांदरबल आतंकी घटना में सात की मौत, शाह बोले-दोषियों को नहीं बख़्शेंगे

हमले की एनआईए करेगी जांच

एजेंसियां। जम्मू/श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के गांदरबल जिले में रविवार को आतंकी हमले में एक डॉक्टर और छह मजदूरों सहित कुल सात लोगों की मौत हो गई. आतंकी हमले की जांच अब एनआईए करेगी. राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के वरिष्ठ अधिकारी के नेतृत्व में एक टीम सोमवार को घटना स्थल के लिए रवाना हुई. जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल (एलजी) मनोज सिन्हा ने सोमवार को श्रीनगर शहर के एसकेआईएमएस अस्पताल का दौरा कर घायलों का हालचाल जाना.

अधिकारियों ने बताया कि यह हमला रविवार को गगनगीर इलाके में एक श्रमिक कैंप पर हुआ. ये सभी एक निजी कंपनी में काम करते थे. हमले में सात लोगों की जान चली गई. मारे गए लोगों में स्थानीय और बाहरी लोग शामिल थे, जो गगनगीर और सोनमर्ग के बीच एक टनल प्रोजेक्ट में काम कर रहे थे. मारे गए लोगों की पहचान- फहीम नासिर (सुरक्षा प्रबंधक, बिहार), अंगिल शुक्ला (मैकेनिकल मैनेजर, मध्य प्रदेश), मोहम्मद हनीफ (बिहार), डॉ. शहनवाज (बडगाम, कश्मीर), कलीम (बिहार), शशि अब्रोल (डिज़ाइनर, जम्मू) और गुरमीत सिंह (रिगर, गुरदासपुर, पंजाब) के तौर पर हुई है. वहीं, खुफिया एजेंसियों का मानना है कि निर्दोष, निहत्थे नागरिकों की हत्या आतंकियों की हताशा का परिणाम है, जो जम्मू-कश्मीर में हाल ही में हुए शांतिपूर्ण और जनता द्वारा बड़ी संख्या में भाग लिए गए लोकसभा और विधानसभा चुनावों के बाद से बौखलाहट में हैं. इस घटना के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके की घेराबंदी कर दी और आतंकियों की तलाश के लिए अभियान शुरू कर दिया. यह हमला रविवार रात 8:15 बजे हुआ था.

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा कि जम्मू-कश्मीर के गगनगीर में निर्दोष नागरिकों पर हुए इस कायराना आतंकी हमले की मैं कड़ी निंदा करता हूं. इसमें शामिल लोगों को बख्शा नहीं जाएगा और सुरक्षा बलों द्वारा कठोर कार्रवाई की जाएगी. इस कठिन समय में मैं शहीदों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं. उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि मैं गगनगीर में नागरिकों पर हुए इस घिनौने आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं. मैं लोगों को आश्वस्त करता हूं कि इस कृत्य के पीछे जो भी हैं, उन्हें सजा जरूर मिलेगी. मेरी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवारों के साथ हैं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं.

गांदरबल में एक आतंकवादी हमले में मारे जाने के बाद सोमवार को बडगाम जिले के उनके पैतृक गांव नदीगाम में डॉ. शाहनवाज डार के अंतिम संस्कार के दौरान परिजन शोक मनाते हुए. इस हमले में कुल सात लोगों की हत्या कर दी गई. **(आईएएनएस)**

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पूरा देश एकजुट, खड़गे राहुल और फारूक अब्दुल्ला ने की आतंकी हमले की निंदा

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में रोजगार सृजन और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक बुनियादी ढांचा परियोजना में लगी एक निजी कंपनी के श्रमिकों पर हुए हमले की राजनीतिक दलों के नेताओं ने निंदा की है. जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने इस हमले की कड़ी निंदा की और इसे आतंकियों का कायरतापूर्ण और घिनौना कृत्य बताया. पीडीपी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने इस घटना की निंदा करते हुए इसे "बेमतलब की हिंसा" बताया.

जम्मू-कश्मीर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तारिक हमीद कर्रा ने भी इस हमले की निंदा की .कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोमवार को कहा कि हम जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में हुए कायरतापूर्ण आतंकी हमले की कड़ी निंदा करते हैं, जिसमें कई निर्माण श्रमिक और एक डॉक्टर मारे गए हैं. लक्षित हिंसा का यह अमानवीय और घृणित कृत्य भारत को जम्मू-कश्मीर में प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निर्माण में बाधा नहीं डाल सकता. एक राष्ट्र के रूप में, हम आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक साथ हैं. पीड़ितों के परिवारों के प्रति हमारी संवेदना है. हम घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं. वहीं जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि गांदरबल जैसे हमले कश्मीर को पाकिस्तान में नहीं मिला सकते. जब तक पाकिस्तान कश्मीर में बेगुनाहों की हत्या बंद नहीं करता, तब तक उसके साथ कोई बातचीत नहीं हो सकती. कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने एक्स पोस्ट पर लिखा कि 'जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में आतंकी हमले में एक डॉक्टर और प्रवासी मज़दूरों समेत कई लोगों की हत्या बहुत ही कायरतापूर्ण और अक्षम्य अपराध है. आतंकियों का यह दुस्साहस जम्मू-कश्मीर में निर्माण का क्रम और लोगों का विश्वास कभी नहीं तोड़ पाएगा. आतंकवाद के खिलाफ इस लड़ाई में पूरा देश एकजुट है. इससे पहले कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने भी गांदरबल में हुए आतंकी हमले की निंदा की.

मनोज सिन्हा ने अस्पताल में घायलों का हालचाल जाना

जेएंडके पुलिस चुनौतियों से निपटने को प्रतिबद्ध : डीजीपी

इस हमले को लेकर जम्मू-कश्मीर के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी) आनंद जैन ने कहा कि जम्मू-कश्मीर पुलिस किसी भी तरह की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रतिबद्ध है और हम किसी भी हमले का कड़ा जवाब देंगे. एडीजीपी सोमवार को बताया कि 21 अक्टूबर को पुलिस शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है. इस दिन हम अपने शहीदों और उनके बलिदान को याद करते हैं. हम आज जम्मू-कश्मीर पुलिस के वीर योद्धाओं को नमन करते हैं. उन्होंने प्रदेश की सुरक्षा के लिए अपनी जान को न्योछावर कर दिया. आज हम उन्हें कोटि-कोटि नमन करते हैं.

विमानों में बम की धमकियों पर गृह मंत्रालय की मीटिंग

एजेंसी। नयी दिल्ली

देश में विमानों में बम की लगातार धमकियां मिलने के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सोमवार को एक हाई लेवल मीटिंग की. गृह सचिव ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के डीजी और ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन सिक्योरिटी (बीसीएएस) के डीजी से धमकियों की कॉल के बारे में विस्तृत जानकारी ली. सूत्रों के अनुसार, इस मीटिंग में सीआईएसएफ के डीजी और बीसीएएस के डीजी ने गृह सचिव को अब क की जांच का ब्योरा दिया. सूत्रों के मुताबिक, विमानों में बम की धमकियों की अधिकतर धमकी भरी कॉल विदेशों से आई हैं. बता दें कि पिछले 5 दिनों में 100 से अधिक एयरलाइंस को धमकी मिल चुकी है. गृह मंत्रालय ने बम की धमकी भरे कॉल के बाद सीआईएसएफ से एयरपोर्ट पर अधिक सतर्कता बरतने का निर्देश दिया है. इससे पहले शनिवार को 'नागरिक विमानन सुरक्षा ब्यूरो' ने एयरलाइंस के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) के साथ बैठक की थी. बीसीएएस के अधिकारियों ने सीईओ को बम की धमकियों से निपटने के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) का पालन करने का निर्देश दिया.

एलएसी पर पेट्रोलिंग समझौता सकारात्मक कदमः विदेश मंत्री

एजेंसी। नयी दिल्ली

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सोमवार को पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पेट्रोलिंग व्यवस्था को लेकर हुए भारत-चीन समझौते को ''सकारात्मक कदम'' बताया. हालांकि उन्होंने परिणामों के बारे में बहुत जल्दी अनुमान न लगाने की सलाह दी. इससे पहले विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने सोमवार दोपहर घोषणा की कि पिछले कई हफ्तों से चल रही चर्चाओं के बाद दोनों देश एलएसी पर गश्त व्यवस्था को लेकर एक समझौते पर पहुंचे हैं, जिसके परिणामस्वरूप सैनिकों की वापसी हुई और अंततः जून 2020 में गलवान घाटी में हिंसक झड़प के बाद क्षेत्र में उत्पन्न मुद्दों का समाधान हो रहा है. एनडीटीवी वर्ल्ड समिट में बोलते हुए विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि यह समझौता, उस शांति और सौहार्द का आधार तैयार करता है, जो सीमावर्ती क्षेत्रों में होना चाहिए और जो 2020 से पहले मौजूद भी था. पिछले कुछ वर्षों से द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने के लिए भारत की यही प्रमुख चिंता रही है. जयशंकर ने कहा कि हमने हमेशा यह माना है कि एक तरफ, हमें स्पष्ट रूप से जवाबी तैनाती करनी थी...लेकिन, साथ ही, हम सितंबर 2020 से बातचीत भी कर रहे हैं. यह एक बहुत ही धैर्यपूर्ण प्रक्रिया रही है, शायद यह जितनी हो सकती थी उससे कहीं अधिक जटिल प्रक्रिया थी. तथ्य यह है कि यदि हम, पेट्रोलिंग करने और एलएसी की पवित्रता का पालन करने को लेकर एक समझ बना पाते हैं, तो, मुझे लगता है, उस शांति का आधार बनेगा जो सीमा क्षेत्रों में होना चाहिए और 2020 से पहले वहां मौजूद थी.

बेंगलुरु में भारी बारिश के बाद जनजीवन प्रभावित

बेंगलुरु में सोमवार को सुबह भारी बारिश के बाद सभी आंगनबाड़ी केंद्रों के साथ-साथ बेंगलुरु सिटी जिले के निजी और सहायता प्राप्त प्राथमिक व उच्च विद्यालयों को बंद कर दिया गया. वड्डारापाल्या जंक्शन पर जलभराव, बेंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर वाहनों की धीमी गति के बारे में अलर्ट जारी किया है. **एजेंसी**

एनडीटीवी वर्ल्ड समिट प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- जलवायु परिवर्तन का संकट पूरी मानवता का संकट, इसमें भी भारत लीड लेने की कोशिश कर रहा है

21वीं सदी में स्थिरता, स्थायित्व और समाधान मानवता के भविष्य की जरूरी शर्तें : मोदी

एजेंसी। नयी दिल्ली

पीएम नरेंद्र मोदी ने एनडीटीवी वर्ल्ड समिट 2024 कार्यक्रम में बताया कि 21वीं सदी मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण समय है, जिसकी तीन बड़ी जरूरते हैं- 'स्थिरता', 'स्थायित्व' और 'समाधान'. ये तीनों मानवता के बेहतर भविष्य के लिए सबसे जरूरी शर्तें हैं. पीएम मोदी ने कहा कि भारत आज यही प्रयास कर रहा है. इसमें भारत की जनता का एकनिष्ठ समर्थन है. छह दशक में पहली बार देश के लोगों ने लगातार तीसरी बार किसी सरकार को अपना जनादेश दिया है. ये स्थिरता का संदेश है. अभी हरियाणा में चुनाव हुए, जिसमें भारत की जनता ने स्थिरता के इस भाव को और मजबूत ही किया है.

पीएम मोदी ने आगे कहा कि जलवायु परिवर्तन का संकट आज पूरी मानवता का संकट बन चुका है. इसमें भी भारत लीड लेने की कोशिश कर रहा है. ग्लोबल क्लाइमेट चेंज में भारत का योगदान न के बराबर है. फिर भी भारत में हमने ग्रीन ट्रांजिशन को अपनी ग्रोथ का ईंधन बनाया है. आज 'स्थायित्व' हमारी डेवलप प्लानिंग के कोर में है. आप हमारी 'पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' को देख लें. खेतों में सोलर पंप लगाने की स्कीम को देख लें, या इथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम हो, बड़े बड़े पवन ऊर्जा फार्म हो, या एलईडी लाइट्स मूवमेंट हों, सोलर पॉवर हो या बायोगैस प्लांट पर फोकस हो, आप हमारा कोई भी प्रोग्राम देख लीजिए, सभी में ग्रीन भविष्य को लेकर एक मजबूत प्रतिबद्धता ही पाएंगे.

ग्लोबल साउथ को भारत और पीएम मोदी के नेतृत्व में पूरा विश्वासः भूटान के पीएम

नयी दिल्ली। भूटान के पीएम शेरिंग तोबगे ने पिछले 10 वर्षों में भूटान के आर्थिक विकास को गति देने में अहम भूमिका निभाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया. उन्होंने कहा कि जब प्रमुख वैश्विक मुद्दों को सुलझाने की बात आती है तो पूरा विश्व, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ, भारत के नेतृत्व की ओर देखता है. शेरिंग तोबगे ने कहा कि दुनिया को भारत की जरूरत है. यह कई कारणों से भारत की सदी है - भारत की आबादी दुनिया में सबसे ज्यादा है और यह लगातार बढ़ रही है. भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, यदि कोविड न होता तो पांच ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर जाती. भारत के पास सबसे बड़ा उपभोक्ता आधार है और विशेष रूप से उन्नत देशों में बहुत बड़ा प्रवासी समुदाय है. हर मायने में यह भारत की सदी है.

यूएनएससी में स्थायी सीट का भारत अधिकार : कैमरन

नयी दिल्ली। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में स्थायी सीट दिलाने का समर्थन दोहराया है. उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया को कई बड़ी चुनौतियों पर भारत का नजरिया सुनने की जरूरत है. कैमरन ने सोमवार को यहां शुरू हुए दो दिवसीय एनडीटीवी वर्ल्ड समिट में कहा कि हमें एक रीसेट की जरूरत है. दूसरे विश्व युद्ध के बाद संस्थाओं की स्थापना से दुनिया में बड़ा बदलाव आया है. यह रीसेट का समय है, आप भारत का उदय देख रहे हैं, जो इस सदी में कभी न कभी दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा. कैमरन ने कहा कि हमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की जरूरत है. मैंने यह तर्क 2005 में ही दे दिया था, जब मैं कंजर्वेटिव पार्टी का नेता बना था और भारत यूरोप के बाहर पहला देश था, जिसका मैंने दौरा किया था. इसी तरह जब मैं प्रधानमंत्री बना, तो 2010 में यूरोप के बाहर पहला देश, भारत था जहां मैं गया...जाहिर है, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट ऐसी चीज है, जो इस बदली हुई दुनिया में भारत का अधिकार है. पिछले महीने संयुक्त राष्ट्र महासभा की उच्च स्तरीय बैठक में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने भी कुछ ऐसी ही बात कही थी.

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा 304-305 समृद्धि स्क्वायर, किशोरगंज चौक, हरमू रोड, रांची- 834001, झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **संजय सिंह***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)